॥ श्रीनाथजी ॥

सरित्तटं भ्रमदटन्तं नटन्तं गोपु चोद्भटम् ॥
घनच्छटं पीतपटं नटं सन्मुकुटं नुमः ॥ १ ॥

श्रीनाथद्वारके टीकेत महाराजनकी

वंशावली.

१ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी (श्रीवल्लभाचार्यजी)

२ श्रीगुसांईजी (श्रीविठ्ठलनाथजी)

३ श्रीगिरिधरजी.

४ श्रीदामोदरजी.

५ श्रीविठरायजी.

६ श्रीगिरिधारीजी.

७ श्रीवडेदाऊजी.

८ श्रीविठ्ठलेशजी.

९ श्रीगोवर्धनेशजी.

१० श्रीवडेगिरिधारीजी.

११ श्रीदाऊजी.

१२ श्रीगोविंदजी.

१३ श्रीगिरिधारीजी.

१४ श्रीगोवर्धनलालजी.

१५ चि० श्रीदामोदरलालजी.

अनुक्रमणिका.

नंबर.	नाम विषय.	पृष्ठ.

॥ श्रीगोवर्द्धनधरो जयति ॥

॥ श्रीगोवर्धननाथस्योद्भववार्ता ॥

अर्थात्

॥ श्रीनाथजीकी प्राकट्यवार्ता ॥

अब श्रीगोवर्धननाथजी के प्रागट्यको प्रकार तथा प्रगट होयकें जो जो चरित्र भूमिलोकमें कीने सो श्रीगोकुलनाथजीके वचनामृतादिक समूहनमें तें उद्धार कारिकें न्यारे लिखत हैं ॥

अब नित्य लीलामें श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगिरिराज पर्वतकी कन्दरामें अनेक भक्तन सहित अखंड विराजमान हैं। तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु सदा सर्वदा सेवा करत हैं। जब दैवीजीवनके उद्धारार्थ भगवद् आज्ञा तें धरणिमण्डलमें प्रादुर्भूत भये, तब आपके सर्वस्व श्रीगोवर्धननाथजी हू को अखिल लीला सामग्री सहित व्रजमें प्रादु-

भाव भयो । तामें प्रमाण तथा दर्शनको माहात्म्य गर्गसंहिताके गिरिराज खण्डमें—

॥ श्लोकाः ॥

येन रूपेण कृष्णेन, धृतो गोवर्धनो गिरिः ॥
तद्रूपं विद्यते तत्र राजन् शृङ्गारमण्डले ॥ १ ॥
अब्दाश्चतुः सहस्राणि तथा पञ्च शतानि च ॥
गतास्तत्र कलेरादौ क्षेत्रे शृङ्गारमण्डले ॥ २ ॥
गिरिराजगुहामध्यात्सर्वेषां पश्यतां नृप ।
स्वतः सिद्धं च तद्रूपं हरेः प्रादुर्भविष्यति ॥ ३ ॥
श्रीनाथं देवदमनं तं वदिष्यन्ति सज्जनाः ॥
गिरिराजगिरौ राजन् सदा लीलां करोति यः॥ ४ ॥
ये करिष्यन्ति नेत्राभ्यां तस्य रूपस्य दर्शनम् ॥
ते कृतार्था भविष्यन्ति श्रीशैलेन्द्रे कलौ जनाः ॥ ५ ॥
जगन्नाथो रङ्गनाथो द्वारकानाथ एव च ॥
बद्रीनाथश्चतुष्कोणे भारतस्यापि वर्तते ॥ ६ ॥
मध्ये गोवर्धनस्यापि नाथोयं वर्तते नृप ॥
पवित्रे भारते वर्षे पञ्च नाथाः सुरेश्वराः ॥ ७ ॥
सद्धर्ममण्डपस्तम्भा आर्तत्राणपरायणाः ॥
तेषां तु दर्शनं कृत्वा नरो नारायणो भवेत् ॥ ८ ॥
चतुर्णां भुवि नाथानां कृत्वा यात्रां नरः सुधीः ॥
न पश्येद्देवदमनं न स यात्रा फलं लभेत् ॥ ९ ॥
श्रीनाथं देवदमनं पश्येद्गोवर्धने गिरौ ॥
चतुर्णां भुवि नाथानां यात्रायाश्च फलं लभेत् ॥ १० ॥ इत्युक्तम्॥

॥ ऊर्ध्वभुजाको प्राकट्य ॥

संवत् १४६६ श्रावण वदी तृतीया आदित्यवार सूर्य उदयके कालमें श्रवण नक्षत्रमें श्रीगोवर्धननाथजीकी ऊर्ध्व भुजाको प्रागट्य भयो ता समय भूमिमंडलमें बडो मंगल भयो ॥

एक आन्योरके व्रजवासीको गौ गमन भयो ताको अन्वेषण करिवे वो श्रीगोवर्धन पर्वत पें गयो। तहां मिती श्रावण सुदी नागपंचमी संवत् १४६६ के दिन वाकों श्रीगोवर्धननाथजीकी ऊर्ध्व-भुजा को दर्शन भयो। षोडश दिन पर्यंत काहूकूं दर्शन न भयो तब वानें विचार कियो जो यह कौतुक अबतांई श्रीगिरिराजमें कबहू देख्यो नाहीं हतो। ऐसें कहिकें दस पांच व्रजवासिनकूं बुलाय लायो, उन सबननें ऊर्ध्व भुजाको दर्शन कियो सो दर्शन करिकें बडे आश्चर्यकों प्राप्त भये। तब सबननें मिलि अनुमान कियो जो कोऊ देवता श्रीगिरिराजमें प्रगट भयो है। तहां एक वृद्ध व्रजवासी हतो तानें यह कह्यो जब सात दिन तांई श्रीकृष्णने श्रीगिरिराज उठायो और जब मेहकी वृष्टि होय चुकी तब भूमिमें स्थापन कियो ता समय सब व्रजवासिनने मिलिकें भुजाको पूजन कियो सोई भुजा यह है। आप कंदरानमें ठाडे हैं ऊर्ध्वभुजाको दर्शन आपनकों दीनो है; ताते निकासवेको विचार तुम मति करो अपनी ही इच्छा तें कोई समय पायकें आप ही प्रगट होंयगे तहां तांई सब या ऊर्ध्वभुजाको दर्शन करो ॥

ऐसें कहिकें उन व्रजवासीनने दुग्ध मगायकें ऊर्ध्वभुजाको स्नान करवाये अक्षत पुष्प, चंदन ओर तुलसी सूं भुजाको पूजन

करत भये ओर दधि फल समायकें भुजाको भोग धरत भये। नागपंचमीके दिनां भुजाको दर्शन भयो तातें नागपंचमीके दिनां प्रति वर्ष दस बीस सहस्र व्रजवासीनको मेला जुरतो ओर काहूकूं व्रजमें काहू वस्तुकी कामना होती तो भुजाकों दुग्धको स्नान मानते तो वाकी कामना सिद्ध होती तातें संपूर्ण व्रजमें श्रीनाथ-जीकी भुजाकी महिमा बहोत प्रगट भई काहूकी गाय जाती रहै काहूके पुत्र न होय, काहूकूं शरीरकी आर्ति होय, काहूकूंदूध दहीकी वृद्धि न होय, तो भुजाकी मानता करें तो वाको सर्व कार्य सिद्ध होय ऐसे चारित्र प्रत्येक लिखें तो विस्तार बहोत होय। या प्रकारसों संवत् १५३५ पर्यन्त व्रजमें भुजा पुजी॥

॥ श्रीमुखारविन्द प्राकट्य ॥

पीछें फिरकें संवत १५३५ वैशाख वदी ११ बृहस्पतिवारके दिन शतभिषा नक्षत्र मध्यान्ह काल अभिजित् नक्षत्रमें श्रीगोवर्ध-ननाथजीको मुखारविन्द प्रगट भयो। ताही लग्न ताही दिन श्रीमदाचार्यजीको प्रादुर्भाव अग्निकुंडतें भयो ओर श्रीकृष्णावतारके व्रजवासी सब व्रजमंडलमें जहां तहां मनुष्यकुलनमें प्रगट भये तिन सूं अब क्रीडा करेंगे॥

॥ दुग्धपान चरित्र ॥

ओर आन्योरमें माणिकचंद और सद्दू पांडे दो व्रजवासी हते तिनकें एक सहस्र गाय सदां रहतीं, तामें एक गाय श्रीनन्द-रायजीकी गायनके कुलकी हती ताको नाम धूमर सो सब दिवस

गायनमें रहै घडी चार दिन पिछिलो रहैं ता बिरियां सब गायनके समूहमेंतें न्यारी छांटिकें और श्रीगिरिराजके ऊपर चढिकें श्रीनाथ-जीके श्रीमुखारविन्दके ऊपर स्तन करिकें दुग्ध स्रवे सो दुग्ध आप अरोगें और प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त होय ता समय फेर दूध स्रवत श्रीमुखारविन्दमें करि आवे । या प्रकार छः महिना पर्यंत ऐसेंहीं दुग्ध आप अरोगें परंतु काहू व्रजवासीकों ज्ञान न भयो सो एक दिन माणिकचंद और सद्दू पांडे गायको दूध स्वल्प देखिकें गायके पीछें पीछें चले गये और यह सब अलौकिक प्रकार देख दण्ड-वत् करी ॥

॥ सद्दू पांडेकें प्रति साक्षात् आज्ञा ॥

सद्दू पांडेकों साक्षात श्रीजीके दर्शन भये और श्रीगोवर्धन-नाथजी सक्षात आज्ञा किए " जो में यहां श्रीगोवर्द्धन पर्वतमें रहूं हूं, देवदमन मेरो नामहै; लीलांतर करकें इन्द्रदमन, देवदमन, और नागदमन, ये तीनो मेरेही नाम हैं; सात दिन तांई इन्द्रकी वृष्टिको स्तंभन कीनो, ता पाछें सापराध इन्द्र गतगर्व होयकें पांयन पड्यो तब अभयदान दीनो और इन्द्रके गर्वकूं दूरकियो तातें मेरो नाम इन्द्रदमन है । और कालीनागको दमन कीनो यातें नागदमन मेरो नाम है । और नाग मत्त हस्तीको नाम है तातें कुवलयापीडको दमन कीनो तथा भक्तनके मन मातंगको दमन करिकें मुष्टि गत करकें श्रीहस्तकूं कटिपें स्थापन कीनो है तातें मेरो नाम नागदमन है । अतएव आपके चरणारविन्दके विषें अंकुशको चिह्न है अंकुश बिना हस्तीको दमन न होय । देवदमन मेरो नाम हैं सो याकारणतें

जो अखिल देवनको दमन कीनो श्रीकृष्णावतारमें अष्टलोकपालनकूं शिक्षा कीनी इन्द्र, कुबेर, चन्द्रमा, वायु, वरुण, मृत्यु, यम, अग्नि, ब्रह्मा, शिव, और काम, ये देवता मुख्य हैं तातें इन देवनको दमन कीनो तातें मेरो नाम देवदमन है इन्द्रको शिक्षा कीनी सो तो श्रीगोवर्धनधारण करिकें। और पारिजातापहरण करिकें। और शंखचूड वध करिकें निधि कुबेरकों सोंपी और शिक्षा कीनी जो तू निधिकी रक्षा सावधानी सूं कर्‍यो कर। और शिवको दमन उखा प्रसङ्गमें कीनो। और ब्रह्माको दमन तो बछहरण लीलामें अनेक रूप धारिकें कीनो। और वरुणको दमन करिकें श्रीनन्दरायजीको मोचन कीनो और मृत्युकुं दमन करिकें छः पुत्र श्रीदेवकीजीकों दिये और यमको दमन करिकें गुरुपुत्रकों लाये। और वायुको दमन तो इन्द्रके संग भयो श्रीगोवर्द्धन धारण कीनो वा समयमें अनेक प्रकार करिकें वायु वृष्टि भई परन्तु सबनको स्तंभन करिके सब वृजकी रक्षा कीनी। और चन्द्रमाको दमन तो मन रूपी चन्द्रमा प्रगट करिकें कीनो। और कामदेवको दमन तो रासोत्सव क्रीडा करिकें कीनो ऐसे सब देवतानको दमन कीनो ताते मेरो नाम देवदमन है" याप्रकार सूं सद्दू पांडे सों श्रीनाथजी साक्षात् आप आज्ञा किये जो तेरी गायको दूध में नित्य पीवत हों सो आज तें मोकों याही गायको दूध दुहिकें दोऊ विरियां प्याय जायोकरि। तब सद्दू पांडेनें साष्टांग दंडवत करिकें कही "अवश्य" ॥

॥ सद्दू पांडेको घर आय वृत्तांत कहिबो ॥

ऐसें कहिकें सद्दू पांडे नीचे आन्योरमें आये स्त्री भवानी

और बेटी नरोके आगें सब वृत्तांत सविस्तर कह्यो ओर उनकूं कह्यो "तुम दोऊ दिरिशां श्रीगोवर्द्धननाथजीकूं दूध प्याय आयो करो"। तादिन तें नित्य नरो और भवानी दूध लैकें श्रीगिरिराज ऊपर जायकें श्रीनाथजीकों दूध अरोगाय आवें

॥ सद्दू पांडेके खिरकमें एक गाय आवेकी आज्ञा ॥

सो ऐसें करित कोईक काल पीछें वह गाय सूकि गई तब और गायको दूध लैकें सद्दू पाडे आरोगावन गये तब श्रीनाथजी आज्ञा किये "जो मैंतो श्रीनन्दरायजीकी गायनके कुलकी गाय हो तो ता कोदूध आरोगों सो गाय तो एक दूसरी हूहै या व्रजमें सो कालि तेरे खिरिकमें आवेगी। जहां तांई पहिली गाय ब्यावे तहां तांई या गायको दूध दुहिकें हमकूं प्याय जेयो नित्य प्रति ॥"

॥ सद्दू पांडेके खिरिकमें गाय करवेकी धर्म्मदासको साक्षात् आज्ञा ॥

और जमनावतौ गाममें एक धर्मदास व्रजवासी हतो सो बडो भगवत भक्त हतो सो कुंभनदासको काका लगतहतो और चतुरानागाको शिष्य हतो वाकें दोयसें चारसें गाय हती तामें एक गाय श्रीनन्दरायजीके कुलकी हती सो गायनके लेंहेंडेमेंसूं न्यारी होयकें श्रीनाथजीके श्रीमुखारविन्दमें दूध स्रविकें वहांही बैठि रही और घर न गई तब धर्मदासग्वालकूं चिन्ता भई आप कुंभ नदासकूं संगलेय ढूंढिवेकूं निकसे, ता समय कुंभनदास वर्षदशके हते। श्रीगिरिराजके ऊपर ढूंढ़िते ढूंढ़िते श्रीनाथजीके पास गाय बैठी हती तहां देखी घर लैजायवेके लिये अनेक उपायकीने परंतु

वह न चली तब श्रीनाथजी साक्षात आज्ञा किए " अरे धर्म-दास यह तूं गाय सद्दूपांडेके खिरकमें करदे याको दूध में आरोगूंगो यह महतकुलकी गाय है" और कुंभनदासजीसों श्रीनाथजी साक्षात आज्ञा किये " अरे कुंभनदास तू नित्य मेरेपास खेलिवेकों आयो करि "। एसो महा मधुर वाक्य सुनिकें उन धर्मदास और कुंभनदासजीकूं मूर्छा आई। एकमुहूर्त पर्य्यंत। पीछे जागे तब परिक्रमा दीनी ओर साष्टांग दंडवत् करिकें श्रीनाथजीकी आज्ञानुसार वह गाय सद्दू पांडेके खिरकमें करदीनी और अपने घर गये और ता दिनसों कुंभनदासजी श्रीनाथजीके पास नित्य खेलवेकूं आवते ॥

॥ गौडिया माधवानन्द प्रति साक्षात् आज्ञा ॥

ऐसें करत एक गौडिया माधवानन्द श्रीगिरिराजकी परिक्रमाकूं आयो सो सद्दू पांडेके यहां एक चोंतरा हतो तापै रह्यो सो उन व्रजवासीनके संगसूं वाकूं श्रीनाथजीके दर्शन भये सो दर्शन करिकें वो बहुत प्रसन्न भयो वैष्णव भावनीक हतो चित्तमें यह बिचार कियो शुष्क भिक्षा मांग करिकें अपनें हाथ पीसिकें रसोई सिद्ध करि श्रीनाथजीकों भोग धरिकें लैनी। पाछे वह सेवा करन लाग्यो। बनमेंसूं गुंजा बीन लावे ताके हार बनायकें श्रीनाथजीकूं पहिरावे चंद्रिका बनमेंसूं लायकें श्रीनाथजीकूं धरावे सो जब वाने रसोई करिके भोग धर्‍यो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये में तो जब श्रीआचार्यजी आप पधारि अपने स्वहस्त सों रसोई सिद्ध करिकें मोकों अन्नप्राशन करावेंगे तब भोजन करूंगो तहां तांई दूधहीको पानकरि रहूंगो और तेरो जो भोग धरिवेको तथा

शृङ्गार करिवेको मनोरथ है तो तू पृथ्वी परिक्रमा कर आव, तहां तांई श्रीआचार्यजी आप पधारेंगे और हमकूं पाट बैठावेंगे तब तोकों सेवामें राखेंगे तहां तांई हम यहां बृजवासनिमें खेलेंगे यह सुनिकें माधवेन्द्रपुरी समयकी प्रतीक्षा करिकें पृथ्वी प्रदक्षिणा किये। ऐसें संवत् १५४९ तांई श्रीनाथजी बृजवासीनको दूध दही आरोगे कबहू कुंभनदासजीकों संग लैकें माखन चोरीकूं बृजवासनिके घर पधारे॥

॥ एक पूंछरीके व्रजवासीकी मानता ॥

एक पूंछरीमें बृजवासी हतो तानें देवदमनकी मानता करी जो मेरे बेटाको विवाह होयगो तो में या देवदमनकों सवामन दूध सवामन दही अरोगाऊंगो सो वाके बेटाको विवाह तत्काल भयो तब वाने सवामन दूध सवामन दही समर्पन कीनो। सो यह बात सुनिकें बृजमें देवदमनकी मानता बहुत बढी॥

॥ एक भवनपुराके व्रजवासीकी मानता ॥

एक दिनां एक भवनपुराको बृजवासी हतो वाकी गाय घनेमें खोय गई तहां एक सिंह रहत हतो ताकी चिन्तासूं वाने श्रीदेवदमनकी मानता करी जो मेरी गाय सिंह नाहीं मारेगो तो या गायको दूध में श्रीदेवदमनकूं आरोगाउंगो जहां तांई यह दूध देयगी ताहां तांई। ता पाछें रात्रिकूं वा गायकूं सिंह मिल्यो परन्तु पराभव न करि सक्यो। श्रीजीने भुजा पसारी कॉन पकरिकें गाय खिरकमें कर दीनी। सो सबेरे वह बृजवासी गाय देखकें बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो यह गाय श्रीदेवदमननें बचाई है पाछें दूध दही पहोंचायवे लग्यो और कुंभनदासजीसों श्रीनाथजी आज्ञा कीने कुंभन। मेरी बांह दूखत है सो दाबदे गायको कान पकरिकें

खिरिकमें कर दीनी है ताते अब श्रीगिरिराजके आसपास सब बृजवासी तथा गाय सब श्रीकृष्णावतारकी प्रगट भई हैं तिनसों आप क्रीड़ा करनलगे। काहूको दूध आरोगें काहूको दही अरोगें और काहूके घरकी चोरी करि करि दूध दही अरोगि आवें॥

॥ श्रीनाथजीके रक्षार्थ चार व्यूहनको प्रागट्य.॥

और श्रीनाथजीकी रक्षा करनकों चार व्यूहनकोप्रागट्य श्रीगिरिराजमें आपके संगही भयोहै। जो संकर्षण कुंडमेंतें श्रीसंकर्षण देवको प्रागट्य भयो, गोविन्द कुंडमेंतें श्रीगोविन्ददेवजीको प्रागट्य भयो और दानघाटीऊपर श्रीदानीरायजीको प्रागट्य भयो। और श्रीकुंडमेंतें श्रीहरिदेवजीको प्रागट्य भयो ये चारों देव संकर्षण वासुदेव प्रद्युम्न और अनिरुद्धात्मक हैं और सदां श्रीनाथजीके संग रक्षार्थ रहत हैं॥ इनकी सेवा मतांतरमें के वैष्णव करत हैं, मध्यमें श्रीपुरुषोत्तम रूप आप विराजत हैं ताहीतें आपकी सेवा करवेके लिये श्रीपुरुषोत्तमरूप श्रीआचार्यजी प्रगट भये। श्रीपुरुषोत्तमके स्वरूपकों श्रीपुरुषोत्तम होय सोही जानें याही तें श्रीमद्भगवतगीताके दशमाध्यायमें अर्जुनको वाक्य है

"न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः॥
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम"॥

श्रीअचार्यजीको श्रीनाथजी झारखंडमे श्रीगिरिराज पधार सेवा प्रगट करवेकी आज्ञा कींने॥

जब वौम संवत् १५४९ फाल्गुन सुदी ११ बृहस्पतिवारके दिना श्रीआ-में तो जब श्रीनाथजी झारखंडमें आज्ञा किये "हम श्रीगोवर्द्धनधर सिद्ध करिकें मोकोंजकी कन्दरामें बिराजें हैं सो तुमको विदित हैं व-ताँई दूधहीको पानके पुनः दूसरो चिन्ह हे तहांताई ग्रन्थ कोई १ पुस्तकमें नहीं हे.

हांके व्रजके व्रजवासीनकों हमारें दर्शन भये हैं सो हमकों प्रगट करवेंको विचार करेंहैं परंतु हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंहैं सो आप बेग मेरी सेवाको यहां पधारो और श्रीकृष्णावतारके समयके जीव यहां व्रजमें आये हैं तिनकों शरण लेकें सेवक करो तब हम तिनके संग क्रीडा करेंगे " श्रीहरिदासवर्यके ऊपर मेरो मिलाप होयगो.

श्रीआचार्यजीको व्रज पधारनो तथा श्रीविश्रान्तघाटपैकी यन्त्रबाधा दूर करनी

तब श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा तत्क्षण झारखंडमें राखिकें और आप व्रजमें पधारे सो प्रथम श्रीमथुराजी आये सो उजागर चौबेके घर बिराजे +"श्रीयमुना स्नानके लिये विश्रान्तघाट चलवे लगे तब उजागर चौबे तथा दूसरे लोकननें कह्यो श्रीमहाराज विश्रान्तघाट पर तो पांच दिन तें बडो उपद्रव है सो सुनके आपने पूछ्यो कहा उपद्रव है तब सबने वृत्तान्त पूर्वक कह्यो प्रथम दिल्लीतें बादशाहको कामदार रुस्तमअली आयो हतो ताको उपहास यहांके चौबे लोकनने कियो सो रुष्ट होयकें दिल्लीतें एक यन्त्र सिद्ध करकें पठायो है सो विश्रान्तघाटको नाका रोकके तहां यन्त्र टांगके यवन बैठे है जो हिंदू ताक नीचे तें आवे जाय है ताकी शिखा कटके डाढी होय जाय है ताके भयते स्नान सबको दोय दिनते बंद है सो सुनकें आप बोले तीर्थपर आयकें तीर्थतें विमुख होयकें यहां ते जानो उचित नहीं तातें हम तो स्नानकेलिये चले हैं यन्त्रबाधा हमको नहीं होयगी औरभी जिनकों स्नान करनो होय सो हमारे संग चलें सो आप जनसमुदाय सहित आयकें सुखपूर्वक स्नान कियो और श्रीयमुनाजीको पूजन यथाबिधि करके तहां ते पधारें यन्त्र बाधा कोईकों

+" या चिन्हसूं लेके यन्त्रबंधनकी समस्त यह वार्ता कोई २ पुस्तकमें नहीं है ये वार्ता समाप्त भएपे १३ पृष्ठमें फिर ऐसोही चिन्ह करो है.

नहीं भई आपके गये पीछे फिर पूर्ववत बाधा होन लगी एतादश प्रभाव देखके उजागर चौबे आदि सबनें बिनती करी "याको उपाय आप कोई करें जामें यन्त्र यहांते उठे प्रजा सब दुखी हैं। यह बचन सबके सुनके आपकों करुणा आई सो एक कागद लिख यन्त्रको मिस करके आपने सेवक वसुदेवदास और कृष्णदासकों दिल्ली पठाये और कह्यो तुम दोउजने दिल्लीके सदर द्वारपर राजमार्गमें यह कागद टांगके तहां बैठ रहो तुमारी खबर पृथ्वीपति बादशाहके पास जब होयगी तब याको न्याय होयगो। सो दोऊ जने जायके तैसैही कियो सो जाके नीचे ते यवन जो आवें जांय तिनकी डाढी भरके गिर पड़े और चोटी होय जाय। सो यह खबर लोधी सिकन्दर बादशाहके पास पहुंची जो दो हिन्दू फकीरनने आयकें यह उपद्रव कियो है सो सुनके बादशाहने दोऊनको बुलायकें पूछयो तब दोऊनने अरज करी हजुर पृथ्वीपती हाकम हैं हिन्दु मुसलमान दोंनो आपकी प्रजा हैं सो या प्रकारको उपद्रव प्रथम हजूरके कामदार रुस्तमअलीने मथुरामें सात दिन ते कियो है तातें प्रजा दुखी देखके हमारे श्रीगुरुचरणने हम दोनोंकों यहां पठाये है जामें हजूर तक खबर पहुचे सो सुनकें लोधी सिकंदर बादशाहने तत्क्षण रुस्तमअलीकों बुलायकें सब वृत्तांत पूछकें कह्यो पहिले कसूर तेरा है तेने क्या जाना हिन्दमें ऐसा करामातीफकीर नहीं होगा सो अब आंखोंसे देख और अपना यन्त्र जलदी मगायले कभी किसीके मझबपर निगाह मत करना या प्रकार रुस्तमअलीको कहिके फिर दोनो सेवकनकों कह्यो जब मथुरातें यन्त्र आय जाय तब तुमभी अपना यन्त्र उठायके जलदी चले जाना और अपने गुरुकों हमारी बंदगी कहनां

या प्रकार विश्रांत घाट पर ते यवनके यन्त्रकों उठायके फिर तहां ते आप गिरिराजकों पधारे,

श्रीआचार्यजी महाप्रभुको श्रीगिरिराज पधारनो और श्रीनाथजी वहां प्रगट भये हैं सो खोजनो.

श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमथुरातें सब सेवकनको संग लैकें श्रीगोवर्धनकी तरहटीमें आन्योरमें सद्दू पांडेके घरके आगे चोंतरा ऊपर पधारकें विराजे । + तब अनेक व्रजवासी लोग दर्शन करकें जाने जो ये बडे महापुरुष हैं सो ऐसो तेजःपुञ्ज मनुष्यनमें नहीं होय है । पाछे सद्दू पांडेने आयके बिनती कीनी जो स्वामी कछु भोजन करेंगे तब कृष्णदास मेघनने कही जो आप तो सेवक बिना काहूको कछू लेत नाहीं । जब कृष्णदास मेघनने सद्दू पांडे सो नाहीं करी ताही समय श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगोवर्धन पर्वत ऊपर तें श्रीआचार्यजीकूं सुनायवेंके लिये टेर कीनी अरी नरो दूध लाव ✣ तब नरो बोली जो आज तो हमारे पाहुने आये हैं तब श्रीनाथजीने कही जो पाहुने तो आये तो भली भई परंतु मोकों तो दूध लाव तब नरोने कही जो अबारही लाल ! लाई । तब एक बेला भरिके वह लेगई । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे जो दमला कछू सुन्यो तब दामोदरदासने कही जो महाराज सुन्यो तो सही पर समझ्यो नहीं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे जा बोलसूं झारखंडमें आज्ञा करी हती सोही यह बोलेहे

+ इहां ओर पुस्तकनमें कछूपाठभेदहे पर प्रसंग एकहीहे.

✣ इहां सूं आगे नरोकी कितनीक वार्ता अन्य पुस्तकनमें गईहे पर ये वार्ता परम प्रामाणिक होयवेसूं इहां राखीहै.

श्रीनाथजी यहां ही प्रगट भये हैं । सवारे ऊपर चलेंगें सो इतनेमें नरो श्रीनाथजीकों दूध प्यायके पीछी आई, ताकूं देखकें श्रीआ चार्यजी महाप्रभुने कही जो यामें कछू बच्यो है तब नरोने कही रंचक है तब श्रीआचार्यजीने कही जो हमकों दै तब नरोने कही जो महाराज घरमें बहुत है जितनो चहिये तितनो लीजिये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कही जो औरतो हमकूं नाहीं चहिये। तब सद्दू पांडेने सेवक करवे की बिनती कीनी और श्रीआचा र्यजी महाप्रभुने नाम सुनायो और सेवक कीने तब इनको सब अंगीकारकीनो । पाछे रात्रको सब सेवक वृजवासी सद्दू पांडे और माणिकचंद पांडे आदि श्रीआचार्यजी महाप्रभुको दंडवत करिकें सन्मुख बैठे तासमय श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने पूछी जो यहां पर्वत में श्रीदेवमन कोन प्रकार करिकें प्रगट भये हैं सो वार्ता कहो तब सद्दू पांडेने कही महाराज आप सब जानत ही हो और हम सूं पूछत हो तब आपने आज्ञा कीनी कहो तब सद्दु पांडेने श्रीना थजीके प्रागट्यके प्रकारकी वार्ता कही सो सुनिकें श्रीआचार्यजीको हृदय भरि आयो ॥

॥ श्रीआचार्यजीको श्रीगिरिराजपै पधारनो और श्रीनाथजीसूं मिलवो और प्रगट करवो ॥

दूसरे दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु सब सेवकन सहित अति हर्षसूं श्रीगिरिराज पै पधारे सो थोडी सी दूर श्रीनाथजीहू अति हरखिकें साम्ही पधारकें मिले ऐसें परस्पर मिलकें बडे प्रसन्न भये ताही तें गोपालदासजी गायेहैं.

" हरखते साह्मा आविया श्रीगोवर्द्धन उद्धरण " इत्यादि ।

॥ श्रीनाथजीकी आज्ञानुसार श्रीआचार्यजी पाट बेठायके तथा सेवाको प्रकार बांधके पृथ्वी परिक्रमाकूं पधारे ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों श्रीनाथजी आज्ञा किये जो मोकों पाट बैठाओ और मेरी सेवाको प्रकार प्रगट करो सेवा विना पुष्टि मारगमें अंगीकार न होय तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने एक छोटो सो मंदिर सिद्धि करवायो सो ता मंदिरमें श्रीनाथजीको पाट बेठाये। और अप्सरा कुंडके पास एक गुफा हती सो तहां रामदासजी भगवदीय रहते सो श्रीआचार्यजीकूं पधारे जानिकें सेवक भये सो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु रामदासजीको आज्ञा किये जो तुम श्रीनाथजीकी सेवा करो तब रामदासजीने कही जो महाराज में तो कछु समझत नांही सो सेवा कैसे करूं मेनें तो कबहू सेवा करी नांही तब श्रीनाथजीकी इच्छा जानकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने रामदासजीसों कही जो तुमकों श्रीनाथजी सिखावेंगे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने मोरकी चंद्रिकानको मुकुट सिद्धि करवायो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने श्रीनाथजीकी सेवा और शृंगार करिकें रामदासजीकों बताये और कह्यो जो तुम नित्य सवारे गोविन्द कुंडके ऊपर जायकें स्नान करिकें जलको पात्र भरि लायो करो और श्रीनाथजीकों स्नान कराय अंगवस्त्र करिकें जैसें हमने शृंगार कर्यो है सो ता प्रमाण करियो और गुंजा चन्द्रिकाको धारण नित्य करें और जो कछु भगवद् इच्छातें आय प्राप्ति होय सो सिद्ध करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पियो और तासों तु

१ यह श्रीआचार्यजी तथा रामदासजीको संवाद कितने पुस्तकमें संक्षेपसूं है.

तेरो निर्वाह करियो और दूध दही मांखन आदि तो ये बृजवासी भोग धरत हैं। पीछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सद्दू पांडे आदि बृजवासीन सों आज्ञा किये जो यह श्रीगोवर्द्धननाथजी मेरो सर्वस्व हें सो इनकी सेवामें तुम तत्पर रहियो और उपद्रव होय तो सावधान रहियो औरजा भांति श्रीनाथजी प्रसन्न रहैं सो करियो । या प्रकार कहिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु पृथ्वी परिक्रमा करिवेकूं पधारे और जा दिन श्रीनाथजीकों श्रीआचार्यजीने स्वहस्तसों पाक सिद्ध करकें समर्पे ता दिन श्रीनाथजी अन्नप्राशन कीने तहां ताईं दूध दही ही आरोगे। अब तो ता दिनसूं बृजवासीनके पास सूं छाक छिड़ाय अरोगन लागे ॥

॥ गांठ्योलीकी पाथो गूजरी ॥

एक पाथो नामक गूजरी गांठ्योली की अपने पुत्रके लिये छाक ले जात हती तामेंसूं बलात्कारसूं दोय रोटी श्रीनाथजी छिंडायकें आरोगे ॥

॥ गोवर्द्धनकी × खेमो गूजरी ॥

ऐसें ही एक खेमो गूजरी गोवर्द्धनकी दही वेचवेकों जात हती सो दान घाटीके ऊपर श्रीदेवदमन मिले दहीको दान मांग्यो सो वाने दीनो और आज्ञा किये दहीतो हम लूट खांयगे नहीं तो दोय रोटी और दहीं भातकी नित्य एक छाक पहोंचाय जायवो करि। जब वह दही बेचवेकूं जाय तब नित्य एक छाक पहली संग धरि लेजाय सो आप आरोगें और जादिना नहीं धरि लेजाय तादिना वाको दही लूट खाय ॥

× कितनेक पुस्तकमें खेमोगूजरीको नाम नहीहे और याकी सब वार्ता पाथो गूजरीके संगही है।

॥ अडींगको व्रजवासी गोपाल ग्वाल ॥

और एक अडींगको व्रजवासी गोपाल ग्वाल हतो वाको अडीं-गके घनेमें श्रीदेवदमनको दर्शन भयो वाकों आज्ञा किये जो तूं मोकों दूध और रोटी ल्यायदे तब वानें गाय बनमेंही दुहिकें दूध आरो-गायो और वह वेझरीकी रोटी अपने खायवेके लिये लायो हतो सोऊ दीनी सोऊ आप आरोगे और गोपाल ग्वालकों आज्ञा दीनी जो तू मेरे दर्शनकूं नित्य आयो कर वाकूं स्वरूपासक्ति भई जो शृंगा-रके दर्शनकूं नित्य आवे ता बिरियां शस्त्र खोलिवेको अनुसन्धान न रहै तासूं आदमीसों कहि राख्यो जो तू मेरे शस्त्र वा बिरियां खोल लियो करि और जब दंडवत् करे तब गदगद कंठ होयके प्रेमके आंसूनकी धारा चले तासूं झगा सब भींज जाय और दोय आदमी पकरिके वाकूं नीचे लावें तब श्रीगिरिराजपै तें उतरें॥

॥ आगरेके ब्राह्मणको छोरा ॥

और आगरेमें जाय एक ब्राह्मणको छोरा हतो, ताकों श्रीदेवदमन स्वप्नमें दर्शन दीने और आज्ञा किए में व्रजको ठाकुर हूं तू श्रीगिरिराज आयके मेरे दर्शनकर ॥ तब सवारेही वा ब्राह्म-णके लडिकाने अर बहोत कीनी जो मोकों व्रजके श्रीठाकुरजीके दर्शन करवाओ । तब वाके पिताने सब व्रजके ठाकुर हते तिनके दर्शन करवाये परंतु वा लडिकाके चित्तकूं स्वस्थता न भई तब श्रीनाथजीके दर्शन करवाये तब लडिकाने कही याहीश्रीठाकुर जीने मोंकों दर्शन दीने हते । सो श्रीनाथजी वाकी बांह पकडकें सदेहसों अपनी गोपमंडलीमें स्थापन कीने । और वाको पिताहू दर्शन करिके जो बहोतही प्रसन्न भयो वह माध्वसंप्रदायको

वैष्णव हतो तातें वाको ज्ञान भयो जो जहांकी वस्तु हती तहां गई चित्तकों समाधान करिके अपने घर गयो कछु आग्रह वाने कीनो नहीं। ता पाछे वह ब्राह्मण बड़ो वैष्णव भयो वाकी छप्पय भक्तिमालमे हैं प्रेमनिधि मिश्र वाको नाम हतो। ऐसे ऐसे श्रीठाकुरजीने व्रजबासीनसों अनेक चरित्र और कौतुक करे॥

॥ सखीतराको मांड़ालिया पांडे॥

एक सखीतरामें मांडलिया पांडे हतो वाके बेटाकी बहू जा दिना घरमें आई ताही दिना वाकी भैंस खोयगई॥ तब वाने कह्यो जो या बेटाकी बहूके पांय खोटे जो आवतही भैंस खोयगई आगे न जाने कहा करेगी। सो यह बात वा बहूकूं बहोत ही अनखनी लागी, तब वा बहूने देवदमनकी मानता करी है देवदमन हमारी भैंस पावेगी तो तोकों दस सेर मांखन आरोगाऊंगी मानता करतेही वाकी भैंस पाई तब वाके घरके सब प्रसन्न भये और वा बहूकों बिलोमनको काम सोंप्यो। पांच सात सेर मांखन नित्यप्रति होतो तामेंसूं वो बहू आध सेर मांखन नित्यप्रति चोराय राखति। ऐसें जब दस सेर मांखन भयो तब वह तो बिलोवनामें मेल्यो और सद बिलोमनामेंको दस सेर मांखन लैके श्रीदेवदमन सो बिनति कीनी जो तुम आपनो मांखन लैजाओ सासके और घरकेनके आगे मेरो आवनो न होयगो। वाकी आरती जानिके श्रीदेवदमन आप पधारे वाके घरसूं मांखनकी कमोरी लेयके फेरि श्रीगिरिराज पधारे मांखन आरोगे सब सखा मंडलीकूं खवायें बनचकूं दीने कुंभनदासको मुख चुपड्यो और शेष श्रीगिरिराजपें उड़ाये। वा दिना जन्माष्टमी हती ताते

भावात्मक उत्सव आपने मान्यो और कुंभनदासने यह पद गायो--
राग सोरठ ॥ आंगन दधिको उदधि भयो हो इत्यादि ॥

॥ टोडके घनेको चतुरानागा नामक एक भगवद् भक्त ॥

एक चतुरानागा नामक भगवद्भक्त हतो सो टोडके घनेमें तपश्चर्या करतो श्रीगिरिराजके ऊपर कबहूं पांव देतो नहीं वाकों दर्शन देवेके लिये श्रीनाथजी भैंसा पैं चढिके टोडके घनेमें पधारे रामदासजी और सदू पांडे आदि सब संग हते। तब वा महा पुरुषने दर्शन करिके बडो उत्सव मान्यो बनमेंसूं ककोडा बीन लायो ताको साग कियो और सीरा कियो श्रीनाथजीको भोग समर्प्यो आरोगतमें श्रीनाथजीने आज्ञा करी कुंभनदास कछु कीर्तन गाय तब कुंभनदासने यह कीर्तन गायो—

॥ राग सारंग ॥

भावति तोहि टोडको घनो ॥
कांटा लगे गोखरू टूटे फाट्यो है सब तन्यो ॥ १ ॥
सिंह कहां लोखरीको डर यह कहा बानक बन्यो ॥
कुंभनदास तुम गोवर्द्धनधर वह कोन रांडढेडनीको जन्यो ॥ २ ॥

संवत १५५२ श्रावण सुदी १३ बुधवारके दिना वा चतुरानागाको मनोरथ सिद्ध करिके श्रीनाथजी श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। या प्रकार अनेक रीति सब ब्रजवासीनसों क्रीडा करत भये ॥

पूर्णमल खत्रीकों मंदिर बनवायवेकी स्वप्नमें आज्ञा ॥

और संवत १५५६ चैत्र सुदि २ के दिन श्रीनाथजी पूर्णमल खत्रीकूं स्वप्नमें आज्ञा किये जो तू मेरो एक बडो मंदिर व्रजमें आयके बनवाय ॥

॥ पूर्णमल्ल क्षत्रीको व्रज आवनो ॥

तब पूर्णमल्ल अंबालयते द्रव्यसंग्रह करिकें चल्यो सो व्रजमें श्रीगोवर्धन आयो । तहां आयके वाने पूछी जो यहां श्रीदेवदमन ठाकुर सुने हैं सो कहां विराजत हैं । तब एक व्रजवासीने बताये सो श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करिके बहोत प्रसन्न भयो ता पाछे श्रीआचार्यजीके पास गयो और साष्टांग दंडवत कर विनती कीनी जो महाराज! श्रीगोवर्धननाथजीकी इच्छा एक बडो मंदिर बन वायवेकीसी दीसत है मोकूं स्वप्नमें आज्ञा आप करे हैं तासूं में द्रव्यसंग्रह करकें ले आयो हूं तब आप श्रीमुखसों श्रीआचार्यजी महाप्रभु आज्ञा किए जो हां हां शीघ्र मंदिर बनवाओ और श्रीगिरि-राजसूं पूछे आपके ऊपर मंदिर बनेगो टांकी बाजेगी ताकी कैसी आज्ञा । तब श्रीगिरिराज आज्ञा किये श्रीनाथजी मेरे हृदयमें विरा-जेंगे मोकों टांकी लगिवेको परिश्रम न होयगो आप मंदिर सुखसें सिद्धि करवाओ ॥

॥ हीरामणि उस्ताकूं मंदिर बनायवे आयवेकी स्वप्नमें आज्ञा ॥

तब एक उस्ता हीरामणि आगरेको वासी ताको श्रीजीने स्वप्न-हीमें आज्ञा करी जो तू मेरो मंदिर निर्म्माण करिवे आव । तब वाने श्रीगोवर्धन आयके श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों आज्ञा मांगी मोकों श्रीनाथजी आज्ञा किये हें सो आप जो आज्ञा दें तो मंदिर सिद्धि होय और नीम लगे तब श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों आज्ञा किये जो तुम मंदिरको चित्र कागदमें लिख लाओ तब वह सब मंदिरकी अनुकृति बडे कागदमें उतार लायो ताकूं श्रीआचार्यजी आप

१ कोई पुस्तकनमें यह वार्ता संक्षेपसूं है ।

देखे तामें शिखर देख्यो तब आज्ञा दिये दूसरो उतार लाव। तब वह दूसरो उतार लायो तामें हू शिखर देख फेर आज्ञा किये तीसरो उतार लाव. तब वह तीसरो उतार लायो ताहूमें शिखर देखकें श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास सूं आज्ञा किये जो श्रीनाथजीकी आज्ञा शिखर मंदिरपै है, तातें कोईक काल या मंदिरमें बिराजेंगे तापाछे यवनको उपद्रव होयगो. तब और देशमें श्रीजी पधारेंगे और कोई काल तहां बिराजेंगे पाछें वृजमें फेर पधारेंगे तब पूंछरीकी और पृथ्वीपै मंदिर बनेगो श्रीगिरिराजके तीन शिखर हैं आदि शिखर, ब्रह्मशिखर, और देव शिखर, । तामेंसूं पहिले श्रीकृष्णावतारमें आदिशिखरपै क्रीड़ा करी. मध्यमें देवशिखर पर क्रीडा अब करत हैं और क्रीडाके अवसान समयमें ब्रह्मशिखर पर क्रीडा करेंगे। आदि शिखर और देवशिखर तो पृथ्वीमें गुप्त हैं ब्रह्मशिखर प्रगट दर्शन देतहै । आप श्रीगोवर्धननाथजी हैं तातें सदा श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगोवर्धन ऊपर क्रीड़ा करत हैं ॥

॥ श्रीजीके नवीन मंदिरको आरंभ.॥

ऐसें आज्ञा करिकें संवत् १५५६ वैशाख शुदी ३ आदित्यवारके दिन रोहिणी नक्षत्रमें श्रीनाथजीके नवीन मन्दिरकी नीम दिवाई। पूर्णमल्लके पास एक लक्ष मुद्रा कछुक सहस्र ऊपर हती सो एक लक्षमुद्रा तो मन्दिरमें लगि गई कछुक रही. ताकूं लेकें पूर्णमल्ल दक्षिणकूं गये। तहां ते रत्न ल्यायकें विक्रय किये तामें तीन लक्ष मुद्रा पैदा भई, तिनही मुद्रानसों बीस वर्ष पीछें आयकें फेरि मंदिर संपूर्ण बनवायो । तहां तांई यह मंदिर आधोही रह्यो पीछें तहां तांई वाई मंदिरमें बिराजे। और वृजवासिनमें क्रीडा करिवेकी इच्छा हती

तासों प्रतिबंध बीस बरस कीने तहां तांई रामदास चोहांन राजपूत सेवा किये । और संवत १५४५ सूं आरंभ लेके संवत १५७६ तक याही प्रकार अनेक क्रीडा करे ॥

॥ श्रीजीको नवीन मन्दिरमें पाटोत्सव ॥

जब बड़ो मंदिर बनके सिद्ध भयो ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पृथ्वी परिक्रमा करिकें व्रजमें पधारे । और जो बड़ो मंदिर सिद्ध भयो हतो तामें श्रीनाथजीकूं श्रीआचार्यजी महाप्रभुने संवत १५७६ वैशाख शुदी ३ अक्षयतृतीयाके दिन पाट बैठाये । तब पूर्णमल्ल ता दिना श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करके बहोत प्रसन्न भयो और अपने परम भाग्य मानत भयो जो धन्य श्रीगोवर्धननाथजी मोंकों अनुग्रह करिके यह सुख दिखाये । सो ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पूर्णमल्लके ऊपर बहोत प्रसन्न भये, और श्रीमुखतें कहे जो पूर्णमल्ल कछू मांग में तेरेऊपर बहोत प्रसन्न भयोहूं । तब पूर्णमल्लने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों बिनती कीनी जो महाराज! में अति उत्तम सुगंधित अरगजा अपने हाथनसों श्रीगोवर्धननाथजीके श्रीअंगकों समर्पों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आज्ञा किये जो तू आज कोई बातको मनोरथ अपने मनमें मत राखे सुखेन समर्पि और जो तेरो मनोरथ होय सोऊ तू सुखेन कर तब तो पूर्णमल्ल अति प्रसन्न होय अत्युत्तम अतर अरगजा सहित कटोरा सारिके और फुलेल सिद्धि करकें श्रीगोवर्धननाथजीको समर्पि श्रीअंगसें ल्यावत भये और अत्यन्त स्नेह प्रीति वात्सल्य किये और अपनो परम भाग्य मान्यो । पाछे वस्त्र आभूषण आदि सब सृंगार श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्धननाथजीकों किए । तादिन

अनिर्वचनीय सुख भयो और उत्सव बडोहीं भयो तब पूर्णमल्लने बहोत प्रसन्न होयकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सेवा भली भांति सों कीनी । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु बहोत प्रसन्न भये और अपने श्रीअंगको प्रसादी उपरना पूर्णमल्लकों उढायो । तब पूर्णमल्ल साष्टांग दंडवत् करकें और आज्ञा मांगिकें अपने स्वदेश अंबालय-कों गये ।

॥ श्रीजीकी सेवाको मडान ॥

सो पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने सद्दू पांडेकों बुलाये और आज्ञा किये जो श्रीगोवर्धननाथजीको मंदिर तो बडो सिद्ध भयो, तासूं ऐसे मंदिरमें तो सेवक बहोत चहिये सो तुम ब्राह्मण हो और शास्त्रकी मर्यादा है और भगवद्सेवा ब्राह्मण करें तो आछो ॥ तब सद्दू पांडेने कही महाराज हमारी जातके तो कछू आचार विचारमें समझें नहीं और जो कोई सेवामें समझते होंय तिनकों राखने ताते श्रीकूंड पे ब्राह्मण वैष्णव श्रीकृष्णचैतन्यके सेवकहैं तिनको राखेंतो आछो । तब श्रीआचार्यजीने श्रीनाथजीकी सेवामें बंगाली ब्राह्मण हते तिनकों राखे और सेवाकी रीत बताई माधवेन्द्रपुरीकूं मुखिया किये और उनके शिष्यनकूं सेवामें राख दिये कृष्णदासजीकूं अधिकारकी सेवा दिये, कुंभनदासकूं कीर्तनकी सेवा दिये और श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें नित्यको नेग बांध्यो, जो इतनी सामग्री तो श्रीजी नित्य आरोगेंगे, सो इतनो नेग तो सद्दू पांडे पहोंचावेंगे और अधिक आवे तो आधिक उठाइयो और या महाप्रसादतें तुम तुह्मारो निर्वाह करियो और श्रीनाथजीको समय कोउ मत चूकियो और जो भगवद् इच्छातें आय प्राप्त होय सो

धरियो, परंतु श्रीगोवर्धननाथजीकों अवार न होय और समय समय प्रति पहोंचियो सो या प्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमुख सों आज्ञा कर आप पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे ॥

श्रीनाथजीके लिये श्रीआचार्यजी अपनी सुवर्णकी वींटी वेचवाये और एक गाय मंगवाये

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पृथ्वी परिक्रमाकों पधारवे पहिले एकदिन श्रीगोवर्धननाथजी श्रीआचार्यजीसों कहे जो मोकों गाय लाय देउ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कही जो हां हां सिद्ध है तब ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु सद्दू पांडेसों कहे जो श्रीगोवर्धननाथजीकी इच्छा गाय लेवेकी भई है से हमारे पास यह सोंनेकी वींटी है ताकी गाव जो आवे सो आंनि देउ । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों सद्दू पांडेनें विनती करी जो महाराज घरमें इतनो गोधन है सो कोनको है और ये गाय भैंस हैं सो सब आपकी है और हमारो रह्यो कहा तातें आप आज्ञा करो तितनी गाय लाऊं तब आचार्यजी महाप्रभु कहे जो तुम चोगे ताकी तो हम नाहीं करत नाहीं तुमारी इच्छा, पर मोकों श्रीगोवर्धननाथजीने आज्ञा दीनी है सो तासों या सुवर्णकी गाय लाय देउ । तब सद्दू पांडे सुवर्ण बेचिकें गाय ले आये । सो श्रीनाथजीके आगें लायकें ठाढी कीनी सो आप देखिकें श्रीनाथजी बहोत प्रसन्न भये फेर सगरे व्रजवासीनने सुनी जो श्रीगोवर्धननाथजीकों गाय बहोत प्रिय है सो कोई चार गाय, कोई दो गाय, कोई एक गाय सो सबननें लायके श्रीनाथजीके भेट कीनी सो ऐसे करत सहस्त्रावधि गाय भेट आई। सो तब श्रीनाथजीको नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभूनने गोपाल धर्यो सो भगवदीय छीतस्वामि गाये हैं सो पद—

॥ राग पूरवी ॥

आगें गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय गोविंदाकों गायनमें बसिवोई भावे ॥
गायनके संग धावे गायनमें सुखपावें गायनकी खुररेणु तन अंग लपटावें ॥ १ ॥
गायनसों व्रजछायो वैकुंठ बिसरायो गायनके हेत गिरि करले उठावें ॥
छीतस्वामि गिरधारी विठ्ठलेश वपुधारी ग्वालियाको भेसकिये गायनमें आवे २

॥ श्रीजीको गोविन्दकुन्डपे पधारनो ॥

एक दिन चतुरा नागाने गोविंद कुंड के ऊपर आयकें रोटी और बडी सिद्धि करिकें श्रीनाथजीकों भोग धर्यो ताही समय माधवेन्द्रपुरीने श्रीजीकूं पर्वत ऊपर राजभोग धर्यो ताकों छोडिकें श्रीनाथजी गोविंदकुडके ऊपर चतुरा नागाके यहां पधारे परंतु सामग्री थोडीसी हती तातें तृप्त न भये माधवेंद्रपुरीसों आज्ञा किये में भूखोहूं राजभोग फेरि करो तब राजभोग फेरि कर्यो ॥

॥ श्रीनाथजी बंगालीनकी सेवासों अप्रसन्न भये और तिनकूं निकासवेकी आज्ञा किये ॥

माधवेन्द्रपुरी श्रीजीकों नित्य मुकुट काछनीको शृंगार करते और उत्सवके दिना पागको शृंगार करते और नित्य चंदन समर्पते परंतु वह श्रीजीकूं आछो नहीं लागतो यद्यपि श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके राखे हते तातें आज्ञा कछू नहीं करते ऐसे वर्ष १४ चौदह पर्यंत बंगालीननें सेवा कीनी कभीक एक देवी वृंदाके स्वरूप श्रीजीके पास बेठाये हे सो यह हू श्रीजीकों अप्रिय लगे तब अवधूतदासकों आज्ञा दीने कृष्णदाससूं कहो ये बंगाली मेरो द्रव्य चुराय ले जात हैं बंगालीनकूं निकासो ।

॥ श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको स्वधाम पधारनो ॥

तहां तांई संवत १५८७ आषाढ सुदी २ उपरांत ३ तीजके दिना

मध्यान्ह समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीकाशीमें हनुमान् घाटपे श्रीगंगाजीके मध्य प्रवाहमें पधारे और पद्मासन करके स्वधामकों पधारे॥

॥ श्रीआचार्यजीके प्रथम पुत्र श्रीगोपीनाथजीको गादी विराजवो ।'

तदनन्तर श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके प्रथम पुत्र श्रीगोपीनाथजी गादी विराजे और तीन वर्षपर्यंत श्रीजीकी सेवा करे तहां तांई बंगाली सेवामें रहे और श्रीगोपीनाथजीने लक्ष रुपैयाके पात्र तथा आभरण श्रीजीकों बनवाये

श्रीपुरुषोत्तमजी स्वधाम पधारे ॥

श्रीगोपीनाथजीके पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजीनो श्रीगिरिराजकी कंदरामें पधारे श्रीजीने अपने हाथसों पकडके सदेहसों लीलामें अंगीकारकिये ॥

॥ श्रीगोपीनाथजी स्वधाम पधारे ॥

सो पुत्र वियोग करिके श्रीगोपीनाथजीको चित्त बहोत उदास भयो; तब आप श्रीजगन्नाथ देवकूं पधारे तहां श्रीबलदेवजीके स्वरूपमें समाय गये लीनव्है गये, और पूर्व स्वरूपको प्राप्त भये॥

॥ श्रीगुसांईजीको गादी विराजनो और बंगालीनकूं ॥
॥ काढ दूजे सेवक सेवामें राखनो ॥

श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पुत्र दोय, प्रथम श्रीगोपीनाथजी सो तो श्रीजगन्नाथदेवकूं समर्पे और द्वितीय पुत्र श्रीगुसांईजी अर्थात् श्रीमद्विठ्ठलनाथजीको राज्य भयो। तब बंगालीनकूं काढ दिये श्रीजीकी इच्छा जानिके और गुर्जर ब्राह्मण सेवामें राखे; रामदासकूं मुखिया किये सब ब्राह्मण सेवामें राखे ॥

श्रीजीकी आज्ञानुसार माधवेन्द्रपुरी मलयागर चंदन
लायवेकूं दक्षिण चले ॥

माधवेन्द्रपुरीकों श्रीजी आज्ञा किये जो असल मलयागर

चंदन लायकें मोकूं समर्पो मोकूं चंदन लगायवे को प्रेम हे सो यह आज्ञा सुनिके माधवेन्द्रपुरी दक्षिण दिशाकूं चंदन लेवे चले ॥

॥ पेंडेमें माधवेन्द्रपुरीकूं श्रीगोपीनाथजीके दर्शन भये ॥

पेंडेमें माधवेन्द्रपुरीकूं श्रीगोपीनाथजीके दर्शन भये । दर्शन करिकें एक धर्मशाला हती तामें जायकें सोये और चित्तमें विचार करे जो श्रीगोपीनाथजीके खीरके अटका बहोत भोग आवे हें ऐसे खीरके अटका मेंनें श्रीजीकूं कबहूं भोग धरे नांहीं ऐसो पश्चात्ताप चित्तमें करे । तासमय श्रीगोपीनाथजीके सैन भोग आयो तातें खीरके अटका बहोत भये तामेंसें एक खीरको अटका श्रीगोपीनाथजीनें चुरायकें सिंहासनके नीचे दुबकाय राख्यो । जब भोग सरे तब एक घट्यो तब पंड्या लड़न लागे तब श्रीगोपीनाथजी आज्ञा किये यह अटका तुमनें काहूने नहीं चुरायो मेंनें चुरायो हे सिंहासनके नीचे हे ताकूं लेकें एक पंड्या जाओ जो श्रीनाथजीको मुखिया आयो हें माधवेन्द्रपुरी ताकों दे आओ तब एक पंड्या लेकें सब गाममें पुकारत फिर्यो कोई माधवेन्द्रपुरी श्रीनाथजीको मुखिया आयो हे यह बात सुनिकें माधवेन्द्रपुरी बोले एक माधवेन्द्रपुरी तो में हूं तब पंड्यानें वह खीरको अटका दीनो और कह्यो जो श्रीगोपीनाथजीनें तुमकूं प्रसाद पठवायो हे ताकूं लेकें माधवेन्द्रपुरी बहोत प्रसन्न भये । ता दिनासूं श्रीगोपीनाथजीको नाम खीर चोरा गोपीनाथ धर्यो यासूं लोक प्रसिद्ध यह नाम हे॥

॥ माधवेन्द्रपुरी और तैलिंग देशको राजा चंदनके भारा लेकें श्रीनाथजीकों समर्पिवे चले ॥

तहांसूं आगें माधवेंद्रपुरी दक्षिणमें गये तहां तैलिंगदेशको

राजा उनको शिष्य हतो ताके घर गये। राजाने बहोत समाधान कियो और बिनती कीनी जो महाराज कोंनसी दिशाकूं पधारोगे। तब माधवेन्द्रपुरी आज्ञा किये श्रीनाथजीनें मोकों आज्ञा कीनी है, जो मोकों गरमी लगे है तासूं मोकूं असल मलयागर चंदन लायकें समर्पो। तासूं में मलयाचल पर्वत जाउंगो तहांतें मलयागर चंदन लायकें श्रीनाथजीकूं समर्पुंगो। तब राजानें बिनती करी जो महाराज मेरे घरमें दो मलयागर चंदनके मूठा हे सो ऐसे हैं जो सवामन तेल ओटायकें एक तोलाभर वामें डारों तो तेल सब शीतल होय जाय तातें ये आप ले पधारिये श्रीजीकों समर्पिये और मोकूं श्रीनाथजीको दर्शन करवाइये तो मेंहूं आपके संग चलूंगो तब माधवेन्द्रपुरीनें आज्ञा करी जो तू पुत्रकूं राज देकें अकेले चले तो तोकों श्रीनाथजीको दर्शन होय तब वानें ऐसेंही कियो एक चंदनको भारा माधवेन्द्रपुरीनें लियो और एक राजाने मस्तकपें लियो दोऊ गुरु शिष्य श्रीनाथजीके दर्शनकों चले॥

॥ माधवेन्द्रपुरीकूं श्रीनाथजीके साक्षात् दर्शन भये और श्रीहिम-गुपालजीकी सदा सेवा करवेकों परलोक भये॥

तहां ते त्रिपेतिमें आये तहां पुष्करिणी नदीमें स्नान करिकें एक उपवनमें बैठे और श्रीनाथजीको ध्यान करे हैं। ता समय श्रीनाथजीनें जान्यों जो मेरे लिये माधवेन्द्रपुरी मलयागर चंदन लेकें आवत हे तातें वाहीं स्थल उपवनमें जो श्रीनाथजीनें दर्शन दीने सो ग्रीष्म ऋतुको शृंगार हे और माधवेन्द्रपुरीसों कहे जो तू मोकूं चंदन लगाय गरमी होत हे तब चंदन घिसकें माधवेन्द्र-पुरीनें श्रीनाथजीकूं समर्प्यो हरे नारियलकी गिरी तथा केला

१ तरुपन बनाजी

श्रीनाथजीकों भोग धरेसो श्रीनाथजी आरोगे । ता पाछे माधवेन्द्रपुरी सों श्रीनाथजी आज्ञा किये जो व्रजमें हिमाचल निकट हे ताते बारेही मास चंदन रुचत नहीं ग्रीष्मऋतुमें सुखद होय हे और तुह्मारी इच्छा तो बारेही मास लगायवेकी हे ताते दक्षिणमें सदां गरमी रहत हे सो मलयाचल पर्वतके ऊपर एक मेरी बैठक हे तहां तुम सदां रहो और नित्य मोकों चंदन समर्प्यो करो और या तुमारे शिष्य राजा हू कूं संग लिये जाओ परचारकी करेंगो तुम गुरुशिष्य मलयाचलपे सदा मेरी सेवा कर्यो करो तहां मेरो एक स्वरूप विराजत हे तिनसों सब कोई श्रीहिमगुपाल कहत हैं सदां चंदनको बागो पहिरे रहत हैं आसपास चंदनको वन हे तहां इन्द्र नित्य दर्शनको आवत हें तहां तुम जाओ और व्रजमेंतो सदाही मेरी सेवा श्रीगुसांईजी करत हें सो वे समय समय ऋतु ऋतुके वस्त्र आभूषण सामग्री और अनेक प्रकारकी सुगंधी समर्पिके और अनेक प्रकार करकें लाड लडावत हें इतनी आज्ञा करके श्रीनाथजी अंतर्ध्यान भये सो श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर पधारे और माधवेन्द्रपुरीहू जैसें आज्ञा भई तैसें ही करत भये अर्थात् श्रीहिमगुपालजीकी सदां सर्वदा सेवा करवेकूं परलोक गये ॥

॥ माधवेन्द्रपुरीके परलोक भयेकी वार्ता षट्मास पीछे सुनकें ॥
॥ श्रीगुसांईजी खेद किये ॥

माधवेन्द्रपुरीके परलोक होयवेकी वार्ता षट् मास पीछें श्रीगुसांईजीने सुनी तब चित्तकूं बडो खेद किये और आज्ञा किये जो माधवेन्द्रपुरी चंदन लेकें आवत हते सो मारगमें परलोक भये ऐसे प्रेमलक्षणके हमें सेवक कहां मिलेंगे यह माधवेन्द्रपुरी

संपूर्ण शास्त्राभ्यास करकें और तत्सारभूत सेवा मारगको ग्रहण कियो और श्रीनाथजीकी कृपा उनपे बहुत हती ऐसें आज्ञा करकें श्रीगुसांईजी आप चित्तमें बडो खेद किये । तब श्रीनाथजीनें समाधान कियो सब वृत्तान्त आज्ञा किये तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये॥

॥ माधवेन्द्रपुरीको जीवन चरित्र ॥

माधवेन्द्रपुरी तैलंग देशके ब्राह्मण हते । माध्वसंप्रदायके आचार्य उनके शिष्य कृष्णचैतन्य भये सो उनकूं कहे तुम गौड देशको उद्धार करो तातें गौडिया सब उनके शिष्य और सेवक भये और माधवेन्द्रपुरी तो पहिलें संन्यास ग्रहण करके काशी रहत हते श्रीलक्ष्मणभट्टजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुको यज्ञोपवित काशीमें किये तब माधवेन्द्रपुरीसों विनती कीनी तुम या लरिकाकों विद्या पठन करवाओ । तब चारों वेद षट् शास्त्र महिना चारमें सब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पढ़े । ता समय माधवेन्द्रपुरीकों आज्ञा किये जो कछु तुम गुरु दक्षिणामें वरदान मांगो ऐसें आज्ञा किये ता समय उनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुको स्वरूप परब्रह्म स्वरूप दृश्यमान भयो तब विनती करी जो आप श्रीनाथजीकों प्रगट करेंगे सो मोकों आप के चरित्र दिव्य दृष्टिसों आपकी कृपासे दीसत हें तहां सेवाके लेश कछू मोकूं हूं प्राप्त होय यही दक्षिणा में मांगत हूं तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आज्ञा किये जब में जाऊंगो और श्रीनाथजीकूं पाट बेठाऊंगो ता समय आप व्रजमें आवें तुमकूं हम श्रीनाथजीकी सेवा सोंपेंगे जहां तांई श्रीजीकी इच्छा तू मोकूं [illegible] तांई सेवा करोगे ता पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु समय पुरीनें श्रीना[illegible]रे श्रीजीकूं पाट बेठाये तब माधवेन्द्रपुरी हू व्रज-

१ लक्ष्मण बाल

में आये तब उनकों आपने सेवा सौंपी सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के वरदानतें श्रीनाथजी १४ वर्ष पर्यंत माधवेन्द्रपुरीपे सेवा करवाये और उनके संबन्धसों और ह बंगालिनसों सेवा करवाये परंतु महा रस सेवाको अधिकार देख्यो नहीं तातें आज्ञा किये मेरो नाम स्मरण करो तातें तुह्मारो उद्धार होयगो मेरी सेवा श्रीगुसांईजी करेंगे ।

॥ अष्टसखा वर्णन ॥

तब श्रीगोवर्धननाथजी श्रीगिरिराज ऊपर विराजे श्रीगुसांई-जी सेवाकरे ओर जब श्रीगोवर्धननाथजी प्रगट भये तब अष्ट सखा हू भूमिपे प्रगट भये अष्ट छापरूप होय कें सब लीलाको गान करत भये तिनके नाम कृष्ण १ तोक २ ऋषभ ३ सुबल ४ अर्जुन ५ विशाल ६ भोज ७ श्रीदामा ८ ये अष्ट सखा अष्टछाप रूप भये तिनके नामकी छप्पय श्रीद्वारकानाथजी महाराज कृत—

॥ छप्पय ॥

सूरदास सो तो कृष्ण तोक परमानंद जानो ।
कृष्णदास सो ऋषभ छीतस्वामी सुबल बखानो ॥
अर्जुन कुंभनदास चतुर्भुजदास विशाला ।
विष्णुदास सो भोजस्वामी गोविंद श्रीदामाला ॥
अष्टछाप आठों सखा श्रीद्वारकेश परमान ।
जिनके कृत गुन गान करि निजजन होत सुथान ॥ १ ॥

और श्रीगुसांईजीके प्रागट्यके समय श्रीनाथजी अनेकप्र-कारके चरित्र व्रजमें करे ॥

॥ काशीके एक नागर ब्राह्मणकी वार्ता ॥

एक काशीको नागर ब्राह्मण हतो सो स्मार्त हतो वाको विवाह बडनगरमें भयो सो वह ब्राह्मण अपनी बहूकूं लैकें काशी जात

हतो सो यह स्त्री श्रीगुसांईजी की सेवक हती तब पेंड़में श्रीमथुराजी आये तब स्त्रीने कह्यो यहां श्रीगोवर्धन पर्वतके ऊपर श्रीनाथजी विराजत हें हमारे कुलदेवता हें तातें उनके दर्शन करत चलो यह सुनिकें यद्यपि वह सेवक न हतो परंतु भगवद् इच्छा तें याके मन में आईसो दर्शन कूं गयो सो सोग के दर्शन किये ता समय वा स्त्रीने श्रीनाथजी सों विनती कीनी जो महाराज मेरो हस्त श्रीगुसांईजी आपकी कान तें ग्रहण कियो हे तातें मो सेवकको यह दुःसंग छुडाओ और अपने निकट राखो। यह विनती सुनके श्रीनाथजी आपके श्रीहस्तसों गहिकें वाकों सदेहसों नित्यलीलामें अंगीकार किये तब वह ब्राह्मण मरिके पड्यो तब श्रीगुसांईजी आप वाकों नित्यलीलाको दर्शन करवाये जब गोपिकामंडलमें वा स्त्रीकों देखी तब वा नागरको संदेह मिट्यो फिर वह श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और नित्य लीलामें प्राप्त भयो फिर वाको गांठ्योलीमें जन्म भयो और श्याम पखावजी नाम कर प्रसिद्ध भयो वाकी एक बेटी ललिता नामक भई सो बीन बहुत आछी बजावे ओर श्याम मृदंग बहुत सुन्दर बजावे ताके सुनबेके लियें श्रीनाथजी एक दिना चार प्रहर रात्रि जागे प्रातःकाल शंखनाद भयो तब निज मंदिर में पधारे तब जगावती बिरियां श्रीगुसांईजी लाल नेत्र देखकें श्रीजीसूं पूछे बाबा आजरात्रि जागरण कहां भयो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये आज गांठ्योलीमें ललिताने बीन बजाई और श्यामनें मृदंग बजायो तब बड़ो रंग भयो यह सुनिके श्रीगुसांईजी श्याम पखावजी और ललिताकूं बुलायकें नाम सुनायो और श्रीजीकी सेवामें तत्पर कीने जहां जहां श्रीनाथजी

क्रीडा करे तहां तहां अष्टछाप गावें और ललिता और श्याम बजावे

॥ सब व्रजवासीनने मिल श्रीजीकूं गाय भेट कीनी ॥

जब सब व्रजवासीनने सुनी जो श्रीदेवदमनकूं गाय बहुत प्रिय हैं तब सबनने मिलकें यह विचार कियो जो जाके गाय होय सो सब एक एक तथा दोय दोय भेट करो । और श्रीगिरिराजके आस पास जो चोवीस गाम हते तिनके पाससूं सब व्रजवासी मिलके एक एक दोय दोय गाय भेट करवाई और यह ठहरी जो बीस गाममें जाके प्रथम गाय व्यावे सो बछिया तो श्रीदेवदमनकी भेट करे । ऐसें सहस्रावधि गाय श्रीजीके भेट भई तब दूध दही मांखन और मठा सब घरकी गायनको आरोगें ॥

॥ श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीके खरच आदि प्रमाण बांध्यो ॥

फेर श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीके खरचको प्रमाण बांध्यो सो वर्ष दिनके एक लक्ष १,००,००० रुपैयामें सब ठोड लडुवा और सामग्री आदि आरोगनलागे और उत्सवके प्रकार सब श्रीगुसांईजीने बांधे । एक दहेंडी व्रजवासीनके घरतें राजभोगमें आवे और दूध दही सब घरकी गायनको आरोगें ॥

॥ व्रजवासीनकी दहेंडी बंद तथा चल्लू करवो ॥

एक दिना राजभोग आरती पाछें प्रसाद लेतमें एक सेवकने व्रजवासीनकी दहेंडी मेंते रोटीको टूक देख्यो तब श्रीगुसांईजीसों विनती कीनी तब श्रीगुसांईजीने फेरिके राजभोग धर्‍यो और व्रजवासीनकी दहेंड़ी मने करी और दूधघरमेंतें एक दहेंडी राजभोगमें चल्लू कीनी । जब दूसरे दिन राजभोग आयो तब श्रीनाथजी रामदास भीतरियासों आज्ञा करी जो एक दहेंडी व्रजवासीन

की यहां धर्यो करो और तुम सावधान होय देखकें लियो करो परन्तु राजभोगमें धर्यो करो। पाछें यह विनती रामदासजीके मुखतें सुनिकें श्रीगुसांईजीने व्रजवासीनकी दहेंडी राजभोगमें धराई तब श्रीनाथजी राजभोग आरोगे ॥

॥ श्रीगुसांईजीने गायनके खिरक बनवाये और चार ग्वाल राखे ॥

और श्रीगुसांईजीने बडे बडे खिरक गायनके लिये गुलाल कुंडके मारगमें बनवाये तिनमें सब गाय बिराजें और ४ ग्वाल गायनकी सेवामें राखे तिनके नाम कुंभनदासके बेटा कृष्णदास १ गोपीनाथदास २ गोपाल ग्वाल ३ और गंगा ग्वाल ४ और दिवसमें जब गायन कों चरायवेकों जाय तब श्रीजीके संग सब ग्वाल मंडली जाय ॥

॥ श्रीजीने गोपीवल्लभमेंतें आठ लड्डुवा चुराय ग्वालनकूं बांटे ॥

एक दिन प्याऊके ढाक तरे श्रीजी खेलत हते सब ग्वाल मंडली संग हती ता समय गोपीनाथदास ग्वालने कही जो श्रीदेवदमन अब तोकों श्रीगुसांईजी लड्डुवा आरोगावत हैं तामेंतूं हमकूं भी लड्डुवा लायो करि तब श्रीनाथजी कहे काल लाऊंगो। ता पाछें गोपविल्लभमेंतें दूसरे दिन लड्डुवा आठ श्रीजी चुरायके लाये सो वनमें ग्वाल मंडलीमें सब ग्वालनकूं एक एक कर बांट दिये और दो लड्डुवा गोपीनाथदास ग्वालकूं दिये तामेंतें एक लड्डुवा तो गोपीनाथदास ग्वालने खायो और एक बांध राख्यो। जब सांझकूं घर आये तब सब ग्वालनने श्रीगुसांईजीके आगे दंडवत करी तासमय श्रीगुसांईजीके आगे सब भीतरिया ठाडे हते और आठ लड्डुवा घटे ताकी चर्चा करतहते। तब गोपीनाथदास ग्वाल

ने लडुवा खोलिकें बतायो और कह्यो महाराज यह लडुवा तो नहीं हे तब श्रीगुसांईजीने और सबनने कही यह लडुवा उन आठनमेंको हे तब श्रीगोपीनाथदास ग्वालनें कही श्रीदेवदमन आज आठ लडुवा लायो तब एक एक सबनकूं बांट दिये और मोकूं दो लडुवा दिये। तब वा लडुवामेंतें श्रीगुसांईजीने एक कणि लीनी ओर सब वैष्णवनकूं कनिका कनिका बांट दियो फेर श्रीगुसांईजी आज्ञा किये जो गोपीनाथदास ग्वालकूं दो लडुवा नित्य दियो करो। यह श्रीजीको कलेऊ हे इनको नेग हे और सब सेवकनके सेवा अनुसार नेग बांध दिये ॥

॥ श्रीनाथजी चांवलके खेतके रखवारेकूं दो लडुवा दिये ॥

श्रीगिरिराजकी तरहटीमें एक श्रीजीको चांवलको खेत हतो ताकी दो छोरा रखवारी करते सो एक दिन एक छोरा रोटी खायवेकूं गयो तब अवार लगी तब वो दूसरो छोरा श्रीनाथजीकी ध्वजाके साह्मी हाथ करिके पुकार्‍यो और कह्यो भैया श्रीदेवदमन में तेरे चोखाके खेतको रखवारो हूं और चोकी देत हूं मोहि खायवेकों पठाइयो। यह सुनिके परम कृपालु श्रीजी दो लडुवा बंटामेंतें लेकें वाकूं दे आये। फिरके वामेंते दो लडुवा घटे तब आपसमें चर्चा भई तब श्रीनाथजी आज्ञा किये मेंने चांवलके खेतके रखवारेकूं दिये हें। तब वा छोराकूं श्रीगुसांईजी आप बुलायकें सेवामें राखे वाको नाम हरजी ग्वाल हो जाकी हरजीकी पोखर करकें प्रसिद्ध हे और तहां नित्य गाय जल पीवें हें ॥

॥ श्रीनाथजीके राजभोगमें व्रजवासीनकी दहेंडी नहीं आई ॥
॥ तासूं आप सुवर्ण को कटोरा गूजरीके घर धरके दही आरोगे ॥

ता पाछे फेरि व्रजवासीनके यहांकी दहेंडी एक नित्य

राजभोगमें आवती सो एक दिन अबेरी आई माला बोले पाछे सो राजभोग तो उसरि गयो तातें वह दहेंडी भोग न धरी तब मध्यान्ह कालकूं अनोसर भये तब श्रीनाथजी कहे जो मैंने आज व्रजवासीन को दही नहीं आरोग्यो तब एक कटोरा सुवर्णको मंदिरमेंतें लेके बरोलीमें जो एक शोभा गूजरी रहती हती ताके घर पधारे तासूं कहे तूं मोकूं दही दे तब वाने सुन्दर दही जमायके धर्यो हतो वामेंसूं दियो सो वा सुवर्णके कटोरामें सूं जितनी इच्छा हती तितनो आरोगे और सुवर्णको कटोरा वाकेही घर डारकें श्रीजी श्यामघाट पधारे। तहां जलघरीमेंते जल अरोगे और गोपीनाथदास ग्वाल कुंभनदास गोविन्दस्वामि प्रभृति सब मंडली देखी और गायहूं चरत देखी तहां सब ग्वाल मंडलीसूं मिलके श्रीजी आंख मिचोनीको खेल खेले इतनेमें शंख नाद भये तब निज मंदिर में पधारे सब गाय हूं खिरकमें आई। जब मंदिरमें सेवकनने सुवर्णकी कटोरी न देखी तब आपसमें पररपर बडी चर्चा भई इतनेहीमें बरोलीसूं शोभा गूजरी कटोरा लेकें आई श्रीगुसांईजीकूं दियो और कही महाराज श्रीदेवदमन हमारे घर दही पायवेकूं आये सो बेला वहांही डार आये सो में लाई हूं। यह सुनके श्रीगुसांईजी अपने मनमें बडो पश्चात्ताप करे जो हमने तो व्रजवासीनको दही नहीं धर्यो परंतु श्रीनाथजी आरोगे बिना कैसें रहें वहां जायकें आरोगे हें। ता दिना तें दहेंडी बेगही मंगायके राजभोगमें धरते ॥

॥ श्रीनाथजी रूपाके कटोरामें दहीभात आरोगे ॥

और एक दिना श्रीगोविन्दकुंडकी बाटमें श्रीनाथजी ठाडे हते तहां एक व्रजवासिनी दहीभात सांनिकें अपने छोरानकूं

छाक ले जात हती तापेसूं श्रीजी दहीभात मांगे तब वाने कही बासन लाव तब रूपेको कटोरा मंदिरमेंसों लेगये सो तामें वाने दहीभात कर दियो तब निज मंदिरमें आय ता पदुपहरीमें अनोसरमें अरोगकें कटोरा वहांही डारादियो। जब उत्थापन पीछे भीतरिया निज मंदिर में आये तहां देखेंतो सखरो कटोरा पड्यो हे तब पात्रमांजानसों पूछे तब उनने कह्यो हमने तो मांजके धर्यो हे पाछेकी हमकूं खबर नहीं । तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीसों आज्ञा किये लच्छो गूजरी पेड्यो की तापेसूं दहीभात लायके हमनें आरोग्यो हे कटोरा मांजडारो। तब श्रीगुसांईजी आप विचारे जो आज काल ग्रीष्म काल हे तासूं आपकूं दहीभात प्रिय हे सो नित्य राजभोगमें करवे लगे एसें सब भोगनमें सब नेग बांधे श्रीजीकी इच्छाके अनुसार ऋतु ऋतु और समय समयके नेगकिये॥

॥ श्रीनाथजीश्यामढाकपे छाक आरोगे ॥

और एक दिन श्रीजी गोपालदासकों आज्ञा दिये जो हम अप्सरा कुंड ऊपर हें तूं श्रीगुसांईजी सों जायके कहियो जो तुम दहीभातकी छाक लेंके बेग पधारो हम श्याम ढाक तरे हें तुम दहीभात सिद्ध कर छाक लेकें पधारो हमकूं भूख लगीहे । तब गोपालदासने जायकें बिनती करी सो सुनकें हीं श्रीगुसांईजी अप-रसमें छाक सिद्धि करकें श्यामढाक पधारे तहां श्रीजी श्रीबलदेवजी सहित और सब सखामंडली सहित छाक आरोगे । या लीलाको अनुभव करिकें श्रीगुसांईजी आप बेठकमें पधारे॥

॥ श्रीजी श्रीगुसांईजीके घर मथुरा पधारे श्रीगुसांईजी सर्वस्व अर्पण किये श्रीजी तहां होरी खेल पाछे गिरिराज पधारे ॥

एक समय श्रीगुसांईजी गुजरातकों पधारे हते और श्रीनाथजी

श्रीगिरिधरजीसूं आज्ञा किये में तुह्मारे घर देखवेकूं श्रीमथुरा चलूंगो यह आशय जानकें श्रीगिरिधरजी रथसिद्धि करवाये खासके बैल जोतकें रथ दंडोती शिलापे ठाडो कियो । तब श्रीगोवर्धननाथजी श्री गिरिधरजीके कंधापे चढिकें दंडोती शिलापेसूं रथमें बिराजे । श्रीगि-रिधरजी रथकूं हांककें श्रीमथुराजी अपने घर पधारे तहां सतघरा में श्रीगुसांईजीके घर पधराये संवत १६२३ फाल्गुन वदी ७ गुरुवार के दिन पाट बेठाये । पाटोत्सव सातों घरनमें प्रसिद्ध और मानें हें। जा दिना श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीके घर पधारे तादिना श्रीगिरिधरजी ने सर्वस्व समर्पण कीनो एक परदनी पहरिकें आप बाहर निकस ठाडे भये और बहू बेटी एक एक साडी पहरिकें ठाडी रही द्रव्य आभू-षण अमोल वस्त्र पात्र रथ अश्वादिक सब अर्पण कीने परंतु कमला बेटीजीने एक नथ राखी और सब भेटकियो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये हमारी नथ लाओ ऐसी समाल लीनी यह अंगीकारको लक्षण हे ॥

॥ श्रीजीको होरी खेलवो ॥

फिर श्रीगिरिधरजी आदिक सब श्रीनाथजीकूं होरी खिलाये। तापाछे श्रीजीने सब बहू बेटीनकूं आज्ञा दीनी तुम मोकूं होरी खिला-ओ तब प्रत्येक प्रत्येक सब बहू बेटीननें श्रीनाथजीकूं होरी खिलाये चोवाकी चोली पहिराई मोहनी शृंगार कियो परस्पर अनिर्वचनीय सुख भयो और फगुआमें मुरली छिडायलई मन मानतो फगुवा दियो तबदीनी

॥ श्रीजीको श्रीगिरिराज पधारवो तथा श्रीगुसांईजीसूं मिलवो ॥

यह समाचार सब श्रीगुसांईजी सुनकें आप घर पधारे तब श्रीगुसांईजीकूं पधारे जानकें श्रीजी श्रीगिरिराजसूं आज्ञा किये जो श्रीगुसांईजी मोकूं श्रीगिरिराजपे नही देखेंगे तो बडो खेद

करेंगे तातें मोकूं आजको आज श्रीगिरिराज ले चलो । तब श्रीगोपीवल्लभ आरोगकें श्रीजी रथमें सवार भये और श्रीगिरिधरजीसूं यह आज्ञा किये तुम रथ बेग हांको आज राजभोग और सेनभोग दोनो इकट्ठे श्रीगिरिराजमें आरोगूंगो ऐसें कही चार घडी दिन पाछिलो रहे तब श्रीगिरिराज पधारे दंडोती शिलापे रथमेंसूं उतरिकें और श्रीगिरिधरजीके कंधापे चढिके निज मंदिरमें पधारे तहां कूदिके चरण चोकीपे जाय विराजे । यह लीला अत्यंत अलौकिक हे तर्कागोचर हे तादिन नृसिंह चतुर्दशी हती सो उत्सव सब श्रीगिरिराजपे पधारिके कीनो राजभोग और सेन भोग एकट्ठे कीने तासों नृसिंह चतुर्दशीके दिनां सेनभोग और राजभोग, भेलोही आवेहे । और दूसरे दिना पूर्णमासी ता दिना श्रीगुसांईजी गुजरात तें पाछे श्रीगिरिराज पधारे जब यह सब वृत्तान्त सुने तब आज्ञा किये श्रीगोवर्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने श्रीगिरिराज ऊपर पाट बेठाये तासूं हमकूं कृपा करि श्रीगिरिराज ऊपर दर्शन देत हें यही हमारी अभिलाषा हे श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके कपोल स्पर्श करि पूछे बाबा श्रीमथुरा कोन कारणसों पधारे तब श्रीनाथजी आज्ञा किये सब बहू बेटीनकों देखवे गयो हतो ऐसें परस्पर आज्ञा करि मिलकें बडे आनन्दित भये ॥

॥ श्रीजीके कवायको टूक डारमें उरझि रह्यो ॥

एक दिना श्रीनाथजी गोविन्दस्वामीके संग श्याम ढाक ऊपर खेलत हते ता समय मंदिरमें शंख नाद भये तब श्रीजी उतावले पधारेसो कवायको टूक डारमें उरझि रह्यो तब श्रीगुसांईजी भोग समय दर्शन करिके खेद करे जो न जानिये यह कहा कारण

हे ताही समय गोविंदस्वामी वहांसों आयके वह कवायको टूक श्रीगुसांईजीकों दीनों और कही तुमारो लडिका बहोत चपल हे तब वह टूक लेकें श्रीगुसांईजी वा कवायमें लगाय दिये और रामदास कों आज्ञा करी जो शंखनाद भये पीछे थोडीसी बेर रहिके जब श्रीजी मंदिरमें पधारें तब टेरा खोल्यो करो ॥

॥ श्रीजी छोटे बागाकूं छोटो स्वरूप धरि अंगीकार किये ॥

एक समय श्रीगुसांईजी श्याम बागा करवाये सो वा मेलको वस्त्र थोडो भयो तासूं बागा कछूक छोटो भयो जब श्रीगुसांईजी श्रीजीकूं बागा पहिराये तब वाही बागाके अनुसार छोटो स्वरूप धरिके अंगीकार किये तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये ता समय श्रीगिरिधरजीके और श्रीगोकुलनाथजीके आगे एक श्लोक ता समयकी लीलाको प्रसन्न होयके आज्ञा करे सो श्लोकः—

श्यामकञ्चुकनिदर्शनेन मन्मानसेऽप्यणुतरेऽपि महान् सः ॥
गोकुलैकजनजीवनमूर्तिर्मास्यति स्वकृपयैव दयालुः ॥ १ ॥

॥ श्रीजी रूपमंजरीके संग चोपड खेले ॥

एक दिनां श्रीनाथजी ग्वालियाकी बेटी रूपमंजरी हती ताके संग चोपड खेलवे पधारे चार प्रहर रात्रि चोपड खेले और बीन सुने वह बीन आछी बजावत हती चार प्रहर रात्रि वहां ही बिराजे नंददासजीको वाकों संग हतो गुणगान आछो करत हती ताके लिये नंददासजीने रूपमंजरी ग्रंथ कियो हे तामें चोपाई धरी हे----

"रूपमंजरी त्रियाको हीयो । सो गिरिधर आपनो आलय कीयो" पाछें प्रातःकाल निजमंदिरमें पधारे तब मंगलाके समय श्रीजीके नेत्र कमल आरक्त देखे तब श्रीगुसांईजीनें पूछयो बाबा आज

रात्रि कहां जागरण भयो तब श्रीनाथजी सब वृत्तान्त कहे रूप मंजरीसों चोपड़ खेलनेकों गयो हतो तब श्रीगुसांईजी मनें किये लौकिक शरीरके लिये इतनी दूर परीश्रम न करिये यहां व्रजभक्तनके संग सुखेन चोपड खेलो ताही दिनासूं मंदिरमें चोपड मँड़ी ॥

॥ अकबर पात्शाहकी वेगम बीबी ताज ॥

एक अलीखाँपठानकी बेटी बीबी ताज जाकी धमार हे। — "निरखन आवत ताजकों प्रभु गावत होरी गीत" सोअकबर पात्शाहकी बेगम हती और श्रीगुसांईजीकी सेवक हती तासों श्रीनाथजी आगरेमें सतरंज खेलते सो श्रीगुसांईजी जान पाये तब मनें किये तो दिना तें सतरंजहू श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें मंदिरमें बिछन लगी । और एक दिनां देशाधिपतिनें श्रीगिरिराजकी तरहटीमें डेरा किये तब वाकी बेगम ताज श्रीजीके दर्शनकूं आई वाकूं श्रीनाथजी सक्षात दर्शन दिये और सेंन दीने तब वाकों अत्यंत आर्ति बढी सो श्रीनाथजीसों मिलबेकों दोड़ी और ऐसें बोली में श्रीनाथजीसूं मिलूंगी तब वृंदावनदास जवेरी हते तिनकी बेटी ताजके संग सतरंज खेलती सो राय वृंदावनदासकी बेटीने थांम राखी और बांह पकडिकें नीचे ले आई तब तरहटीमें आयकें वाको लौकिक देह छूटि गयो और अलौकिक देहसों श्रीजीकी लीलामें प्राप्त भई तब सबनकूं भय भयो न जानिये पात्शाह अब कहा कहेंगे परंतु श्रीनाथजीके प्रतापसूं वाने कछू न कह्यो पर सुनिकें यह कही जहांकी वस्तु तहां पोहोंची ऐसें कहिके दिल्लीकूं चल्यो गयो । ऐसेंही कृष्णदास अधिकारीनें वेश्याकूं मिलाई । और चरित्र तो शेष महानाग गणना करें तोहू पार न आवे ॥

॥ श्रीनाथजी अटारी ढवायवेकी आज्ञा किये ॥

और थिलछूके सामने एक बारी श्रीआचार्यजी महाप्रभुने रखवाई हती तामें तें श्रीआचार्यजी महाप्रभु ग्वाल मंडलीकों देखते। सो एक दिना श्रीगोकुलनाथजी शृंगार करत हते तब वारीमें ते धूप आई ग्रीष्म ऋतु हतो सो धूप असेली लगी तब वाके अडे एक अटारी करवाई सो बनवायकें श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुलकुं पधारे। तब श्रीजीने सोहना भंगीसों आज्ञा करी तूं श्रीगोकुलनाथजीसों कहियो यह अटारी ढवाय डारो मोकों बिलछू नहीं दीखे हे। यह सुनकें वह भाज्यो सो अडींगके यहां आयके श्रीगोकुलनाथजीसों कही महाराज छोटे म्होंडे वडी बात हे श्रीनाथजी आज्ञा किये हें जो यह अटारी ढवाय डारो मोकों बिलछू नहीं दीसे हे। तब श्रीगोकुलनाथजी पूछे श्रीनाथजी मेरो नाम जानत हें गदगद कंठ होयके दो चार वेर वाके म्होंडेसों कहवाई और कही श्रीजी केसें आज्ञा किये वहांहींसूं आप पाछें श्रीजीद्वार पधारे श्रीनाथजीकों सामग्री अरोगवाये क्षमा करवाये और अटारी ढवाय डारी तब श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये॥

॥ कल्याण जोतिषीकी कथा तथा श्रीगिरिधरजीको श्रीमथुरेशजीके स्वरूपमें लीन व्हेवो ॥

एक श्रीगिरिधरजीको सेवक कल्याण जोतिषी वैष्णव हतो कीर्तन श्रीजीके आगे गावतो सो एक दिन श्रीगिरिधरजी श्रीनाथजीकूं बीडी आरोगावते और कल्याण जोतिषी यह कीर्तन करतो " मेरेतो कान्ह हें री प्राणसखी आनध्यान नांहिन मेरे।दुःखके हरण सुखके करण." इत्यादि यह कीर्तन गावत चित्तसें यह विचार करो जो श्रीगुसांईजीके अष्टछापके वैष्णव कीर्त्तन करते तब श्रीजी

हंसते अब हंसें बोलें नहीं हें इतनो मनमें संदेह कीनो यह मनकी बात श्रीजी अंतरजामी जानकें बीडी आरोगत में हंसि हंसिके श्री गिरिधरजीसूं आज्ञा किये यह वैष्णव कीर्तन आछे करतहे यह मुक्तिस्थानको दर्शन कल्याण जोतिषीकूं भयो । तब श्रीगिरिधर जी आज्ञा किये यह घटा किन पे बरसी पाछें कारण जानकें श्रीगोकुलनाथजोसों आज्ञा किये । श्रीनाथजी सदा एक रस बिराजत हें आदि मध्य ओर अवसानमें । श्रीगुसांईजीके आगें शुद्ध पुष्टि-सृष्टि हती तातें सबन तें संभाषण करते बोलते और खेलते हते अब मिश्रित पुष्टिसृष्टि हे तातें सबनकी सेवा तो अंगकिार करें हें परंतु संभाषण शुद्ध पुष्टिसृष्टिसों करत हें ॥ ऐसें आज्ञा करत श्री गिरिधरजी तब श्रीमथुरानाथजीके मुखारविंदमें लीन व्हे गये । सो केसें । जब मालाको प्रसंग भयो हतो तब श्रीगोकुलनाथजी तो धर्मकी रक्षा कीने और श्रीगिरिधरजी श्रीमथुरेशजीको शृंगार करत हते और श्रीदामोदरजी श्रीजीके पास रहते जब श्रीमथुरेशजी उबासी लीनें ताहीमें श्रीगिरिधरजी लीन भये । जब दोऊ भाई यह देख शोच करत भये तब श्रीनाथजीकी यह आज्ञा भई जो शोच मति करो या उपर्णासों लौकिक कार्य करवाओ ॥

॥ श्रीदामोदरजी गादी बिराजे ॥

तब श्रीदामोदरजी गादी तकिया बिराजे और ता समय तीन लक्ष रुपैया श्रीजीकी गोलकमें भेटके हते सो भंडारीनें श्रीदामोदरजीसों छिपाये पाछें श्रीनाथजीने आज्ञा करी जो जान अजान वृक्षके नीचे तीन लक्ष मुद्रा धरी हें भंडारीनें चुरायके राखीं हें ताकूं तुम मँगाय लेउ । तब श्रीदामोदरजी मँगाय लिये ॥ ऐसें श्रीनाथजी दैवी द्रव्य अंगीकार किये ॥

॥ कटार बांधवेको शृंगार ॥

एक समय श्रीमुरलीधरजीको मनोरथ कटार बांधिवेको हतो सो रंकेत श्रीगुसांईजीसों आज्ञा किये जो विजया दशमीके दिनामें धरूंगो तब वैसोई शृंगार भयो ॥

॥ भैया बंधुनके झगडेमें श्रीविट्ठलरायजीको आगरे पधारनो श्रीजीसूं बिनती करवो श्रीजीकी आज्ञा तथा पातशाह-कोभी श्रीजीकी आज्ञा प्रमाण झगडो चुकायवो ॥

ओर एक दिना श्रीदामोदरजीके पुत्र श्रीविट्ठलरायजी आ-गरे पधारे भैया बंधुनको झगडो हतो सो नित्य उपद्रव देखिकें चित्तकों बडो खेद भयो तब श्रीजीसों बिनती कीनी उनकी ओर तो पातशाह बोले हे । मेरी ओर कौन । तब श्रीजी आप दर्शन दीने लाल छरी हाथमें हे और श्रीविट्ठलरायजीके पास आप बिराजे मस्तकपे श्रीहस्त धरे ओर समाधान कर्यो ओर यह आज्ञा ÷ किये जब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराजमें पधारे तब सातों बालकनकूं मेरे आगें लायकें ठाडे किये और मोसों कही जापे आप प्रसन्न होय तापे सेवा करवावें तब मेंने श्रीगिरिधरजीको हस्त ग्रहण कीनों ओर जो सब बालक करेंगे वोह उठायबे लायक सामर्थ्य श्रीगिरिधर-जीमें हे मोकूं आपने घर श्रीमथुरामें पधराये सर्वस्व समर्पण किये ओर दंडोती शिलापेतें कंधापे चढायके निजमंदिर पर्यंत पधारे तथा अडेलतें व्रजकूं पधारत में श्रीनवनीतप्रियजीको संपुट श्रीगुसांईजी छहों बालक ऊपर धरे परंतु काहूपे रह्यो नहीं तब श्रीगिरिधरजीनें उठायो तातें मुख्य सेवा तुमहीकूं हे ओर वरस दिनके तीनसो साठ दिन हें तामें साठ दिन उत्सवके मुख्य शृंगार हें सो तुम

÷ यह आज्ञा क. पु. में—कछु और अक्षरनसें हे, अर्थ एकही हे।

करो ओर तीनसो दिनके शृंगार सब श्रीगुसांईजीके बालक करें यह आज्ञा करके श्रीनाथजी श्रीगिरिराजपे पधारे ओर पीछे दूसरे दिन पातशाहनेंहू जैसें श्रीनाथजी आज्ञा करी हते ताही प्रकार लिखि दीनो ओर एक लिखतम श्रीविठ्ठलरायजीनेंहू लिख दीनी तब झगडो सब मिट गयो श्रीविठ्ठलरायजी आप घर पधारे ॥

॥ श्रीविठ्ठलरायजी श्रीजीको टिपारेको शृंगार किये ॥

ओर श्रीविठ्ठलरायजी टिपारेको शृंगार श्रीजीको बहोत आछो करते सो श्रीनाथजीकों बहोत प्रिय लगतो महिनामें दो चार बेर आज्ञा करिकें टिपारेको शृंगार करवाते दर्पनमें स्वरूप देखिकें श्रीनाथजी बहोत प्रसन्न होते । पाछे एक बेर श्रीविठ्ठलरायजी बडे शहरकों पधारे तब श्रीगुसांईजीके कोई बालकनें टिपारेको शृंगार करबेको मनोरथ कीनो तब श्रीनाथजीनें नाहीं करी जब श्रीविठ्ठलरायजी पधारेंगे तब टिपारेको शृंगार करेंगे पाछे श्रीविठ्ठ-लरायजी पधारे तब टिपारेको शृंगार किये ऐसे श्रीनाथजी स्वकीय के पक्षपाती हैं ॥

॥ श्रीजीकूं श्रीगिरिधरजी बसन्त खिलायें ओर डोल झुलायें ॥

श्रीविठ्ठलरायजीके लालजी श्रीगिरिधरजी सो एक बेर लाहोर पधारे जब डोल उत्सवके सोरह दिन बाकी रहे तब श्रीजीने आज्ञा करी " जब तुम मोकों बसंत खिलाओगे तब खेलूंगो ओर एक वैष्णव लक्ष मुद्रा भेट करेगो सो लेकें वेग आइयो पाछे दूसरे दिन वितनी भेट आई ताकूं लेकें बारहा दिनमें श्रीगिरिराज पधारे तब श्रीजीकूं बसंत खिलाये ता पाछे डोल झुलाये तब श्रीजी बहोत प्रसन्न भये । ऐसें श्रीनाथजी श्रीगिरिधरजीकी कानतें टकेतनको

पक्षपात करे ओर श्रीगुसांईजी की कानतें सब वल्लभकुलकी सेवाकी अपेक्षा राखत हें परंतु मुख्य सेवा टीकेतनपे करवावें हें।

॥ श्रीगोकुलनाथजी श्रीजीकूं फाग तथा वसंत खिलाये ॥

ऐसेंही श्रीगोकुलनाथजी काश्मीर पधारे जब माला प्रसंगकूं दिग्विजय करि पाछे पधारे तितने फाल्गुन व्यतीत होय गयो तातें श्रीगोकुलनाथजी तो फाग न खिलाये तब श्रीजीनें एक दूधघरिया ग्वाल हतो तासूं आज्ञा करेः, तूं श्रीवल्लभसूं कहियो मोकूं वसंत खिलावें तब वानें श्रीगोकुलनाथजीकूं चैत्र वदि ११ दिन कही ता दिन वसंत खिलाये ओर गुलाबके फूलनकी मंडली भई आसपास केरा माधुरीकी लतानकी कुंज भई मुकटको शृंगार भयो यह धमार गाई 'सदा बसंत रहे वृन्दावन लता लता द्रुम डोलें' ऐसे श्रीजी वल्लभकुलकी अपेक्षा राखत हें ॥

ओर एक दिना श्रीलक्ष्मणजी महाराज श्रीरघुनाथजीके वंशमें हते वे गानकलामें बडे कुशल हते सांझकूं शृंगार बड़े भये पीछे यह पद गावत हते "दुहिवो दुहायवो भूलगयो" सो ओर एक दिन फाल्गुनमें धमार गाये सो जब हाथियापोर आगे संपूरन भई तब घडी ४ अनोसर पाछे तांई गायो करे तब श्रीगोकुलनाथजीने पूछयोके या बेर कीर्तन क्यों तब काहूने कहीके लक्ष्मणजी गावें हें फ़ेर नाहीं रखाये तब रात्रिकूं श्रीनाथजीने आज्ञा दीनी स्वप्नमें श्रीगोकुलनाथजीकूं कहे के ये जेसें गावें तैसें इनकूं गायबेदो इनकी यही सेवा हे ॥

॥ श्रीगुसांईजीको मेवाडके रस्ता होयके द्वारका पधारनो ओर सीहाड नामक स्थलमें श्रीजीके पधारवेकी भविष्य वाणी आज्ञा करी ओर राणाजी तथा राणीजी आदिकों सेवक करने ॥

और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीद्वारका पधारे सो मेवाड़के

रस्ता होयके पधारे तहां एक सिंहाड नामक स्थल बहोत रमणीय देखकें श्रीगुसांईजी बाबा हरिवंशजीसों आज्ञा किये "या स्थलमें कोई काल पीछें श्रीनाथजी बिराजेंगे ओर हमारे आगें तो श्रीगिरिराजकों छोडिकें न पधारेंगे" तब श्रीगुसांईजीने दोय दिन वहां डेरा राखे पाछें राणा श्रीउदयसिंहजी दर्शनकों आये सो-मोहर और एक गाम भेट किये तब श्रीगुसांईजी प्रसादी वस्त्र ओर समाधान दिये ताकों ग्रहणकर दंडोत करी और अपने घर गये। ता पाछे उनकी राणी दर्शनकूं आई सो विनमें मीरांबाई राणीजीकी बेटी मुख्य सोऊ दर्शनकूं आई ओर राणीजीके कुंवरकी राणी अजब कुंवर हती तानें श्रीगुसांईजीके पाससें ब्रह्मसंबंध कीनों सो वाकों श्रीगुसांईजीके दर्शन स्वरूपासक्ति भई। जब श्रीगुसांईजी द्वारकाजी पधारवेकी इच्छा करें तब वाकूं मूर्च्छा आय जाय तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये जो 'हमारो यहां रहेनो न बनेगो श्रीजी तोकों नित्य दर्शन देंगे' ऐसें आज्ञा करकें श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे

॥ श्रीजीको नित्य मेवाड पधारवो ओर अजब कुँवरीसों चौपड खेलबो तथा मेवाड पधारवेको नियम करवो ॥

ता पाछे श्रीजी श्रीगिरिराजसों मेवाड पधारकें अजब कुँवरिकों नित्य दर्शन दें ओर तासों चोपड खेलकें पाछे श्रीगिरिराज पधारें। एक दिन अजबकुंवरिनें श्रीजीसूं बिनती करी "आपकों आवते जाते परिश्रम होत हे तातें आप मेवाडमें बिराजें तो मोकों नित्य दर्शन होय" तब श्रीजी आज्ञा किये जहां तांई श्रीगुसांईजी भूतलपे बिराजे हें तहां तांई तो में श्रीगिरिराजकूं छोडिकें न आऊंगो पाछें मेवाडमें अवश्य आऊंगो * ओर बहोत वर्ष पर्यंत बिराजूंगो

* जहां तेरे महल हें तहां मंदिर बनेगो. लिखित पुस्तकमें ये पाठ अधिक हे।

जब फिर श्रीगुसांईजी अपने कुलमेंसों प्रगट होय व्रजमें पधरा- वेंगे तब व्रजमें पधारूंगो ओर फिर बहोत वर्ष पर्यंत श्रीगिरिराजपे क्रीडा करूंगो यह श्रीनाथजी आज्ञा करकें श्रीगिरिराज पधारे ॥

॥ श्रीनाथजीने मेवाड पधारवेकी सुधि कर एक * असुरकों श्रीगिरिराजतें उठाय देवेकी प्रेरणा कीनी ॥

कोईक कालांतर करिकें श्रीजीकूं मेवाड पधारबेकी सुध आई तब आप विचारे " जो मेवाडमें तो अवश्य पधारनो और श्रीआचार्यजी तो श्रीगिरिराजपे पाट बेठाये हें तातें श्रीवल्लभकुल बहुधा न उठावेंगे बलात्कारसों उठानो कोईक * असुरकों प्रेरणा करनी जो मोकों उठाय देय " तब एक समय श्रीवल्लभजी महाराजकों स्वप्न भयो जो श्रीजी श्रीगिरिराजपेतें उठिकें ओर कोई एक देशकों पधारे। जब सेन आरती भये पीछे सब सेवक घरकूं जाय तब एक म्लेच्छ आवे सो डाढीसों जगमोहन तथा कमलचौक झाडे ऐसें बहोत वर्ष पर्यंत वाने डाढीसों मंदिर झाड्यो परंतु काहूकूं खबर न पडी योग बलतें आकाश मारग होयकें आवे ओर वाही मारग होयके जाय सो एक दिन श्रीगोवर्धननाथजी वापे प्रसन्न भये अपने बंटामेंतें लकें दो प्रसादी बीडा वाकों दिये ओर आज्ञा किये " बावन वर्ष पर्यंत मेंनें तोकूं राज्य दीनो तूं मोकों श्रीगिरिराजतें उठाय दे ओर आज पछिं मेरे मंदिर तुं मति आइयो मेरो मंदिर तो श्रीगिरिराजमें गुप्त होय जायगो तब तूं तहां महजित बनायकें दंडवत कऱ्यो करियो आगें भीतर मत आइयो " यह आज्ञा सुनकें यवन आगरेकों गयो सो श्रीजीकी आज्ञातें वाने प्रबल राज्य कियो ॥

---

* असुर म्लेच्छ ओर यवन अर्थात् बादशाह ओरंगजेब.

॥ * देशाधिपतिनें एक हलकारा श्रीजीद्वार पठायो ॥

तब वा देशाधिपतिनें एक दिन एक हलकारो श्रीजीद्वार पठायो सो वा हलकारानें आयकें श्रीविठ्ठलरायजीके पुत्र श्रीगोविंदजी हते तिनसों कही ओर टीकेत तो श्रीगिरिधारीजीके पुत्र श्रीदाऊजी हते सो वर्ष पंद्रहके बालक हते श्रीगिरिधारीजीके छोटे भाई श्रीगोविंदजी हते सो श्रीजीके यहांको अधिकार करते ताते हलकारानें उनसों कही 'देशाधिपतिनें* कही है जो श्रीगोकुलके फकीरोंसे कहो जो हमकों कछू करामात दिखाओ नहीं तो हमारे देशमेंतें उठजाओ" तब श्रीगोविंदजी श्रीजीसों पूछे "जो देशाधिपतिनें करामात मांगी है या मारगमें तो आपकी कृपाही करामात है जो आज्ञा आप करो तो हम वाकों करामात दिखावें" तब श्रीजीने कछू उत्तर नहीं दीनो तब श्रीगोविंदजीकों बडी चिंता भई ओर विचार किये जो श्रीजीकी आज्ञा बिनातो कछू चमत्कार दिखायो न जाय ओर नहीं दिखावेंतो यहां स्थिति नहीं तासूं अब कहा उपाय करनो ॥

॥ श्रीगिरिधारीजीके लीलामें पधारवे आदिको संक्षेप वृत्तान्त ॥

श्रीगोविंदजीके बड़े भाई श्रीगिरिधारीजी लीलामें पधारे हते उनके ऊपर श्रीजीकी बडी कृपा हती सो श्रीगिरिधारीजी देशाधिपतके आज्ञापत्र परवाना ऊपर सही न करी और आज्ञा किये "जहां ताईं हम बिराजे हें तहां ताई तुमसे गादीसें कछू न होयगो" ऐसें कहिकें आप श्रीजीद्वार पधारे इन श्रीगिरिधारीजीके ओर गोवर्धनके ब्राह्मनसों तथा गोरवानसों असमंजस पड्यो तब गोविन्दकुंडपे टांकीनसूं दानघाटीको मारग छोड दियो ओर श्रीगोविन्दकुंडपे टांकीनसूं

---

* अर्थात् बादशाह औरंगजेब.

१ प्राचीन परवानाके ऊपर सही करिवेकूं दिल्ली पधारे हते तब बादशाहने.क.पु.पाठः

गोविंदघाटी बनाई तातें वह प्रायश्चित्त दूर करवेके लियें आपकूं बरछी लगी हती तातें लीलामें पधारे सो लीलामें सदा सर्वदा श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा करत हें ॥

॥ लीलामें पधारे श्रीगिरिधारीजी श्रीगोविन्दजीकों श्रीजीकी आज्ञानुसार मेवाड पधारवेको सविस्तर वृत्तान्त आज्ञा किये ॥

तिन श्रीगिरिधारीजीसों श्रीनाथजी आज्ञा किये जो श्रीगोविंदजी चिंता करत हें तुमकूं सुधि करत हें तिनकूं तुम दर्शन देकें हमारे मेवाड पधारवेको वृत्तांत उनसों कहो तब श्रीगिरिधारीजी अर्धरात्रिके समय श्रीगोविंदजीके पास आयकें दर्शन दीनें तब श्रीगोविंदजीनें एक पट्टा बिछाय दीनो तापर आप विराजे सो पहिलें तो एक श्लोक नवरत्नको कहे ॥

चिंता कापि न कार्या निवेदितात्मभिः कदापीति ॥
भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकीं च गतिम् ॥ १ ॥

पाछे यह आज्ञा किये जो श्रीजीकी ऐसी इच्छा हे यहां गुप्त क्रीडा करेंगे ओर श्रीआचार्यजीनें श्रीजीकी जन्मपत्रिका बनाई ओर श्रीगोपाल यह नाम धर्‍यो तातें गायनकी रक्षा करनकों पधारेंगे यह म्लेच्छ[2] तो मिष अर्थात् निमित्त मात्र हे आगेके वैष्णवनको मनोरथ नहीं भयो हे जहां तहां तिनको मनोरथ सिद्ध करिवे कों श्रीजी पधारेंगे तातें रथसिद्धि करो काल सर्वसिद्धा त्रयोदशी हे तातें एक घड़ी दिन पाछलो रहे ता समय श्रीजी विजय करेंगे तातें ओर चमत्कार कछु दिखावनो नहीं जेसें इच्छा होय तेसें करनो जहां जहां आप इच्छा करि पधारें ताही अनुसार

१ ओर गोरवाननें तो बरछी दीनी और ब्राह्मणनें सोमल धर्‍यो " ख० पु० पाठः
२ म्लेच्छ अर्थात् बादशाह औरंगजेब.

चले चलो और बूढे बाबू महादेव मसाल लेकें आपके रथके आगें चलेंगे सो रात्रिकूं तो आगरे तांई फेर आगें दिवसमें पधारेंगे ढहरे डेरा मारगमें चहियें वह आवें और जो इच्छा होयगी सो गंगाबाईसों आज्ञा करेंगे सो तुम उन्हींकों पूछलियो करियो और व्रजवासी स्पर्श करेंगे और गारी देंगे तब रथ चलेगो ऐसेंही जब व्रजवासी गारी देंगे तब श्रीजी उठेंगे ऐसें आज्ञा करिके श्रीगिरिधारीजी श्रीजी पास शय्या मंदिरमें पधारे ॥

॥ श्रीगिरिराजतें श्रीनाथजी मेवाड पधारवेकों पहिले आगरे पधारे ॥

सवारे राज भोग आरती बेग भई रथको अधिवासन करकें और शृंगार करकें रथ सिद्धि कियो और खरासके बेल रथमें जोतकें दंडोती शिलापे लायकें ठाडो कियो ता पाछें उस्ताकों बुलायके सब उपचार करवाये और श्रीगोविंदजी तथा श्रीबालकृष्णजी और श्रीवल्लभजी तीनों भाईन मिलकें साष्टांग दंडोत कर विनती कीनी और सब श्रीगोस्वामी और सब सेवक मिलकें रथ पधराये तोहू आप उठे नहीं तब व्रजवासीनकूं बुलाये जब व्रजवासी आयकें और गारी देकें कह्यो उठेगोके नांहीं एसें तेसें कहा यहां हीं सबनके मूंड कटावैगो यह बात सुनकें श्रीजी बहुत हंसे और यह सुनके कमलतें प्रसन्न भये तुरंत उठे और रथमें आयकें बिराजे। मिती आसोज सुदी १५ शुक्रवार संवत् १७२६ के पाछिली प्रहर रात्रिकों श्रीवल्लभजी महाराज पना सिद्धि कराये और आरोगाये पाछें रथ हांकें सो चले नहीं तब सब श्रीगोस्वामी विनती किये तब श्रीजी आज्ञा किये " जो गंगाबाईकों गाडीमें बेठायकें संग ले चलो रथके पाछें गाडी चली आवे " तब गंगाबाईकूं तत्काल लाये गाडी श्रीजीके

रथके पाछें पाछें चले जहां रथ अटके तहां सब भेले होयकें गंगाबाईकों पूछे तब सब वृत्तान्त गंगाबाई कहें। ऐसें एक रात्रिमें आगरे पधारे वृद्धे बाबू महादेव आगें प्रकाश करत पधराये आगरेमें आपकी हवेली हती तहां पधारे ॥

॥ दो जलघरिया सेवा ओर सभाको अलौकिक पराक्रम ॥

ओर दो जलघरिया श्रीजीके सेवक जल भरत सो जा बिरियां देशाधिपतिको उस्ता मंदिर ढायवेकों आयो ता समय वाके संग २०० दोसो म्लेच्छ हते सो विन जलघरियानने सिंहपोर भीतर न घुसिवे दिये लडे सो सगरे म्लेच्छनकों मार और उस्ताकों छोड़ दियो जो जायकें खबर करेगो ओरहू म्लेच्छ लावेगो तो मारेंगे। ऐसो उनकूं आवेश आयो हतो जो हाथमें तरवार लिये सिंह पोर पे छः महिना तक ढाडे रहे परंतु उनकूं क्षुधा ओर प्यास बाधा न करे बिनने डेढ महिना तांई मंदिर ढायवे न दियो। फिर दूसरो उस्ता १७ सतेर बिरियां ५०० पांचसो ७०० सातसो म्लेच्छ लेकें आयो परंतु उन दोऊ भाईनने सबनकूं मार डारे तब देशाधिपतिने वजीरकों हुकुम दीनो सो बहुत म्लेच्छ संग लेकें वजीर चल्यो। तब श्रीजी बिचारे जो इन दोऊ भाईनमें ऐसो आवेश भयो हे जो सब म्लेच्छनकूं मारेंगे तातें इनकूं दर्शन देनो तब आगरेतें पधारकें सिंहपोर पे उन दोउनकों दर्शन दीने ओर आज्ञा किये "जो तुममें तो श्रीगिरिधारीजीनें ऐसो आवेश धर्‍यो हे जो सब म्लेच्छनकों मारो परंतु मेरी इच्छा नहीं हे अभी मैंनें जहां तहां भक्तनकूं वचन दीने सो पहिले तिन तिन स्थलनमें पधारूंगो तिन भक्तनके मनोरथसिद्धि कार्कें कोईक कालांतर करकें व्रजमें पधारूंगो तब सर्व

कार्य होयगो तुम मेरी लीलामें आओ युद्ध मत करो। ऐसें कहिकें श्रीनाथजी आगरे पधारे " पाछे श्रीजीकी इच्छातें उनकी दिव्य दृष्टि भई तब दोउननें सब श्रीगिरिराज रत्नमय देख्यो और श्रीगिरिराजमें अनेक मंदिर रत्नमय देखे तिनमें येहू मंदिररत्नमय देख्यो और श्रीगिरिराजमें लीन देख्यो और बाहिरको दरवाजो जहां नगारखाना बाजे हे तहां एक महेजित देखी तहां म्लेच्छ देख्यो सो अपनी डाढीसूं मंदिर झाड्यो करे जब उन दोऊ भाईनकूं श्रीजीकी इच्छाको संपूर्ण ज्ञान भयो तब शस्त्र डार दिये और लौकिक शरीरकों छोड़कें श्रीजीकी लीलानें प्राप्त भये। इन दोऊ भाईनके नाम एकको तो सेवा और दूसरेको सभा करकें हते ॥

॥ अठारमी वेर पातशाहकी फोज श्रीगिरिराज आई मेहजित बनाई ॥

ता पाछे अठारमी बेर सुतार और उस्ता पातशाहको सो नबाबकी फोज संग लेकें श्रीगिरिराजमें आये और देखेतो श्रीजीको मंदिर तो कहूं दीसे नहीं तब वहां महेजीत बनवायकें चले गये ॥

॥ श्रीजी आगरे पधारे ताको सविस्तर वृत्तांत ॥

श्रीनाथजी जब श्रीगिरिराजसूं आगरेमें पधारे तब पाछिली रात्रि घडी छः रही हती दरवाजे सब खुले पाये चोकीदार सब निद्रावश हते काहूनें कहूं कछु रोक करी नहीं सूधेही श्रीनाथजी आपकी हवेलीमें पधारे आप रथमेंसों उतर हवेलीमें एक स्थल हतो तहां विराजे आज्ञा किये जो यहां अन्नकूट उत्सव करकें आगे चलेंगे जा समय श्रीजी आगरेमें पधारे ता समय देशाधिपति कांकरनके बिछोनामें अपनी महेजितमें सोवत हतो तहां श्रीनाथजी ने जायके वाके एक लात मारी पीठमें और स्वप्नमें आज्ञा करी जो

" आजमें आगेरमें आयो हूं तूं हमारो कहा कर सके है मैंही मेरी इच्छासों उठ्यो हूं " तब म्लैच्छ जाग पड्यो पर श्रीजीकूं देखे नहीं पीठमें लात मारी तातें चरण कमलको चिन्ह उघड आयो सो देख्यो जहां तांई जीयो तहां तांई चिन्ह रह्यो आयो परंतु काहूसों कह्यो नहीं मनको मनहींमें राखतो श्रीजीको आराधन सदा गुप्त करतो दो रोटी जोकी ओर चाराकी भाजी खातो पाथरन ऊपर सोवतो ऐसी तपस्या श्रीजीके दर्शनके लिये करतो ॥

॥ श्रीनवनीतप्रियाजीकों आगरे पधराये ताको सविस्तर वृत्तांत ॥

ओर श्रीगोविंदजी दोऊ भाई सहित श्रीजीके संग पधारे तब श्रीनवनीतप्रियाजी श्रीगोकुलमें बिराजते हतेसो उनकों पधारवनकों मनुष्य भेजे ओर आज्ञा किये जो " श्रीदाऊजी महाराजकों तथा बहू बेटीनकों पधरायकें आगरे लेआओ ओर मुखिया भीतरिया विट्ठल दुवेजीसों कहि आओ तुम श्रीनवनीतप्रियजीकों पधरायकें आगरे आओ ,, पाछें विट्ठल दुवेजी स्नान करकें शंखनाद करिकें श्रीनवनीतप्रियाजीकों जगाये ता समय रात्रि प्रहर गई हती सो श्रीनवनीतप्रियाजीआप निद्रामें हते ता समय दुवेजीनें श्रीनवनीत प्रियाजीसों बहोत विज्ञप्ति करी परन्तु जागे नहीं तब हाथसों पकडके पधरायवे लगे तोऊ श्रीनवनीतप्रियाजी न उठे तब दुवेजीनें जानी जो आपकी इच्छा उठवेकी नहीं हे अबतो प्रातःकालकी बात सो ऐसें कहिकें चोकमें रात्रिकूं सोय रहे जब घडी चार रात्रि रही ता समय फेर शुद्धस्नान कर अगरसमें कछु सामग्री सिद्ध करी ता पाछें श्रीनवनीतप्रियाजीकूं जगाये तब जागे कछू मंगल भोग धरकें फेर शृंगार भोग धर स्यानासें पधराये तब दो चार भीतरिया ओर

जलघरिया संग हते तिननें तथा दुबेजीने म्यानो उठायो आगरेकूं पधराये पेंडेमें प्रहर दिन चढे गौघाट पहुंचे। फेर श्रीगुसांईजीके तृतीय पुत्र बालकृष्णजी तिनके नाती श्रीव्रजरायजी उनकों श्रीनवनीतप्रियाजीको आगें वरदान भयो हतो " जो एक दिन राजभोग तेरे हाथसों आरोगूंगो " ऐसें आज्ञा भई हती ताको प्रकार लिखतहें

श्रीगुसांईजीके आगें यह रीत हती जब श्रीनवनीतप्रियाजी पोढें तब सब श्रीगोस्वामी तथा भीतरिया बाहर आवें ता पाछें सातों बालकनके घरकी बहू बेटी चरण स्पर्श करें सो श्रीबालकृष्णजीके पुत्र श्रीपीताम्बरजी तिनकी बहूजी तिननें सबतें पीछें चरण स्पर्श किये तब श्रीनवनीतप्रियजी उनसों आज्ञा किये " में घर चलूंगो " तब चोलीमें टुपकायकें श्रीनवनीतप्रियजीकों अपने घर पधरायकें लेगई सो चार प्रहर रात्रि उनके घर बिराजे जब शेष रात्रि रही तब बहूजीसों श्रीनवनीतप्रियजी आज्ञा किये जो अब मोकों श्रीगुसांईजीके घरमें पधराय आओ जो श्रीगिरिधारीजी मोकों मंदिरमें न देखेंगे तो खेद करेंगे। यहां श्रीगिरिधारीजी तथा श्रीगोकुलनाथजी श्रीनवनीतप्रियजीकूं जगायवेकों पधारे तब शय्यापे श्रीनवनीतप्रियजीकों न देखे तब दोऊ भाई आपसमें बतराये जो यह कहा तब श्रीगिरिधारीजी आज्ञा किये कछू कारण हे श्रीगुसांईजीनें हमारे ऊपर श्रीनवनीतप्रियजीकों पधराये हें सो कहूं न पधारेंगे ऐसें कहिकें दोनों भाई आपकी डोलतिबारीमें बिराजे ओर श्रीगुसांईजीको ध्यान हू हृदयमें करें हें। अब यहां श्रीनवनीतप्रियजीनें श्रीबहूजीसों फेर आज्ञा करी हमकों शीघ्र ले चलो तब श्रीबहूजीनें फेर श्रीनवनीतप्रियजीसों बिनती कीनी जो महाराज हमारे घर राजभोग

आरोगिकें पधारो तब श्रीनवनीतप्रियजीनें नाहीं करी ओर श्रीमुखसों आज्ञा करी " जो आगें कोई काळ पाछें भाजडमें तेरे लालजी व्रज-रायजीके हाथ को राजभोग एक दिना आरोगूंगो अब मोकों शय्या-पे पधरायकें तूं चली आव तोकूं कोई देखेगो नहीं, तब श्रीवहू-जीनें वेसेंही किये श्रीनवनीतप्रियजीकों मंदिरमें जाय शय्यापे पधरायकें आप अपने घरकों गये ता पाछें श्रीगिरिधरजी मंदिरमें जायकें श्रीनवनीतप्रियजीकों जगाये ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीकों मंगल भोग धर्‍यो ॥

सो वरदान श्रीव्रजरायजीकों सुधि हतो सो आगरे श्रीनव-नीतप्रियजीकूं पधारते जानिकें मध्यमें गऊघाटके ऊपर रसोई राज भोग सिद्ध कर राखी ओर आप मारगके बीच ठाडे भये सो श्रीन-वनीतप्रियजीको म्याने देख्यो तब विठ्ठल दुबेजीसों कही श्रीनवनी-तप्रियजी भूखे हें सो राजभोग मेंने कर राख्यो हे सो अबतो श्रीनव-नीतप्रियजी राजभोग आरोगिकें पधारेंगे पाछें वा स्थलपे श्रीनवनीतप्रि-यजीकों पधराय लाए ओर तहां राजभोग लाय धर्‍यो श्रीनवनीतप्रियजी भोग आछे तरेसों आरोगे जब राजभोग सरायवेको समय भयो तब श्रीव्रजरायजी ने कही जोमें यमुनाजीके ऊपर संध्यावंदन करिआऊं दुबेजी तुम श्रीनवनीतप्रियजीके पास सावधान रहियो ऐसें कहिकें श्रीव्रजरायजी तो श्रीयमुनाजीपे अपने मनुष्यनकों लेकें पधारे । ता पाछें दुबेजीनें श्रीनवनीतप्रियजीकों बीडा आरोगायकें ओर आचमन करवायकें श्रीनवनीतप्रियजी म्यानेमें पधराये ओर शीघ्र सवारी आगरे कों चली सो प्रहर रात्रि गये श्रीनाथजी जा हवेलीमें बिरा-जत हते तहां जाय पहुंचे सो श्रीगोविंदजी, श्रीबालकृष्णजी,

श्रीवल्लभजी, श्रीदाऊजी, आर समस्त बहू बेटीनके खेद युक्त चित्त हते सो श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करकें बहुतही प्रसन्न भये श्रीनवनीतप्रियाजीकों उत्थापन भोग ओर सेंन करिकें शय्यापे पोढाये ता पाछें श्रीगोविंदजीनें दुवेजीकों बुलायकें आज्ञा कीनी तुम हमारे सर्वस्व श्रीनवनीतप्रियाजीकों पधराय लाये तातें तुम कछू वरदान मांगो तब दुवेजीनें विनती कीनी " जो महाराज हमारे वंशमें श्रीनाथजी ओर श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा न छूटे ', आपनें आज्ञा करी एसेंहीं होयगो हमारे वंशको जो होयगो सो तुम्हारे वंशकों पीठ न देयगो ॥

॥ श्रीगोविंदजी देशाधिपतिके हलकारानकूं आज्ञा किये ओर गुप्त अन्नकूटको उत्सव आगरेमें कर आगे पधारे ॥

ओर अब श्रीगोविंदजी देशाधिपतिके हलकारेनसों आज्ञा कीने " जो जहां तांई हम अन्नकूटको उत्सव आगरेमें करें तहां तांई तुम पांदशाहकों खबर मत करियो ,, वे हलकारे सब आपके सेवक हते जहां तांई अन्नकूटको उत्सव भयो तहां तांई खबर न करी पाछें गुप्त अन्नकूट भयो भातके ठिकाने खील करिकें धरीं ओर समयानुसार यतकिंचित पक्वान तथा सामग्री सब भई ओर गुप्त श्रीगोवर्धनपूजा किये या प्रकार विधि पूर्वक अन्नकूट भयो ॥

॥ श्रीनाथजीको दंडोतघाटमें पधारनो ॥

अन्नकूट भये पीछे श्रीनाथजी गंगाबाईसों आज्ञा किये " अब हम दंडोतीघाटकूं चलेंगे सो गंगाबाई आजही त्यारी करियो, तब गंगाबाईनें श्रीगोविंदजी महाराजसूं कह्यो श्रीजीकूं रथमें पध-

१ पादशाह, देशाधिपति ओर म्लेच्छ अर्थात् औरंगजेब.

राओ तब श्रीगोविंदजीनें श्रीनाथजीकों रथमें पधराये तब दंडोतीवा-टीकों चले सो राजभोग आरती करकें विजय किये तब दरवाजेके ऊपर म्लेच्छ द्वारपाल बेठे हते सो उनने कछू देख्यो नहीं अंधे होय गये ऐसें करत मजलपे घडी छः दिन रह्यो तब तहां डेरा किये हे सो तहां उत्थापनसों लगाय सेन पर्यंत सब सेवा भई। श्रीजी सुखसों पोढे।

॥ हलकारान ने श्रीजीके आगरे पधरावे आदिकी खबर दीनी ॥

तब दूसरे दिन हलकाराननें पादशाहकूं खबर दीनी “ जो साहब गिरिराजसूं जो वे देव उठेथे सो रात्रिकूं एक हवेलीमें उनके डेरा भये सबेरे फिर क्या जाने किधरकूं गये सो कछू मालूम नहीं होती ,, यह सुनके पादशाहनें कह्यो जो वाही हवेलीमें तुमकूं मालूम किनतरह भई तब उन हलकाराननें कह्यो जो साहिब उस हवेलीके आसपास पातर दोना बहुतही बिखरे पडे हें ओर पनाळेको पानी बहोत चल्यो हे तातें मालूम होती हे जो गोकुलिया बिना इतना पानीका ओर दोना पातरका खरच ओर में नहीं होता हे यह सुनकें पादशाह अपनें मनमें हंस्यो ओर उन हलकरानसों कह्यो जो उनकों आगरेमें आय बहोत दिन भये ओर आज उनकूं चलेहू तीन दिन भये जासमय आगरेमें आये हते तबहीं मेंनें जान्यो पर में क्या उनका दुशमन हूं मुझे तो हुकम किया सो मेंने कर दिया अब उनका शोक होय तहां खेलें ओर किसीके आगें कहियो मति जो मुल्ला सुनेगा तो पीछे जायगा ॥

॥ म्लेच्छ + बहुतसे म्लेच्छ संगले श्रीजीके पाछें गयो ॥

जो जब बादशाह देवतान पे करामात मांगतो सो जब न

मिलती करामात तब वह मुल्ला आप जायकें देवतानकों खंडित करतो। पांच सो म्लेच्छ वाके संग रहते और जब वाने यह बात सुनी जो गिरिराजके देव दंडोतीघाटकों गये। तब वह बहोत म्लेच्छ संग लेकें पीछे चल्यो। तब पादशाहने नाहीं करी जो फकीरसाहिब तुम मत जाओ वे देव करामाती हें अपने शोकसों उठे हें मेंने नहीं उठाये हें यह सुनकें वा म्लेच्छने पादशाहको कह्यो न मान्यो ता उपरांत वह तुरक गयो सो ता दिन श्रीजीको रथ चंबलके पार उतर्‍यो और एक प्रहर रात रहे तहां रथ अटक्यो तब श्रीगोविंदजीकी प्रेरणासों गंगाबाईनें श्रीजीसों पूछी जो बाबा कहा इच्छा हे? तब श्रीजीनें कह्यो जो उत्थापन करो आज हम चंबलके तीरपर रहेंगे। इतनेंहीमें वह तुरक चंबलके पहिले तीर आय ठाडो भयो और श्रीगोविंदजी तो उत्थापनकी त्यारी करावत हते सो उनकों देखिकें चित्तकूं उद्वेग भयो तब गंगाबाईसों कह्यो जो श्रीनाथजीसों पूछो जो पार म्लेछ आये हें उत्थापनकी कहा आज्ञा हे। तब गंगाबाईने श्रीनाथजीसों ऐसें पूछ्यो तब श्रीनाथजी कहे जो उत्थापन शीघ्र करो तुमकों म्लेच्छसों कहा पडी हे जो आवेगो तासों हम समझ लेंगे तब शंखनाद भये सब निश्शंक व्हैकें सेवा करन लागे और यवन पार ठाडे हते तिननें श्रीगोवर्धननाथजीको रथ देख्यो सो बडे पर्वतके प्रमाण देख्यो और श्रीनाथजीके संग मनुष्य हते सो बडे बडे सिंह देखे मनुष्याकृति काहूकी न देखी तब सिंहादिक सबकों देखकें वे म्लेच्छ आपसमें बतरान लागे जो यह तो सब शेरही दीखत हें इनमें कोऊ आदमी

---

१ म्लेच्छ, तुरक और मूला अर्थात् मूल्ल साहब.

तो नजर नहीं आवत हें । ओर व्रजवासी आपसमें बोलें सो उन म्लेच्छनकों सिंहकीसी गरजना मालूम पडे तब आपसमें कहन लगे जो इस जगहसें जल्दी भाजो नहीं तो ये सिंह हुंकारते हें सो आपनकूं खानेके लिये चले आवेंगे। इतनेमें जलघरिया चंबल नदी-पै जल भरवेकों आये तथा पात्रमाँजबेवारे पात्र माँजबेकों आये सो तिनकों देखकें उन म्लेच्छननें कही जो यह सिंह अपनकूं खानेकूं आवत हैं तातें अब यहांते बेगही भजिकें चलो नहीं तो सबनकों खाय जांयगें। ऐसें कहिकें वहांते सब वे भगे सो ऐसें भयके मारे भाजे जो काहूके वस्त्र गिरिपडे कोईके ऊपर कोई गिरत पडत जैसें तैसें करकें एक रात्रिमें आगरे आये। तब उन मूलाने पादशाहसों कही जो वंह देव बड़ो करामाती हे हम अपनी जान बचायकें नीठ भजिकें आये हें आज पछे उस देवका नाम न लेउँगो तब पादशाहनें कही मेंने तो तुमकों पहिलेही मने कियाथा जो यह देव बंडा करामाती हे तुम उनपे क्यों चढकें गये ॥

॥ कृष्णपुर पधरायबेके लिये गंगाबाईके प्रति श्रीनाथजीकी आज्ञा ॥

दूसरे दिन श्रीनाथजी गंगाबाईसों यह आज्ञा करे जो श्रीगो-विंदजी सों कहो मोकों फिर पीछे चंबल उतरकें दंडोतीघाट ऊपर लैकें चलो। सो तहां कृष्णपुर गाम हे सो तहां श्रीजी विराजे ॥

॥ श्रीगुसांईजी श्रीबालकृष्णजीकूं वरदान दिये ॥

एक समय श्रीगुसांईजी आगें जन्माष्टमीके दिना श्रीबालकृ-ष्णजी तृतीय पुत्र सो श्रीयशोदाजीको वेष किये हते सो श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजीके मंदिरमें सो नंदमहोत्सवके दिना बहुत भाव-वृद्ध होयकें श्रीबालकृष्णजी श्रीनवनीतप्रियजीको पालना झुलाये

और यह कीर्तनकी तुक गाई "बहुर लए जननी गोद स्तन चले चुचाई। तुम व्रजरानीके लाला" और ता समय श्रीबालकृष्णजीके स्तनमेंसों दूधकी धारा चली सो श्रीनवनीतप्रियजीकों पलनामेंसूं गोदमें ले लिये। तब श्रीगुसांईजी हाथ पकडकें श्रीनवनीतप्रियजीकों पाछें पालनामें पधराये और यह जानी जो श्रीबालकृष्णजी भाववृद्ध बहोत भये हें इनमें श्रीमातृचरणको आवेश आयो हे सो श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न होयकें कहे "जो कछु वरदान मांगो" तब श्रीबालकृष्णजी वरदान मांगे जो महाराज मोकों प्रति जन्माष्टमी ऐसोई आवेश रहे कछूक दिन श्रीनाथजीकी सेवाकी प्रार्थना हें तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करे जो "प्रति जन्माष्टमी तुमकों ऐसोही आवेश रहेगो ओर श्रीनाथजीकी सेवामेंतो श्रीगिरिधरजीको[१] अधिकार रहेगो क्यों जो श्रीनाथजीने श्रीगिरिधरजीको हाथ पकड्यो हे ओर आगें कोई काल पीछें श्रीनाथजी देशान्तरकों पधारेंगे तब तुह्मारे नाती व्रजरायजी सत्ताईस दिन श्रीनाथजीकी सेवा करेंगे पाछें अट्ठाईसमें दिन श्रीगिरिधरजीके वंशमें श्रीगोविंदजी होयगे सो पीछें छिडाय लेंगे" यह वरदान श्रीबालकृष्णजीकों श्रीगुसांईजीनें दीनो हतो।

गुसांईजीके वरदानसूं व्रजरायजी श्रीजीकी सेवा सत्ताईस दिन किये

सो श्रीबालकृष्णजीके पुत्र श्रीपीताम्बरजी भये तिनके श्रीश्यामलालजी भये तिनके श्रीव्रजरायजी भये सो व्रजरायजी पादशाहके संग बहुत रहते सो एक दिन पादशाह प्रसन्न भयो तब कह्यो "जो श्रीव्रजराय तू कछू मांग तुमने मेरी खिदमत बहुत

१ करेगो सदा श्रीनाथजीके आगे श्रीगिरिधरजीको क० पु० पाठः

करी हे चार बरस भये तुमकों मेरे पास रहतें " तब श्रीव्रजरायजी-नें कही जो श्रीगिरिराजसों देव उठे हें तिनकी सेवा में करूं तब पादशाहने नांही कही जो हमेससें चले आवत हें सोई करेंगे ओर तुमने मोकों बहुत रिझायो हे तातें तेरोहू वचन खाली न गयो चाहिये तातें संग जाबता लेकें तुम जाओ जहां वे होंय तहां जाओ सो जाय कर एक महिना रहियो ओर आगे न रह सकोगे सो पादशाहको जाबता लेके श्रीव्रजरायजी दंडोतीघाट आये तब कृष्ण-पुरीमें श्रीनाथजी बिराजे हते सो तहां श्रीव्रजरायजी आये ॥

॥ श्रीव्रजरायजीकूं आये जान श्रीजी गंगाबाईकों आज्ञा किये ॥

सो उनकूं आये जान श्रीनाथजीनें गंगाबाईसों आज्ञा करी " जो तुम श्रीगोविंदजीसों कहो जो तुम सब कुटुम्ब तथा सब मनुष्य हमारे परिकरके सबकों लेकें यहांसों कोस दशके ऊपर एक गाम हे सो तहां एक बडो घर हे तहां तुम जायकें एक महिनाभर विराजो सबनं सहित यहां श्रीव्रजरायजी आये हें सो इनकों पाद-शाहको हुकुम भयो हे तातें वे सत्ताइस दिना सेवा करेंगें ओर प्राचीन श्रीगुसांइजी को हू वरदान हे ओर अट्ठाईसवें दिना तुम आयकें श्रीव्रजरायजीकों सीक दीजो ओर मेरी सेवा तुम करोगे "॥

॥ श्रीजीकी आज्ञा गंगाबाईने श्रीगोविंदजीसों कही ॥

सो यह बात गंगाबाईने श्रीगोविंदजीसों कही जो श्रीदेव-दमन कर्तुमकर्तुं अन्यथा कर्तुं समर्थ हें तातें उनकी इच्छा होयसो आपनकों करनों आगे श्रीगुसांईजीनेंहू आषाढ मासको विप्रयोगको अनुभव कियो हे सो आपनकों तो सत्ताईसही दिनाको वियोग दीनो हे यातें जो श्रीनाथजीकी आज्ञा हे सोई आपनकों कर्तव्य हे।

॥ श्रीगोविन्दजीकों सत्ताईस दिनको विप्रयोग भयो ताको वृत्तान्त ॥

यह बात सुनकें श्रीगोविंदजी विचार किये जो श्रीआचार्यजीको यह वाक्य हे—

विवेकस्तु हरिः सर्वं निजेच्छातः करिष्यति ।
प्रार्थितो वा ततः किं स्यात् स्वाम्यभिप्रायसंशयात् ॥

तातें अब श्रीनाथजीसों प्रार्थना न करनी ओर व्रजरायजीकी सामर्थ्य कहा हे जो हमारे आगें आयकें श्रीजीकी सेवा करें पर श्रीगुंसाईंजीको प्राचीन वरदान हे तातें सत्ताईस दिन सेवा करेंगे तातें अठाईसवें दिनां हम आयकें श्रीव्रजरायजीकों निकासेंगे ओर हम सेवा करेंगे ता पाछें श्रीगोविंदजी कुटुंब ओर सब मनुष्यकों संग लेकें एक घरमें जाय विराजे तब गंगाबाईकों श्रीजी वहां नित्य दर्शन देते ओर जब जैसें व्रज भक्तनकों अंतर्धान लीला विषे विप्रयोग भयो तब अन्वेषण करकें श्रीभगवान्‌कों बनवेली सों पूछे तेसें ही श्रीगोविंदजीनें श्रीनाथजीकों ग्राम ग्राममें पूछे एक देही जलघरिया तथा पात्रमांजा तो श्रीजीके संग रहे ओर परिकर सब श्रीगोविंदजीके पास हतो जहां ताई श्रीगोविंदजीनें श्रीनाथजीकी सेवा करी तहां तांई श्रीगोविंदजीने फलाहार लीनो अन्न त्याग कर दीने ओर प्रातःकाल होय तब आप जोगीको भेष धारन करें मृगछाला वाघांबर ओढें ओर अवधूत वेश धरे शरीरमें भस्म लगायकें एक रोडा दरजी श्रीनाथजीको हतो वह सारंगी आछी बजावतो ताकों चेला बनायो ओर अवधूतको वेष कियो ओर आप गुरू बनें वाकों संग लेकें सारंगी बजवावें ओर सब मिलकें गावें ॥

॥ राग आसावरी ॥

बसे वनमाली आली किसविधि पाइयें ।
ऐसी जिय आवे जैसें जोगी हे कें जाइयें ॥ १ ॥

यह पदकूं दोऊ मिलकें सारंगीके साथ गावें ऐसें जांन बूझकें अजान होयकें घर घरमें पूछते डोलें सबनमों ऐसें कहें हमारो एक लडका खोय गयो हे ताकों तुमनें कहूं देख्यो होय तो बताओ ऐसें विरह विकल दशामें श्रीगोविंदजी श्रीनाथजीकों सत्ताईम दिनां तांई दूढंते फिरे परंतु काहूनें यह भेद लख्यो नहीं॥

॥ अट्ठाईसवें दिन श्रीगोविंदजीनें श्रीव्रजरायजीकूं निकासे ॥

जब अट्ठाईसवों दिन आयो तब श्रीगोविंदजी और रोड़ा दरजी दोनों कृष्णपुरके तलाव ऊपर आयकें बेठे तासमय श्रीजीको राजभोग आयो हतो तासों जलघरिया दोऊ सखरीके हांडा मांज-वेको तलावपे आये हते सो उनने श्रीगोविंदजीकों देखे पर जोगीको भेष हतो तातें पहचाने नहीं जो पात्र मांजबे लगे इतनें उनमेंसूं एक व्रजवासीनें दूसरे व्रजवासीसों कही सुन भैया श्रीविठ्ठलरायजीके वंशमें कोई ऐसो मर्द नाहीं जो या व्रजरायकूं निकासे और अपनों घर सह्यारे श्रीविठ्ठलरायजीके चार वेटा भए तामें श्रीगिरिधरजी तो बडेही मर्द भये और श्रीगोविंदजी हू बडे मर्द हें पर या बिरियां कहा जानें कहां गये नाहीं तो अब या बिरियां आवें तो श्रीव्रजरायजी के पास फौज तो हे नहीं जो लडेगो पकड हाथ तुरंत काढि दें यह बात सुनके श्रीगोविंदजी वा जलघरियाके पास आयकें पूछे जो हमकूं तू श्रीनाथजी बताय कहां विराजें हें मेरो नाम श्रीगोविंदजी हे सो ऐसें कहिकें अपनो जोगीको वेश तो दूर कियो और धोती उपरना पहरि अपरसमें होय एक कटारी कमरमें छिपाय उपरनामें ढांप लीनी और संग अनुभवि दीनो हे यातें लीनो पीछें पीछें चले गये इतनेमें माला बोली सो

श्रीव्रजरायजी झारी भर आचमन करवाये ता पाछें सब सेवालों पहुंचकें राजभोग आरती सिद्धि करिवेकों उद्युक्त भये तितनेमें अकस्मात् श्रीगोविंदजीनें आयकें एक हाथसों कमरमेंसों कटारी काढकें ओर श्रीव्रजरायजीकों दिखाई ओर यह आज्ञा किये हमारी ओर तुम्हारी दोनों जनेनकी यादचरथली श्रीनाथजीके आगें होयगी तब तीसरो कोऊ आरती करेगो तुमने बहुत दिना तांई आरती करी अब तुम यहांतें अपनी जान लेकें निकस जाओ नातर या कटारीसों तुह्मारो पेट चाक करूंगो पाछें अपने पेटमें मारूंगो तुमकों सेवा करन न दऊंगो सेघातो श्रीदाऊजी करेंगे सो श्रीगोविंदजी बडे प्रबल हते सो श्रीव्रजरायजीकों ऐसी दक्षिणा दीनी सो सुनकें श्रीव्रजरायजी तो बहुत डरपे थरथर कांपवें लगे ओर हाथ जोड लिये आंखनमें आंसू आय गये ओर बिनती करवे लग गये जो मोकों मारो मत में याही समय निकस जाऊंगो तुम श्रीनाथजीकों सह्मार लेओ ऐसें कहिकें श्रीव्रजरायजी वहांसें चले सो आगरे आये सो पादशाहसों मिले सब बात कही तब पदशाहनें कही जो आज पीछें फेर मत जैयो अब श्रीगोविंदजीनें अपनो कुटुंब श्रीदाऊजी तथा बहू बेटी सब परिकर बुलाय लीनी ओर श्रीनाथजीके चरणस्पर्श करकें सबनको चित्त बहुत प्रसन्न भयो ओर श्रीनाथजी अपने परिकरकूं देखकें बहुत प्रसन्न भये इतनें दिन श्रीव्रजरायजीनें सेवा करी परंतु श्रीनाथजीनें सुख न मान्यो ओर जा दिनां श्रीगोविंदजी श्रीबालकृष्णजी तथा श्रीवल्लभजी तथा श्रीदाऊजी इन सबनें मिलकें शृंगार कियो ता दिना श्रीनाथजीनें बहुत अलौकिकतासों दर्शन दीने ।

॥ श्रीनाथजी मेवाड़ तक प्रवासमें केसें पधारे ताको वर्णन ॥

तब ऐसें श्रीनाथजी प्रथम चतुर्मास दंडोतीघाटमें किये । बडे बड़े घरनकूं देखकें श्रीजी बहुत प्रसन्नभये ओर कही जो यह देश बहुत आछो हे पर अब यहांते चलें सो ऐसें गंगाबाईसों आज्ञा किये तब रथमें बिराजकें वहांते चले सो श्रीगोविंदजी तीन भाई हते सो भैया तो डेरा लेकें आगें चले सो श्रीगोविंदजी तीन भाई हते सो रसोइया बालभोगियान ओर जलघरियांनकों संग लेजाय सो वहां आगें जायकें सब उत्थापनकी तयारी करवाय राखें श्रीनाथजी राजभोग आरती करकें चलें सो जब घडी छः दिन रहें तब डेरानमें दाखल होय जांय वहां सब तयारी पावे सो वेगही उत्थापन भोग संध्या ओर शयन होय जाय तब तुरत श्रीजी पोढें ओर सबेरे बेगही मंगला शृंगार ग्वाल ओर राजभोग पर्यंत सेवा करकें सब परिकर महाप्रसाद लेकें दूसरे दिन दूसरे डेरापे चलते ओर एक भाई श्रीवल्लभजी डेराके संग चलते ओर दो भाई श्रीजीके संग चलते श्रीगोविंदजी तो श्रीजीके रथके आगे घोडापे चढ़के चलते ओर श्रीबालकृष्णजी रथके पाछे घोड़ापे चढकें चलते पांच हाथियार बांधें कवच पहिरें अलमस्त रूपमूं चलें पेंडेमें कोई राजा प्रजा श्रीजीके दर्शनकी बिनती करें ताकूं श्रीगोविंदजी आज्ञा करे जो श्रीनाथजी तो श्रीगिरिराजकी कंदरामें विराजतहें या रथमें तो हमारी वस्तु भाव हे सो ऐसें कहें पर दर्शन काहूकूं न करावें ओर संवत् १७२६ आश्विन सुदी १५ पूर्णमासी शुक्रवार आश्विनी नक्षत्रके दिना श्रीनाथजी श्रीगिरिराजसूं उठे सो संवत १७२८ फाल्गुन वदी ७ शनिश्चर वार स्वाति नक्षत्रमें सिंहाडमें पहुंचे पाट बेठे

तहां तांई बीचमें अढाई वर्ष पर्यंत मार्गमें जहां रथमेंही बि- राजे। तहां तांई रसोई करबेकी सेवा तथा सामग्री और शाककी सेवा श्रीवल्लभजी महाराजने अपने हाथसों कीनी। ओर मेदा पीसबे- की हू सेवा श्रीवल्लभजी महाराजनें कीनी। ओर अनसखरी बाल भोगकी तथा दूधघरकी सेवा अपने हाथसों श्रीबालकृष्णजी तथा सब बहू बेटी मिलकें करते। सो गाय संग रहती सो दूध दही ओर माखन सब संगही होतो ॥

॥ दंडोतीघाटसूं श्रीनाथजी कोटा तथा बूंदी पधारे ॥

ओर दंडोतीघाटतें श्रीगोवर्धननाथजी कोटा बूंदी पधारे। तहां अनिरुद्धसिंह हाड़ा बूंदीके राजा हते। सो दर्शनकूं आये वैष्णव जानकें श्रीगोविंदजी महाराजनें उनकों दर्शन करवाये। तब उन राजा- नें बिनती कीनी जो श्रीनाथजीसों बिनती करो। मेरे मुलकमें बिराजे। या कोटा बूंदीके मुलकमें आछी जगह हें सो श्रीजीकी। ओर पांच हजार तरवार हाडानकी हें जो महाम्लेच्छ आवेगो तो हम लडेंगे। तब श्रीगोविंदजी आज्ञा किये जो तुम्हारी तो ऐसी वैष्णवता हे तो यहांही कछुक दिन आछी जगह देखकें विराजेंगे। पाछें इच्छा होयगी तहां पधारेंगे। सदां विराजबेको तो यहां नहीं क्यों जो तुम्हारी जमी- यत थोडी हे तब एक कृष्णविलास करकें कोटाके मुलकमें स्थल हे। तहां पद्मशिला सो तहां श्रीनाथजी चतुर्मास विराजे ॥

॥ श्रीनाथजी जोधपुर पधारवेकूं कोटा बूंदीसूं पुष्करजी पधारे ॥

ओर श्रीजी चतुर्मास बीते पीछे पुष्करजी होयकें जोधपुरकों पधारे। पेंडेमें जब पुष्करजीके नजीक होयकें रथ निकस्यो तब वह तहां अटक्यो। तब श्रीगोविंदजीने गंगाबाईसों कह्यो तुम श्रीजीसों

पूछो रथ क्यों अटक्यो आपकी कहा इच्छा हे। तब गंगाबाईने भीतर जायकें श्रीनाथजीसों पूछ्यो जो बलाई लऊं, यह रथ क्यों अटकाय राख्यो हे? । तब श्रीजी आज्ञा किये जो यहांते निकट काई सरोवर हे सो तासें कमल फूले हें सो ताकी मोंकों सुगंध आवे हे। सो कमल तहां बेग जायकें ले आओ। मेरे रथमें धरो तब उन कमलनकी सुगंध लेकें में आगे चलूंगो। जहां मेरी इच्छा होयगी तहां पधारूंगो। तब दो चार व्रजवासी तहां तें चले सो पुष्करजी आये। सो तहां आयकें कमल बहुतसे फूले हे सो फूले कमलनमेंसूं आरक्त तथा ओर श्वेत तथा ओर सब प्रफुल्लित हते सो सब लेकें ओर कमलनके पत्रनमें धरकें शीघ्रही श्रीगोवर्धननाथजीके रथके पास आयकें ठाडे भये। तब वे कमल लेकें श्रीगोविंदजी महाराजनें श्रीनाथजीकूं अंगीकार करवाये। श्रीजीकी आज्ञासों वे कमल आये हते तातें श्रीजीकों वे कमल बहुत प्रिय हे तातें श्रीबालकृष्णजी ओर श्रीवल्लभजीनें हूं श्रीनाथजीकों कमल अंगीकार कराये। ओर तब श्रीदाऊजी महाराज तो बालक हते सो उनहूंकूं श्रीगोविंदजी महाराजने बुलायकें श्रीजीकों कमलके फूल अंगीकार करवाये। ओर बहूजी तथा बेटीजी आदी सब जो गोस्वामी हते तिनकेंहू कमल श्रीनाथजीनें अंगीकार किये ॥

॥ श्रीनाथजी जोधपुर पधारवेकूं पुष्करजीसूं कृष्णगढ पधारे ॥

ओर कृष्णढके राजा रूपसिंहजी भले भगवदीय हते सो वे श्रीदीक्षितजी (अर्थात् विठ्ठलेश्वरजी दीक्षित) के सेवक हते सो वे तो देशाधिपतिकी लडाईमें युद्ध करकें देह छोडे। सो ता समय एक धुकधुकी हीरा जटित हती। सो एक नाऊ खवास पास हतो ताकों दिनी ओर कही जो यह धुकधुकी तूं लेजायकें श्रीगिरिराजपे

श्रीनाथजी विराजे हैं तिनकूं भेंट कर आव। तब वानें श्रीनाथजी-के पास जायकें वह हीराकी धुकधुकी भेट करी और राज भोग आरतीके दर्शन करकें वह नीचें उतर्‌यो। सो दंडोतीशिलाके ऊपर राजा रूपसिंहजीको स्वरूप देख्यो सो पीतांबर पीरो पहेरें हैं, केसरी उपरना ओढे हैं, तिलक मुद्रा दिये हैं और भगवत तेज सहित स्वरूप हैं। और लौकिक शरीर तो रणमें छूट्यो और अलौकिक शरीर धरकें श्रीजीके मंदिरमें पधारे। सो जात तो मंदिरमें सबनें देखे परंतु निकसत काहूनें न देखे। तब सबननें कही जो राजा रूपसिंहजी श्रीजीकी लीला में प्रवेश किये। तिन राजा रूपसिंहजी के बेटा मानसिंहजी कृष्णगढके राजा हते जा समय श्रीजी रथमें बिराजकें कृष्णगढके मुलकनें पधारे। सो उननें सुनी जो व्रजके श्रीनाथजी मेरे देशनें पधारे हैं सो वे हमारे परम इष्टदेव हैं सो उनके दर्शन किये बिनां हमकूं जलपान करनो भी उचित नहीं। तब वह श्रीजीके दर्शनकों आयो सो उजाडमें जहां बहुत ढाकको वन हो सो तहां एक अजमीती नामक गाम ऊजड हो सो तहां सरोवर बहुत ही सुंदर हो। और नदी तथा झरना पर्वतके बहत हते सो तहां श्रीजीको रथ ठाडो रह्यो हो। सो तहां आयकें राजा मानसिं-हजीनें श्रीजीके दर्शन किये वाकों वैष्णव जानकें श्रीगोविंदजीनें दर्शन करवाये। तब वानें विनती करी जो महाराज प्रगट तो म्लेच्छ जानेगो पर गुप्त आप मेरे मुलकमें विराजो तो मैं सेवामें तत्पर हूं। श्रीगोविंदजीनें श्रीजी सों पुछवायो सो श्रीजी आज्ञा किये। यह पर्वत वहुत रमणीक हे ढाकके वृक्ष बहुतही हैं और केसू फूले हैं। तातें वसंत ऋतु यहां करेंगे। ता पाछें आगें चलेंगे। यहां हू हम न रहेंगे।

ता पाछे डोलउत्सव वहांहीं कियो ओर वसंत ऋतु तथा ग्रीष्म ऋतु कछूक तहां विराजे ता पाछे आगें मारवाडकों पधारे ॥

॥ श्रीजी मारवाड-पधारत पेंडेमें वीसलपुरके वेरागीकूं दर्शन दीने ।

जोधपुरसों उरे वूजके मारगमें एक वीसलपुर गाम हे तहां एक वेरागी गुरू चेला रहते। सो जब पहिले श्रीजी गिरिराज ऊपर विराजत हते। सो तब तहांसूं गंगाजी न्हायवेकों वे दोनो गुरू चेला गए हते। सो श्रीगंगाजी न्हायकें जब श्रीगिरिराज आए। तब वाके गुरूनें तो श्रीगिरिराज पे जायकें श्रीजीके दर्शन कीने ओर वा चेलाने श्रीभागवत ग्रंथ पढ्यो हतो तातें यह श्लोक पढकें:—

कृष्णस्त्वन्यतमं रूपं,गोपविश्रंभणं गतः ।
शैलोस्मीति ब्रुवन् भूरि, बलिमादद् बृहद्वपुः ॥
भा. स्कं १० अ. २४ श्लो. ३५

वो ऐसें विचार करवे लग्यो जो श्रीभागवतमें श्रीगिरिराजहू भगवद्रूप वर्णन कर्यो हे। सो ताके ऊपर में कैसे पांव दऊं। इतनेमें दर्शन करकें वाको गुरु आयो सो वाने बहुत श्रीजीके दर्शनकी बडाई करी। ओर कही जो श्रीनाथजी बहुतही सुंदर हें। तब वह चेला यह सुनकें दर्शनकों गयो सो श्रीगिरिराज तांई तो गयो पर ऊपर पांव देतमें वाकों बडी ग्लानी आवे। ओर श्रीजीके दर्शन हू मन चसें। ओर बहुत ओसेर आवे। सो ऐसें तीन दिन लों धुकड पुकड करत वे गुरू चेला गिरिराजमें रहे। ओर श्रीगिरिराजकी परिक्रमा किये वा चेलाकों श्रीजीके दर्शन न भये तासूं वाके चित्तमें बहुत खेद रहे सो कोई काल पीछे यह गुरू तो हरिशरण भयो ओर वह चेला वीसलपुरमें महंत भयो। ओर तहा वीसलपुरमें रहे। तब या वेरागीकों श्रीजीने स्वप्नमें जतायो जो जा दर्शनके लिये

तूं खेद करे हे सो श्रीठाकुरजी मेंहीं हूं, ओर काल तेरे गामके ग्वेंडे होयकें रथ निकसेगो तब तू रथकों आयकें पकड़ियो ओर श्रीगुसांईजीसों बिनती कीजो 'जो मोकों दर्शन करवाओ' जो तोकों श्रीगुसांईजी दर्शनकी नाहीं करें तो तूं मेरो शृंगार बतायदीजो। श्वेत पाग पिछोरा श्वेत शृंगार हे ओर श्रीजी या रथमें निश्चय बिराजे हें तासूं मोकूं अवश्य दर्शन कराओ। तब तोकूं श्रीगुसांईजी दर्शन करावेंगे ओर तूं एक पाटिया राजभोगके लियें बनवाइयो ताकूं संग लेकें मेरे रथके आगे लाय धरियो। सो ता पाटियापे मेरे नित्य राजभोग आवेगो। या प्रकार स्वप्नमें श्रीजीनें वा बेरागीकों आज्ञा दीनी। तब वह बेरागी प्रातःकाल उठकें एक बढईकूं बुलाय लायो। ओर तासूं कही जो मेरे पच्चीस ' भेंस हें तामेंसूं एक भेंस आछी होय सो तू लेलीजो पर अबको अब एक पाटिया बनाय लाव, । तब वा खातीने एक प्रहरमें बनायकें तयार करकें वा बेरागी-कों लाय दियो। सो वा पाटियाकों लेकें मारगके ऊपर आयकें बेठ्यो। जब पाछिलो प्रहर दिन रह्यो तब श्रीगोवर्धननाथजीके रथको दर्शन भयो सो रथके आगे जायकें मारगके बीच वह बेरागी पड्यो। ओर कह्यो जो 'मोकों श्रीनाथजीके दर्शन कराओगे तो में मारगमेंतें उठूंगो'। तब सबननें यह जानी जो कोई पादशाहको हलकारा हे। सो कपट करकें पूछे हे। तब श्रीगोविन्दजी आज्ञा किये 'श्रीनाथजी तो सदा श्रीगोवर्धनकी कन्दरामें विराजत हें ओर या रथमें तो हमारी वस्तु भाव हे ताकूं हम लिये जात हें'। तब वा बेरागीनें कह्यो जो मोंकों रात्रीकों श्रीनाथजीने स्वप्नमें आज्ञा करकें कही जो मेरे राज-भोगके लियें एक पाटिया बनवायकें तूं लाइयो सो में बनवायकें लायो हूं

सो लीजिये, ओर मोकों श्रीनाथजीके दर्शन करवाइये। श्वेत पाग ओर श्वेत पिछोरको शृंगार हे। यह बात बेरागीकी सुनकें श्रीगोविन्दजीनें जान्यो जो यह कोई अनुभवी वैष्णव हे। याकों तो दर्शन करावनें। तब सबनसों कह्यो आज यहां उत्थापन होंयगे। तब वहां डेरा करवाये ओर उत्थापन भये। अब तासमय वा बेरागीकों दर्शन भये। ओर दूसरे दिन राजभोग आरती पर्यन्त वा गाममें बिराजे हते। तापाछे वहांतें जोधपुरकों बिजय कियो। वा पाटियाके ऊपर एक दिनतो राजभोग आये ओर जब श्रीजी वहांतें विजय किये तब वा पाटियाकों सब-ननें वहांहीं डार दीनो। ओर कही जो श्रीजीके पाटियानकी कहा कमतीहे ओर बेरागीके पाटियासों कहा अटक्यो हे ओर वह मनो-रथ करकें बनवाय लायो तो एक बेर तो राजभोग आरोगें। अब या-कों यहांहीं पटक चलो। सो वह बेरागी ले जायगो। ऐसें कहकें वा पाटियाकोंतो डारदीनो ओर शीघ्र चले। फिर वह बेरागी वा गाममेंते आयकें वा स्थलकों देखे तो श्रीजी पधारे हें ओर वह पाटिया तहांहीं पड्यो हे। तब तो वा बेरागीको चित्त बहुत उदास भयो। जो मोकों श्रीनाथजी स्वप्नमें आज्ञा करे तूं पाटिया बनवाय लाव तोहू अंगी-कार न करे। सो याको कारन कहा हे। सो या प्रकार चिंता करत वह बेरागी वैष्णव वा पाटियाकों उठायकें अपनें घर लेके आयो सो लायकें एक सुन्दर उत्तम स्थल हतो तहां धर्‍यो ओर अपने मनमें बेठ्यो बेठ्यो खेद करवे लाग्यो। अब बीसलपुरसें श्रीनाथजीको रथ चल्यो सो रथ कोस तीनके ऊपर जायकें अटक्यो। ओर तहांतें आगें चलायबेकों बहुत उपाय किये पर श्रीजीको रथ चले नहीं। तब श्रीगोविन्दजी गंगाबाईसों आज्ञा किये जो तुम श्रीनाथजीसों पूछो या उजाडमें

कोस कोस भर तांई कोई गाम नहीं हे। ओर जल ओर छायाहू नहीं हें ओर यहां जो आप रथ अटकाये हें ताको कहा कारन हे?। तब गंगाबाईनें श्रीनाथजीसों पूछयो "जो बलिहारी लाल! यह रथ क्यों अटक्यो नहीं चलत हे"। तब श्रीनाथजी यह आज्ञा किये "जो राजभोग धरतमें नित्य पाटियाको दुःख पावत हें तातें मेंने वा बेरागीकों स्वप्नमें आज्ञा करकें जो पाटिया बनवायो हो सो ताकूं ये वहांही डार आये अब राजभोग काहेपे धरेंगे सो जब पाटिया आवेगो तब चलूंगो ओर जहां तांई में एक स्थलपे जाय स्थिर होयकें न बेठूंगो तहां तांई याही पटियाके ऊपर नित्य राजभोग आवेगो" तब यह बात गंगाबाईनें श्रीगोविंदजीसों कही। सो सुनकें श्रीगोविंदजी अपने मनमें बडोही पश्चात्ताप किये। ओर तत्काल दो व्रजवासी घोडापे चढायकें पठाये। ओर कहे जो वह पाटिया वहां पड्यो होय तो बेग लेकें आओगे ओर कोई उठायकें लेगयो होय तो जायकें वा बेरागीसों कहियो जो तेरे बडे भाग्य हें जो तेरो पाटिया साक्षात श्रीनाथ अंगीकार किये अब तूं एक ओर पाटिया बनवायकें हमकूं दे। ओर जो वह पहिलो पाटिया तुमने उठाय धर्यो होय तो वाही कों देउ। यह आज्ञा लेकें जो दोनों व्रजवासी तहांते चले सो घोडा दोडावत चले सो घडी डेढके बीचमें वा स्थलपे पहुंचे। तहां पाटिया न देख्यो तब वा बेरागीसों जायकें सब वृत्तांत कह्यो। तब वा बेरागीनें वह पाटिया लेकें उन व्रजवासीनकों दीनो। सो वे लेकें तहां ते चले सो तुरंत उतनी बेरमें पाछे वहांही आयकें वह पाटिया श्रीगोबिंदजीकों दीनो। सो वह पाटिया श्रीनाथजीकी आज्ञातें बन्यो हतो। तातें श्रीगुसांईजीके सब बालक वा पाटियाके दर्शन किये

ओर वा पाटियाके दर्शन करकें ओर हाथ लगायकें सबननें आंखनसों हाथ लगाये। ओर बहुत आछी तरह वाकूं राखवे लगे। ओर जब श्रीजीकी असवारी होय ता समय सुधि करकें लिवाय चलें। सो जहां तांई मेवाडके मंदिरमें स्थिर होयकें बिराजे तहां तांई वोही पाटिया राख्यो। ओर श्रीनाथजीको नित्य राजभोग वाहीपे आवतो। जब वह पाटिया आयो तब श्रीजीको रथ तहांतें तुरंतही चल्यो ॥

॥ श्रीजी जोधपुर पधार चांपासेंनीमें चतुर्मास विराजे ॥

तहांतें चले सो जोधपुर पधारे। सो जोधपुरके राजा जसवंतसिंहजी सो कमाऊंके पहाडमें अपनी ननसार हती सो तहां गये हते सो उनके प्रधानादिक सब हते। सो वे सब श्रीनाथजीके दर्शनकों आये ओर बिनती करी। जो महाराज दिना आठ यहां बिराजते तो हम राजाजीकों बधाई लिखावें। तब जोधपुरसों कोस तीनपे चापासेंनी गाम हे। तहां एक कदंबखंडी ही। ओर चारेबां गाम हो सो तहां श्रीजी चतुर्मास बिराजे। श्रीजी श्रीगिरिराजसों उठे पीछे तीन चतुर्मास मारगमें किये। तामें एक चतुर्मास तो दंडोतीघाटके कृष्णपुरमें किये। दूसरो चतुर्मास कोटाके कृष्णबिलासमें किये। तीसरो चतुर्मास जोधपुरके चापासेंनीमें किये। ओर चोथो चतुर्मास तो मेवाडमें अपने मंदिरमें किये ओर संवत् १७२६ आश्विन सुदी १५ कों लेकें संवत् १७२८ कें फाल्गुन वदि ७ पर्य्यंत श्रीजी व्रजके ओर मेवाडके बीचमें भ्रमण किये। तामें इतने देश कृतार्थ भये हिंदमुलतांन, दंडोतीघाट, बूंदी कोटाको देश, ढूंढार तथा मारवाड बांसवाडो डूंगरपुर तथा शाहपुरा इतनेके बीच २ वर्ष ४ महिना दिन ७ पर्य्यंत श्रीजी आप रथमें विराजेही फिरे ॥

॥ श्रीगोविंदजी उदयपुर पधार राणाजी श्रीराजसिंहजीसूं श्रीजीके मेवाडमें विराजवेको निश्चय किये ॥

ओर जहां तांई आप श्रीनाथजी चतुर्मास चांपासेनीमें विराजे तहां तांई श्रीगोविंदजी उदयपुर पधार राणा श्रीराजसिंहजीसों मिले। सो श्रीजीके मेवाडमें बिराजवेको सब वृत्तांत कह्यो। तब राणा श्रीराजसिंहजीनें अपनी माता वृद्ध हती तासूं पूछयो जो 'व्रजके ठाकुर श्रीनाथजी म्लेच्छके उपद्रवसों उठे हें सो यहां अपने देशमें विराजवेकी इच्छा हे। सो तुम कहो तो पधरावें। ओर यह बात सुनकें जो हमारे ऊपर म्लेच्छ चढ़ि आवेगो तब हमकूं कहा कर्तव्य हे?,। तब राणजीनें कही 'सुन पुत्र। आगें मीराबाई ओर अजबकुंवरिबाईके भाग्यनसों श्रीजी आप अपने देश पधारे हें। अपनें एसे भाग्य कहां हें। तातें तुम बेग श्रीनाथजीकों पधराओ। अब विलंब मत करो। ओर जो पादशाह म्लेच्छ चढ़ि आवेगो तो तुम रजपूत हो जमनिके लिये जीव देत हो तो श्रीठाकुरजीके लिये जीव देतें का विशेष हे। अब श्रीठाकुरजीकूं बेग पधराओ,। तब यह बात सुनकें वे राणा श्रीराजसिंहजी प्रसन्न भये। ओर श्रीगोविंदजीकूं बिनती कीनी जो 'महाराज! श्रीनाथजीकूं बेग पधराओ'। तब श्रीगोविंदजी पाछें चापासेंनी गये। वहां जायकें श्रीनाथजीकों विनती करवाये। तब श्रीनाथजीकी आज्ञा भई। जो 'मेवाड देशकूं चलूंगो चतुर्मास तो यहीं पूर्ण भयो हे अब अन्नकूट करकें में मेवाडकूं चलूंगो'॥

॥ श्रीजी मेवाडमें पधारे ताको सविस्तर वृत्तांत ॥

ता पाछे कार्तिक सुदी १५ पूर्णमासी संवत् १७२८कों श्रीजी मेवाडकों विजय किये। मारगमें एक गाम आयो तहां उत्थापन भये।

यहां शयन पर्यंत सब सेवा भई। ओर वहां एक तलाव हतो तामें जल बहुत पुष्कळ हतो सो श्रीजी वा दिना वा तलावकोही जल आरोगे। ता पाछे रात्रिको समय भयो तब ता तलावके आसपास जयजयकार होयवे लग्यो। सो जयजयकारको शब्द श्रीजीके संगके सब लोग सुनें परंतु जयजयकार करबेवारे दीखें नहीं। तब सबननें मिलकें ओर तलावके पास जायकें जहां जयजयकारकी धुनि होय रहीही तहां अटकरसों पूछयो जो तुम कोंनहो जो जयजयकार करो हो। तब काहूनें आकाश मारगसूं जुबाब दियो जो हम या तलाबमें एक लक्ष भूत रहत हें सो हजार वर्षसूं हमारी गति मुक्ति होत नाहीं। सो आज श्रीनाथजी या तलावको जल आरोगे ताके प्रभाव करिकें वैकुंठसों बिमान आये हें सो ऐसें कहें हें जो तुम या तलावमें जितनें पिसाच हो सो सब दिव्य देह धरिकें ओर विमानमें बेठकें वैकुंठकूं चलो। ऐसें श्रीवैकुंठनाथजीनें कही हे ओर हमकूं विमान लेकें पठाये हें। सो या तलावको जल श्रीनाथजी आरोगे हें तासूं हम सबरे एक लक्ष पिशाच या तलावमें रहत हें हजारन वर्षन तें सो आज हमारी मुक्ति होय गई। सो हम सब श्रीनाथजीकी जय जय बोलत जांय हें ताको यह जयजय शब्द हे। सो यह बात सुनकें श्रीगोविंदजी ओर उनके सब संगके आश्चर्य किये। सो ऐसें अर्धरात्रिसों लगायकें प्रातःकाल तांई जयजयकार भयो। ता पाछे श्रीनाथजी वहां राजभोग आरोगकें विजय किये। सो ऐसें ही गाममें मजल कर [१]तेईस दिनमें सिंहाडमें पांव धरे। सो मार्गमें जितने देशनमें जहां जहां फिरे तहां तहां चारित्र तो आपने

१ कोई पुस्तकमें तेईस कोईमें सत्ताईस पाठ हे.

बहुत करे पर यहां तो मुख्य चरित्र लिखे हैं ग्रंथको विस्तार बहुत होय ताके लिये । ताके पाछें अब सिंहाडमें एक पीपरके वृक्ष के नीचे रथ अटक्यो । जब श्रीजीसों पूछ्यो तब श्रीजी यह आज्ञा किये जो " अजबकुंवरि बाईके रहबेको स्थल यह हतो । तातें यहां मेरो मंदिर बनेगो ओर में यहांहीं रहूंगो ओर राणाजीको मनोरथतो उदयपुरमें पधरायवेको हे पर कोई काल पीछें सिद्धि करूंगो । ओर अभी तो यहां अजबकुंवरि बाईके स्थलमें मंदिर बनवाओ में यहां कोई काल तांई विराजूंगो । यह देश मोकों व्रजकी उन्हार पडे हे । यह पर्वत मोकों बहुत सुहावनें लगत हैं । ओर सब श्रीगुसांईजीके बालक अपनी अपनी बेठक बनवाय लेउ । " तब श्रीगोविंदजीनें तत्काल मंदिरकी तैयारी करवाई । ओर गोपालदास उस्ताकों आज्ञा दीनी " जो बेग श्रीजीको मंदिर सिद्ध करो बहुत मनुष्य लगायकें ओर शीघ्र तैयार होय " । ओर पाषाण तो आसपासके पर्वतनके बहुत हते ओर चूनो सिद्ध करवायकें मंदिरकी नीम लगी । सो मंदिर बनवे लग्यो कारखाना रात्रिदिन चलवे लगे कारीगर सहस्रावधि लगायकें मंदिर थोडेहीं महीनानमें सिद्ध कियो । तब संवत् १७२८ फाल्गुन वदि ७ शनिवारके दिन श्रीदामोदरजी महाराज (श्रीदाऊजी) नें वेदोक्तरीतसूं पुण्याहवाचन ओर वास्तुप्रतिष्ठा करवायकें श्रीनाथजीकूं पाट बेठाये । तादिनासों श्रीजी आप मेवाडमें सुखसों विराजे । ओर राज श्रीदामोदरजी (श्रीदाऊजी) माहाराजको ओर नेगरीत ओर सब प्रणालिका पूर्वकी हती सो बंध गई । ओर गायनके खिरक सब सिद्ध भये तिनमें सब गाय स्थित भई । ओर श्रीदाऊजी महाराज श्रीजीकों अच्छी तरह लाड लड़ावें उत्सव महोत्सवके शृंगार सब आपही करें ॥

॥ पादशाह श्रीजीके मेवाड़ बिराजवेके समाचार सुनकें महाराणानों श्रीराजासिंहजीपे चढाई कीनी ॥

सो एसें बरस चार + जब व्यतीत भये तब महाम्लेच्छनें हलकारेनसों पूछी "वे देव जो गिरिराजतें उठे थे सो किसके मुलकमें जायकें बसे। मेरेही अमलमें हें के कोऊ राजाके अमलमें हें"। तब हलकारा मारवाड तथा ढूंढार तथा मेवाडमें जहां जहां श्रीजी बिराजे तिनातिन मुलकनमें फिरे ओर निश्चय करिकें आये सो आयकें देशाधिपतिसों कहे जो राणाजीके देशमें बिराजें हें। ओर राणाजी हाथ जोडे रहते हें ओर बहुत बंदगीमें रहते हें। यह सुनकें पादशाहने कही जो मेनें तो जानाथा जो 'मेरेही मुलकमें रहेंगें जहां जायगें तहां मुलक तो मेरेही हें दरियावके किनारे तांई। ओर वे तो मेरो मुलक छोडकें राणाजीके मुलकमें जायकें बसे हें। तातें में राणाजीकूं जायकें देखूंगो'। सो यह कहकें पादशाहनें तयारी करी सो कोईक दिनमें मेवाडमें आय पहुंचे। तब राणाजी श्रीरायसिंहजीनें आपनों सब कुटुंब सो मेवाडमें पठायदीनो। ओर आप चालीस हजार फोजसों नाहर मगरे आयकें डेरा किये। ओर वाही दिना पादशाहनें आयकें रायसागरपे डेरा किये॥

॥ जब पादशाह ओर राणाजीकी फोजनके डेरा रायसागर नाहरमगरापे भये तब श्रीजी ग्राम बाटरा पधारे ॥

सो ता दिना श्रीजीनें गंगाबाईसों आज्ञा कीनी जो "श्रीदाऊजीसों कहो एक बाटरा गाम हे सो वहां बाटराकी नालमें एक बहुत रमणीक स्थल हे तहां अनेक जातकी वृक्षावली सहजही होय हे। केवड़ा, केतकी, चंबेली, रायबेलहू सब सहजही होय हें सो मगरा

× पाठांतर ११.

मोकों अवश्यही देखनो हे । और वा पर्वतमें एक गुफा हे सो वा गुफामें एक ऋषीश्वर सहस्रावधि वर्षसों तपस्या करे हे सो वाके चित्तमें यह आकांक्षा हे जो श्रीकृष्ण मोकों याही पर्वतमें पधारकें दर्शन देंगे तब में या देहको त्याग करूंगो सो तहां तांई प्राण कपालमें चढ़ाय लेय जहां कालकी गम्य नाहीं हें ऐसें सहस्रावधि वर्षसों वह ऋषीश्वर बेठ्योहे सो ताकों दर्शन देवेकों वा मारगपे मोकूं लेकें चलो सो तीन दिन वहां रहूंगो । ता पाछें फेर याही मंदिरमें आय रहूंगो । तहां तांई बादशाह राजसागरके ऊपर रहेगो । ता पाछें में या पादशाहको उठाय दऊंगो "। यह बात गंगाबाईनें श्रीदाऊजी महाराजसों सब कही । सो श्रीदाऊजी महाराज बडे प्रतापी हते सो रथ तुरंत सिद्ध करवाये । तामें श्रीजी बिराजे सो बाटरा पधारे ओर मगरानमें जहां विषम मारग हतो तहां तहां श्रीजीकी इच्छातें सूधो मारग होय गयो । ओर जहां आखडी आवे तहां रूईके गदला श्रीदाऊजी महाराज बिछवाय दें जो श्रीजीके रथकों हाल न आवे याके लियें । सो ऐसें वा पर्वत पर श्रीजी आप विराजे। ओर वा पर्वतकों देखकें बहुत प्रसन्न भये सो तीन दिन तांई वहां बिराजे । भोग सेंनभोग सब वहांही भयो । ओर एक दिना भोगके किवाड़ खुले सो त समय वा गुफामें तें वह बेरागी निकसकें दर्शनकूं आयो सो वानें श्रीजीके दर्शन कर दंडवत् करी ओर एक नील कमलकी माला ग्रथिकें लेआयो जो पृथ्वीमंडलमें नीलकमल कहूं नहीं होय हें ये देवलोकमें होय हें सो वा योगेश्वरकी देवलोक तांई गम्य हती सो वहांते नीलकमल लायकें ताकी माला ग्रथिकें सिद्ध कर राखी हती जो श्रीजी पधारेंगे तब पहिराऊंगो । सो ता

बेरागीकों देखकें श्रीनाथजी अपने निकट बुलायकें कहे । जो तुम माला पहिराय देउ । तब वानें माला पहिराई ओर एक चंदनको मूठा सवासेरको हतो सो भेट कियो । ओर वह चंदन असल मलयागर हतो । एक रत्तीभर तोलिकें सवामन तेल तातो करकें वामें डारो तो तेल शीतल होय जाय ऐसो वह चंदन हतो सो मूठा भेट कियो । ओर दंडवत करिकें याही पर्वत पर चल्यो गयो । भगवत कृपा भई हती सो इनकों विष्णुके दूत आये सो बिमानमें बेठायकें वैकुंठ ले गए । तब श्रीजी श्रीदाऊजीसों आज्ञा किये ग्रीष्मऋतुमें चंदनकी कटोरी होय हें तिनमें थोडो थोडो या मूठामेंसूं नित्य घिसनो जहां तांई यह मूठा पहुंचे तहां तांई तैसेही करो ।

॥ पादशाहको मेवाडसूं द्वारिका जायवेको सविस्तर वृत्तान्त. ॥

ता पाछें एक रात्री तो पादशाहके डेरा रायसागरपे रहे ओर दूसरे दिन नदी बनासपे खमनोर डेरा किये । ओर तहां हुकुम दीनो जो एक महिना यहां रहेंगे सो एक बाग तयार कराओ । ता बागकूं तयार देखकें हम चलेंगे सो यह बात राणाजीनें सुनी सो राणाजी मनमें बहुत डरपे ओर श्रीजीकी मानता करी । जो 'महाराज ये म्लेच्छ हमारे देशमेंतें जायगो तो गामकी भेट करूंगो' । सो रात्रिके समय बाटरामें श्रीजीने गंगाबाईसों आज्ञा करी श्रीदाऊजी महाराजसों कहो जो काल सिंहाडके मंदिरमें जायकें उत्थापन होंयगे । ओर वह पादशाह आज खमनोरसूं भाजेगो सो रातोंरात उदयपुर जायगो । तादिना रात्रिके समय एक प्रहर रात्रि गई सो ता समय सिंहाडमें श्रीजीके मंदिरमें जगमोहनमेंतें भ्रमर बडे बडे निकसे सो कोट्यावधि निकसे सो सूधे खमनोरकी ओर चले ओर पादशाहकी फोजमें

गये सो एक एक मनुष्यसों तथा घोडा हाथीसों लक्षावधि-
ज्ञायकें लगें सो ऐसें अकस्मात् सब तहांते भजे। और वाके संग
बारह लक्ष फोज हती सो भ्रमरनके काटिवेके डरके मारें मगरा
मगरामें जायकें बिखर गई। ओर पादशाहके दोय बेगम हती। तिन
मेंते एकको नाम रंगीचंगी हतो सो दश हजार असवार वाके संग
जुदे चलते सो वो मगरामें भूल गई सो राणाजीकी फोज नाहर
मगरे पडी हती तामें जाय पडी। तब राणाजी श्रीराजसिंहजीनें यह
बात जानी जो पादशाहकी बेगम भूल पड़ी हे सो मेरी फोजमें
आईहे सो वे राणाजी आप चलायकें बेगम पास आये सो आयकें
बेगमसों मुजरा किया ओर कह्यो जो ' तुम हमारी बहिनहो तुमको
जहां कहो तहां पादशाहके पास संग चलकें पहुंचाय आवें। तब
वा बेगमने कही जो तुम हमारे ' धर्मके भाई हो सो तुम हमकों
पादशाहके अरूबरू पहुंचाय देओ। तब तुह्मारे मुलकमेंते पादशाहकूं
बेगही निकास ले जाऊंगी। तब राणाजीनें दश हजार असवार संग
कर दीने ओर कही जो कोई पादशाहके डेरामें पहुंचाय आओ।
तब राणाजीने बेगम साहबकूं दश गाम कापडामें दीने ओर पादशा-
हनें रातोंरात उदयपुरमें पीछोला तलावके ऊपर जायकें डेरा किये।
तब गाम सब ऊजर देख्यो ओर बस्ती तो भाजकें मगरान पर
चढ़ी ही सो दुपहर होय गयो। ओर पादशाह अन्न न खाय कहे
जो रंगीचंगी बेगम आवें तब अन्न खाऊं इतनेंमें तो वह रंगी
चंगी आयकें ठाडी भई। तब उननें सब समाचार राणाजीके कहे
जो मोकों अच्छी तरह पहुंचाय गये ओर मेंनेऊ धर्मका उनको
भाई किया हे तातें उनके मुलकमें हजरतकूं रहना सकुन है। तब

पादशाहनें कह्यो एक महजत उदयपुरमें बनवावेंगे ता पाछें चलेंगे। तब बेगमनें नाहीं करी काल आपकूं कूंच करना होगा। ओर मेरे भाई राणाजीकूं कहाय देऊंगी सो तुम्हारे नामकी एक महजत बनवाय रखेंगे। तब उन बेगमनें राणाजीकूं बुलायकें पादशाहसों मिलाये तब राणाजीसों पादशाहने कहा जो ' तुमनें हमारी बेगमकी बहुत बंदगी करी हे जो तुम उनके धर्मके भाई हो सो तुम कछू मांगो। में तुह्मारे ऊपर बहुत खुसी भया। तब राणा श्रीराजसिंहजीनें कही जो आप खुश भये हो तो बेग फोजकों कूंच करवाओ। मेरा मुलक सब बिगडे है। तब पादशाहनें राणाजीसों कही एक तुम हमारे नामकी महजत बनवाय रखना ओर कन्हैयांजी श्रीगिरिराज सों उठें हें सो तुम्हारे मुलकमें आये हें जो मेंनें अपनें मुलकमें विराजवेके लिये बहुत कुछ किया पर उनकी मरजी तुमारे मुलकमें विराजबेकी हे। तातें तुम उनके हुकुममें रहियो जहां तांई यह देवता तुम्हारे मुलकमें रहेंगे तहां तांई में मेवाडमें नहीं आवनेका हूं। सो यह कहिकें दूसरे दिन फोजको कूंच भयो सो द्वारिकामांझ गयो। ओर मेवाडमें चेन भयो तब राणाजी सब कुटुंब सहित उदेपुरकूं आये। ओर गाम तथा मुलकके लोक मगरानपे भाजकें चढ़े हते सो सब अपने अपने ठिकानें आयकें बसे। सो ता पाछें बाटरासूं राजभोग आरती करकें श्रीनाथजी पधारे सो सिहाड़में अपने मंदिरमें विराजे ॥

॥ श्रीपुरुषोत्तमजीमहाराज श्रीजीकूं जडाऊ मोजा धारण करवाये ॥

एक समय सूरतवारे श्रीपुरुषोत्तमजी महाराज सो दक्षिण देशकों पधारे। तहां रत्नकी पुष्कलता देखकें तहां आपने श्रीनाथजी

कें लिये जडावकें मोजा बनवाये ओर वे मोजा बनवायकें श्रीजी द्वारकों शीघ्र पधारे परंतु मारगमें दिन विशेष लग गये तातें मोजा बडे व्हे चुके ता पाछे पधारे ओर वर्ष दिन रहवे कोसो कार्य हतो नाहीं काशी दिग्विजय करवेकों पधारनो हतो तासों श्रीदाऊजी महाराजसों विनती करी " जो ये मोजा बनवाय लायो हूं ओर श्रीजी तो मोजा बडे कर चुके आगें रहिवेको सो ऐसो कार्य हे जो आपकी आज्ञा होय तो श्रीजी अंगीकार करें " तब श्रीदाऊजी महाराज आज्ञा किये जो तुमतो श्रीगुसांईजीके बालक हो सो तुम्हारो कियो श्रीजी अंगीकार करे हैं तथापि ऋतुको व्युत्क्रम है तातें शृंगारके समय धरायके फेर द्वेचार घडी पाछें बडे कर लीजियो सो यह आज्ञा श्रीदाऊजी महाराजकी पायकें श्रीपुरुषोत्तमजी महाराजनें दूसरे दिन श्रीजीको शृंगार कर्‍यो सो वे ता दिन जडावके मोजा श्रीजीकों धराये ओर श्रीदाऊजी महाराज भोग आवतमें नित्य श्रीजीके दर्शनकों पधारते सो श्रीजीके दर्शन करकें यह श्रीपुरुषोत्तमजी महाराजसों आज्ञा करी जो मोजा माला पीछें बडे कर लीजियो इतनी आज्ञा करकें श्रीदाऊजी महाराज अपनी बेठकमें पधारे पाछें माला बोली पाछें राजभोग आरती भई तब श्रीपुरुषोत्तमजीनें टोडा व्यास मुखिया हते सो तिनसों कह्यो जो एक सहस्र मुद्रा तुम गुप्त लेहु ओर श्रीजी मोजा संध्या आरती तांई अंगीकार करलें तब मुखियाजीनें कही जो महाराज श्रीदाऊजी महाराजको नेंम हे जो भोगके दर्शन नित्य करें हें तातें आप शंखनाद भये पीछें उत्थापनके दर्शनके समय बडे करेंगे ता पाछें किवाड खोलेंगे ता पाछें श्रीजीको अनोसर करिकें जो श्रीपुरुषोत्तमजी

तो अपनी बेठकमें पधारे ओर सब सेवकहू अपने अपने घरकूं गये ता पाछें एक मुहूर्त ताईं श्रीजीनें गह देखी अब ये मोजा बडे करेंगे परंतु काहूनें करे नहीं तब श्रीनाथजी उकताये सो खम-नोरमें श्रीहरिरायजी भोजन करके अपनी बेठकमें पोढे हते जब निद्रा लगी तबही श्रीजी स्वप्नमें आज्ञा करी जो तुम शीघ्र आयके मोजा बडे कर लेउ तो में बनकों जाउं तब ताही समय श्रीहरि रायजी चोंकके उठे सो श्रीहरिरायजीकें सब असवारी सिद्ध रहती सुखपालकी तथा घुडबेल तथा बेलनको रथ तथा एक हाथी इतनी असवारी सदा रहती तामेंसूं एक एक असवारी एक एक प्रहर ड्योढी पे आयकें ठाढी रहती सो श्रीहरिरायजी आप उठके पूछें " असवारी कहा ठाडी हे " तब उद्धव खवासनें विनती कीनी जो महाराज घुडबेल जुती ठाढ़ी हे सो तत्कालही श्रीहरिरायजी घुडबेलमें विराजे ओर बेगही हांके सो घडी एकमें आयके बनासके ऊपर स्नान किये ओर अपरसमें श्रीदाउजी महाराजके पास पधारे सो मंदीरकी कूंची नको झूमका मांग्यो सो श्रीहरिरायजीके प्रभावकूं तो श्रीदाऊजी महाराज जानत हे सो विचारे जो कछू श्रीजीकी आज्ञा भई हे तासूं तालीको झूमकाहू उनकों दिये सो श्रीहरिरायजी निज मंदि-रमें पधारे सो ताला खोलके शंखनाद करायकें ओर श्रीजीके पास जायकें मोजा बडे कर लिये ओर दंडोत्त करकें टेरा देंकें बाहरके किवाड मंगल करिकें आये ता पाछें तालीनको झूमका श्रीदाऊजी महाराजकी बेठकमें पहुंचायकें आप तो श्रीहरिरायजी खमनोर पधारे ओर श्रीपुरुषोत्तमजीकों तो या बातको बड़ो अपने मनमें पश्चा-त्ताप भयो जो हमने मोजा काहेकूं राखे श्रीनाथजीकों श्रम भयो

ओर श्रीदाऊजी महाराजनें व्यासजीसों खीजकें कह्यो जो तुमनें मोजा काहेकों राखे आज पाछें तुम संकोचके मारें श्रीगुसांईजीके बालकनसों कछू न कह सको तो हमसों कहियो हम कहेंगे हमा रो काम हे ॥

॥ श्रीगोवर्धननाथजीको शृंगार श्रीवल्लभजीके पुत्र श्रीव्रजनाथजी किये ॥

बहुर एक बेर श्रीगोवर्द्धननाथजीको शृंगार श्रीवल्लभजी महाराजके पुत्र श्रीव्रजनाथजीनें कियो सो श्रीजीके ह्यां पेंडेकी गादी बिछे हे तापें चरणारविंद धरकें पीछें पेंडेमें पधारें सो गादी बिछावनो श्रीगुसांईजीके बालक तथा भीतरिया सब भूल गये तब राजभोग आरती पीछें जब अनोसर भयो तब गंगाबाईसों श्रीजी आज्ञा किये "जो आज पेंडेकी गादी बिछावनो भूल गये हें सो में ठाडो होय रह्यो हूं" तब गंगाबाईनें श्रीनाथजीसों बिनती करी जो यह बात भीतरकी हे मेरे बसकी नहीं हे बलैयां लेहों तुम यह बात श्रीहरिरायजीकों जताओ तब श्रीनाथजी खमनोरमें श्रीहरिरायजीकों जताये तुम बेग आयकें पेंडेकी गादी बिछवाय जाओ में ठाडो होय रह्यो हूं तब श्रीहरिरायजी खमनोरसों घुड़बेलमें विराजकें श्रीनाथद्वार पधारे सो वे गंगाबाई हू नदीके ऊपर जायकें श्रीहरिरायजीकी प्रतीक्षा करत ही सो इतनेंमें श्रीहरिरायजी पधारे तब गंगाबाईनें भगवत्स्मरण कियो ओर कह्यो जो तुम यहांईतें स्नान कर बेग अपरसमें जाओ लाला ठाडो होय रह्यो हे तब तत्काल स्नान कर अपरसके वस्त्र पहरिकें श्रीहरिरायजी श्रीदाऊजी महाजके पास तें ताली मंगायकें ओर मंदिरको तालो खोलकें श्रीजीकों दंडोत करकें ओर गादी बिछायकें ताला मंगल

करकें श्रीदाऊजी महाराजकी बैठकमें श्रीहरिरायजी पधारे तब श्रीदाऊजी महाराजनें गादी बिछाय दीनी तापे श्रीहरिरायजी बिराजे तब श्रीहरिरायजी श्रीदाऊजी महाराजसों कहें आप हमारे श्रीवल्लभ कुलके मुख्य हो ओर श्रीजीको अधिकार तो आपके माथे हे तातें हम कोई बात श्रीजीकी सेवामें भूलि जांय तो आपकों शिक्षा करनी उचित है आज पेंडेकी गादी बिछावनो भूल गये सो श्रीजी दोय घडी तांई ठाडे रहे सो मोकों आयकें जताये तब मेनें आयकें गादी बिछाई तब श्रीजी बनकों पधारे तब श्रीदाऊजी महाराज श्रीहरिरायजीसों कहे जो पेंडो तो बिछयोई हतो पर छोटी गादी बिछे हे सो भूल गये होंयगें सो में समझाय दऊंगो एक स्वाभाविक प्रश्न तुमसूं सूझे मनसों पूछों हों तुम महानुभाव हो तातें ओर गादी बिछे बिना श्रीजी पेंडा पर चरणारविंद न दिये ओर अनोसरमें जेजे चोरासी कोश ब्रज मंडलमें आप पधारे हें तब सब स्थलनमें भूमीपे श्रीजी श्रीचरणारविंदसूं फिरे हें तहां कहां सबरे गादी बिछी हें ? तब श्रीहरिरायजीनें यह उतर दियो जो श्रीगुसांई जीनें श्रीनाथजीसों यह आज्ञा करी हे जो अब हम यहां गादी बिछावे तापे श्रीचरणारविंद धरिकें पीछे पेंड़ाके उपर पधार्यो करो तातें श्रीजी गादी बिछें बिना पेंडेमें श्रीचरणारविंद नहीं धरें हें सो आप यह श्रीगुसांईजीकी आज्ञा उलंघन न करिकें अपनी सेवा श्रीजी अंगीकार करें हें सो तो आप श्रीगुसांजीकी आज्ञातूं करें हें ओर तुमनें कही जो ब्रज भूमिमें श्रीजी गादी बिछाये बिना चरणारविंद केसें कर धरें हें ताको उत्तर यह हे जो ब्रजभूमितो नवनीत हूसो कोमल हे ओर जहां जहां आप चरणारविंद

धारें हें तहां सात्विक आविर्भाव भूमिको होय आवे हें व्रजभूमी सदा प्रेमादर होत हें गुणातीत श्रीनंदलालात्मक भूमि हें व्रजकमलाकृत हें जहां जहां श्रीजी चरणारविंद धरत हें तहां तहां भूमि कमल-फूलवत कोमल होय जात हें कमलके फूलके ऊपर चरणारविंद धरेसों जेसें सुखद होय हें ऐसो व्रजभूमिपर चरणारविंद धरेसो श्रीजीकों सुख होत हें तातें श्रीशुकदेवजीनें श्रीभागवतमें कह्योहे॥

शरच्चन्द्रांशुसन्दोहध्वस्तदोषातमम् शिवम् ॥
कृष्णाया हस्ततरलाचितकोमलवालुकम् ॥ स्कं० १० अ ३२ श्लो० ११

तातें श्रीगुसांईजीके मतके अनुसार श्रीजीकी सेवा अपनकूं करनी सो श्रीगुसांईजीनें जो जो समय सेवा साधी हे सो ताही समय श्रीजी तातें सेवाकी सुधि करत हें " दास चत्रभुज प्रभुकें निजमत चलत लाला गिरधर " यह कीर्तनकी तुक कही यह बात सुनिके श्रीदाऊजी महाराज बहुत प्रसन्न भये ओर आप महाशय हो यह श्रीहरिरायजीसों कही तापाछे श्रीहरिरायजी खमनोर पधारे ओर श्रीदाऊजी महाराज हू ता दिनतें श्रीजीकी सेवामें बहुत सावधान रहते ओर कोऊ वल्लभकुल शृंगार करते तो हू श्रीदाऊजी सब सेवाकों देखते दो बेर श्रीजीके मंदिरमें दर्शनकूं पधारते कसर कोर होती सो शिक्षा करते ॥

॥ श्रीजी गोविन्ददास वैष्णवके द्वारा सूरजपोर करवायवेकी आज्ञा किये ॥

बहुर एक दिन एक नंदरवारको वैष्णव हतो सो वाकी आरूढ दशा हती एकाकी वह व्रजमें फिरतो सो वाको नाम गोविंददास हतो सो एक दिनां कोकिलाबनमें श्यामतमालके नीचे बेठ्यो हते सो श्रीहरिरायजीके श्रीचरणारविंदको ध्यान करत हतो

ओर श्रीहरिरायजीको सेवक हतो ताकूं देखकें सब वैष्णव कहते जो यह सिरी हे तातें विशेष कोई वाते गोष्ठी न करते ओर वह हू काहूसों संभाषण करतो नहीं ता समय श्रीजी कोकिला वनमें अकस्मात् पधारे सो ता समय वाकूं दर्शन भये ओर श्रीजी वा वैष्णव कूं यह आज्ञा किये जो गोविंददास तू मेवाड़कों जायकें श्रीगिरधारीजीसों कहियो जो अन्नकूटलुटतमें मे मंदिरमें अनाचार मिलतहे तातें एक सूरजपोर करवाओ ताहां होयकें सब निकसेंगे तब वा वैष्णवनें विनती कीनीजो महाराज मेरो कह्यो वहां कोई न मानेगो तब श्रीनाथजी आज्ञा किये जो श्रीगिरधारीजी मानेंगें तू बेग जायके कहियो तब वह गोविंददास शीघ्रही श्रीजीद्वार आयो ओर श्रीगिरिधारीजी महाराजसों विनती कीनी महाराज श्रीनाथजी ऐसें आज्ञा कीये हें ओर आपको नाम लियो हे तब यह बात सुनकें श्रीगिरिधारीजीतो वैष्णवके प्रभावकों जानतहे तासों गद गद कंठ व्हे गये तब वा वैष्णवसों आज्ञा किये जो मेरो नाम श्रीनाथजी श्रीगिरिधारीजी यह जानत हें सो दोय तीन बार श्रीगिरिधारीजीनें वह वात वैष्णवके मुखतें कहवाई ता पाछें श्रीविठ्ठलरायजी महाराजसों श्रीगिरिधारीजीनें सब बिनती कीनी तब श्रीविठ्ठलरायजी आज्ञा किये जो भाई आजकाल कलियुग हे तातें कोई पाखंडसों करकें कोई वात कहे तो मानिये नहीं श्रीजी हमसों आज्ञा करेंगे जो बात होयगी ता पाछें श्रीगिरिधारीजी चुप व्हे रहे अपना बेठकमें पधारे पाछें जब पंद्रह दिन अन्नकूटके रहे ओर रात्रि प्रहर पिछली रही तब श्रीविठ्ठलरायजी महाराकों स्वप्नमें श्रीजी आज्ञा किये जो तुमनें वा वैष्णवकी बात झूठी मानी सो अब सूरज पोर

निकसेगी तब अन्नकूट आरोगूंगो इतनी आज्ञा करके निज मंदिरमें पधारे श्रीविठ्ठलरायजी हू जागे तत्त्नण श्रीगिरधारीजीकूं बुलाये ओर आज्ञा करी जो भाई यह वैष्णव सांचो हे आज हमकों श्रीजी स्वप्नमें आज्ञा करी जो तातें अब हमकूं पंद्रह दिनमें सूरजपोर सिद्ध करवानी पाछें उस्ताकूं बुलायकें पंद्रह दिनमें सूरजपोर सिद्ध करवेकी आज्ञा कीनी जब इतने दिनमें सूरजपोर सिद्ध भई तब श्रीनाथजी अन्नकूट आरोगे सो प्रति वर्ष सूरजपोर अन्नकूटके दिन खुलेहे ॥

॥ श्रीजी गोपालदास भंडारीकों दर्शन देकें लीलामें अंगीकार किये ॥

बहुर एक बेर श्रीजीके उत्सवको दिन हतो सो कोईक सामग्री बालभोगमें पुष्कल धरत हते पहिले दिनसूं सो दूसरे दिन राजभोगमें आरोगते सो वा दिनां बालभोगीयानकों तो सूधि आई परंतु एक खासा भंडारी गोपालदास हतो तानें सामग्रीको सामान न पठायो ओर कही जो काल होयगी तब तुम सामान लीजियो पाछे जब प्रहर रात्रि पाछली रहीं तब श्रीजी एक लाल छड़ी हस्तमें लेकें गोपालदास भंडारीके पास पधारे सो ताकों एक छडी मारकें जगाये ओर श्रीजी आज्ञा किये जो तेनें हमकों सामग्री आज बालभोगमें क्यों न पठाई यह वस्तु करते विलंब बहुत लगे हे तातें काल आवेगी तो राजभोगकूं अबेर होय जायगी इतनेमें वह गोपालदास भंडारी जायकें देखे तो आगें श्रीजी आप ठाढे हें तब उठ्यो उठिकें यह कही मुझे चरण छुवातजा सो श्रीजी वहांसूं भाजे पाछे वह गोपालदास दोडकें चल्यो सो पोर तांइ आयो सो पोरकेतो किवाड मंगल हते सो श्रीनाथजी तो मंदिरमें पधारे ओर यह तो सिंहपोरके किवाडसूं जायके माथो पटकके यह पुकारे मुझे

चरण छुवाताजा या प्रकार कहे तब एक रायगोवर्धन छत्रीसिंह पोरिया हतो सो वानें उठिकें ओर किवाड खोलकें वासों पूछ्योजो तू क्यों किवाडसूं माथो पटकत हे तेनें कहा देख्यो तब वानें कही जो एक लडिका मंदिरमें भाज गयो हे अबही ताके चरण छुवन-कों जाऊंगो तब वा पोरियानें वाकूं पकडकें बेठाय दीनो परंतु वह तो बावरो व्हे गयो सो बेर बेरमें यह कहे "अब लडके मुझे चरण छुवाता जा" अष्ट प्रहर वारंवार वाकूं यही रटना लगी रहे अन्नजल सब त्याग कर दियो यह बात श्रीदाऊजी महाराजनें सुनके वाकूं एक कोठरीमें बेठाय दियो ओर एक मनुष्य वाकी चाकरीमें राख दियो सो यह गोपालदास उन्नीस दिनांताई जीयो श्रीनाथजीके दर्शन भये पीछें तहां तांई अन्नजल और निद्रा आदिकी कछु वाकों बाधा न भई ओर यह रटना लगि रही "जो लडके मुझे चरण छुवाताजा" सो ऐसें करत वाके प्राण छूटे सो श्रीजीकी लीलामें सद्यः प्रवेश कियो ॥

॥ श्रीनाथजीके सेवक माधवदास देसाई ॥

ओर एक समय श्रीगोवर्धननाथजीको सेवक माधवदास देसाई सो वह मांगरोलमें रहत हतो सो वाको नाम पहिले भगवानदास हतो सो फेरिकें श्रीगोकुलनाथजीनें वाको नाम माधवदास धर्‍यो सो एक क्रोड कांचनी मुद्रा द्रव्य वाके पास हतो ओर श्रीजीके दर्शनकी वाकों बहुत आसक्ती हती सो तीसरे वर्ष दश वीस हजार आदमीन-कों साथ लेकें वह माधवदास श्रीनाथजीके दर्शनकों श्रीजीद्वार आवतो ओर जाके पास खरची घटती ताकूं मारगमें वोही देतो और अधिक महिना भर श्रीजीके दर्शन करतो और जा दिनासूं श्रीजीके

दर्शनकूं अपने घरसूं चलतो ताही दिनासों अन्न छोड देतो ओर दुग्धपान करतो ता वैष्णवकों श्रीजी स्वप्नमें यह आज्ञा किये तू एक लक्ष मुद्राको स्त्रीके पहिरवेको नखसूं लगायकें शिखा पर्य्यंत गहना बनवायकें एक बंटामें धरकें जो अबके तूं मेरे दर्शनकूं आवे तब लेतो अइयो सो लायके मेरी भेट करियो। तब वा वैष्णवनें संवत् १७४१ के साऊ हे चैत्र हते सो फाल्गुनमें आयकें दर्शन डोलके किये ओर वह बंटा श्रीजीके आगें आयकें भेट धर्यो तब श्रीदाऊजी महाराजसों एक सेवकनें खबर करी जो महाराज एक वैष्णवनें लक्ष मुद्राको गहनो बनवायकें भेट कियो हे तब श्रीदाऊजी महाराजनें वह बंटा लक्ष मुद्राके गहनेको अपने पास मगांय लीनों ओर बहुतही यत्नसों करिकें धरराखे जान्यो जो यहां कछु कारन हे जब प्रहर एकरात्रि रही ता समय श्रीगोवर्धननाथजी श्रीदाऊजी महाराजकों स्वप्नमें कहे जो यह गहनाको बंटा आयो हे सो नखसूं लगायकें शिखा ताईं स्त्रीके आभरणमें अर्थ आवे हे सो गंगाबाईकों पहराओ सो पहरिकें मेरे दर्शनकूं भोगके समय वह आवे श्रीनाथजी ऐसें हीं वा गंगाबाईकूं आज्ञा किये जो तू सब गहना पहरिकें भोगके दर्शनकूं अइयो तब गंगाबाईनें सब ऐसें हीं कियो एक दिन दर्शन किये ओर वेसें हीं गहना पहर्यो जब श्रीनाथजी दर्शन दीने तब यह आज्ञा किये जो यह गहना सब शय्या मन्दरमें मूढापे स्थापन करो तब एसेंही भयो सो ऐसें ऐसें श्रीगोवर्धननाथजीके अनेक चरित्र हें सो कहां तांइ लिखवेमें आवे श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी कृपातें स्वकीयनकों अनुभवमें आवे हें॥

॥ इति श्रीनाथजीकी प्राकट्य वार्ता संपूर्णा ॥

सोमवार—बङ्गवासी ता० ३ सितम्बर-सन् १९१७ में से उद्धृत

बाँकीपुरके सहयोगी " बिहारी ,, में निकलताहै, " बनारसके श्रीमानबाबू मोतीचन्द सी० आई० ई० और श्रीयुक्त रमाकान्त मालवीने एक पत्र इल्हाबादके ' लीडर , में प्रकाशित कराया है जिसमें आप लोगों ने एक आश्चर्य जनक दृश्यका उल्लेख किया है । आपलोगोंका कहनाहै, कि गत जन्माष्टमीके दिन हम लोग मेवाडके श्रीनाथजीके मंदिरमें उत्सवदेखने गये । वहां एक ऐसे दृश्यका अवलोकन करने का संयोग हम लोगोंको प्राप्त हुवा, जिसे हम समझतें हैं, कि कट्टरसे भी कट्टर हिन्दू बिना अपनी आखों देखे विश्वास नहीं कर सकता । कितनेही नर नारियों और बालबच्चो को इसके देखनेका अवसर मिला और जिन्होनें देखा, वह सब अचंभित हो गये । जिस समय श्रीनाथजीकी मूर्तिको पञ्चामृत स्नान कराया जा रहाथा उस समय अचानक मंदिरकी बहारी दिवारसे जिसके निकट लोग खडेथे पानी गिरना आरम्भ हुआ । दिवार मर्मर पत्थरकी थी । कहीं सुराख आदि दिखाई पड़ते न थे । लगावके चिन्हका सन्देह होना असंभवथा । क्योंकि हम लोगोंने भलीभाँती जाँच कर देखा । दिवारको वारंवार पोंछने परभी जलका आना बन्द नही हुआ । दिवारकी दूसरी ओर अर्थात मन्दिरके भीतर मूर्तिके निकट और अधिक पानी बह रहा था । निकट कोई पानीका खजाना, होज, कूवा, तालाव, या पानीका नल या किसी प्रकारके जल मार्गका नाम तक न था । हम लोगों के आश्चर्यको कोई सीमा न रही । वहांके लोगोंसे पूछने पर

विदित हुआ, कि प्रतिवर्ष दो अवसरोंपर इस प्रकारकी घटना देखनें में आती है। एक ज्येष्ठमासकी जलयात्राके दिन और दूसरे जन्माष्टमीके दिन। वृद्धसे वृद्ध अधिवासी वह यही कहा करते है कि जब से उन्हे बोध हुआ, तब से आजतक वह इसे देखते चले आते है। इस बातकी सत्यता जाननेके लिये वह कहते हैं, कि संसारकें जिस मनुष्यको संदेह हो, वह स्वयं आकर अपने भ्रमको दूर करले। जल गिरनेका कारण यह बताया जाता है, कि श्रीकृष्णभगवानके स्नानके लियें उक्त दो दिन यमुना माता अपना जल अदृश्य मार्गसे भेजती है। हम लोगोंका पूर्ण विश्वास इस पर जम गया है। जिन्हे हमारी बातोंपर विश्वास नहो, वह स्वयं अपने नेत्रो द्वारा देखकर भलींभाँति जाचले और इसका भेद यदि उनकी समझ में कुछ हो तो बतलावें ॥

श्रीमद्वल्लभाचार्यजीका संक्षिप्तजीवनचरित्र ।

श्रीमद्वेदव्यास विष्णुस्वामिमतानुवर्त्यखण्डभूमण्डलाचार्य जगद्गुरु महाप्रभु श्रीश्रीवल्लभाचार्यजीके पूर्वज श्रीयज्ञनारायण भट्टजी सोमयाजी त्रिप्रवर भारद्वाज गोत्री तैत्तिरीय शाखाध्यायी आपस्तम्ब सूत्री वेल्ल नाटी अप्रतिग्रही षट्शास्त्रज्ञ श्रीगोपालोपासक स्तंम्भाद्रिके समीप काकुंभकर नगरी के निवासी थे, जिनके निवास मन्दिरमें सदा पञ्चाग्नि विराजमान रहीं, जिन्होंने शत सोमयज्ञका संकल्प इस प्रकार किया था, कि मैं या मेरे वंशज इसकी पूर्ति करेंगे ।

पश्चात् (यज्ञनारायण भट्टजी) ३१ एकत्रिंशत् यज्ञ निर्विघ्न समाप्तकर पूर्ण यशस्वी हो भगवद्धामको पधारे । इनके योग्य पुत्र श्रीगङ्गाधर सोमयाजी बडेही पवित्रात्मा हुए जिन्होंने अनेक ग्रन्थोंकी रचना तथा २७ सत्ताईस सोमयज्ञ किये । पश्चात् अपने योग्य पुत्र गणपतिजी सोमयाजीको यज्ञ-भार समर्पण कर स्वयं गोलोक वासी हुवे ।

अनन्तर सोमयाजी गणपति भट्टजीने, तन्त्रानिग्रह आदि विविध ग्रंथ रचनाके साथ ३२ सोमयज्ञ साङ्गोपाङ्ग समाप्त किये, इनके योग्य पुत्र वल्लभ भट्टजीने भी कई एक मनोहर ग्रन्थ रचना तथा ५ सोमयज्ञ किये । वल्लभ-भट्टजीके पुत्र श्रीलक्ष्मणभट्टजी बड़े ही उदारचेता तेजस्वी हुए और बाल्या-वस्थामें ही कुशाग्रबुद्धि होनेसे जिन्होंने चारों वेद, पूर्व उत्तर मीमांसा, धर्म-शास्त्र तथा अन्यान्य शास्त्रोंमें भि प्रवीणता--लाभ किया । और ५ पांच सोम-यज्ञ कर अपने पूज्य वृद्ध पितामहके संकल्पकी पूर्तिकी । आपका पांचवां सोमयज्ञ संवत् १५३२ चैत्र शुक्ल ९ सोमवार पुण्य नक्षत्रमें प्रारम्भ हुआ । यज्ञ समाप्ति कालमें आकाशवाणी हुई, कि तुम्हारे वंशमें शत सोमयज्ञ पूर्ण हुए हैं इसलिये अब तुम्हारे यहां भगवानका अवतार होगा । यज्ञकी समा-प्तिकर लक्ष्मण भट्टजी सकुटुम्ब तीर्थराज प्रयागकी यात्रा करते शंकरदीक्षित नामक एक महात्माको साथले काशी पधारे और कुछ काल निवास करने पर इनकी धर्मपत्नी " इल्लमागारूजी " गर्भवती हुई । उसी समय वहां दण्डी और म्लेच्छोंमें उपद्रव शुरू हुआ, जिससे वहांके रहनेवाले जहां तहांको भाग निकले, लक्ष्मणभट्टजी वहांसे सस्त्रीक चले और चम्पारण्यमें पहुँच गये, इस समय " इल्लमांगारूजी " को मार्गश्रमसे गर्भ-वेदना हुई और

एक शमीवृक्षकी छायामें बैठ गई, वहींपर जरायुमें लिपटा हुआ सातमासिक पुत्र उत्पन्न हुआ। मृतक समझकर उसे उसी वृक्षके नीचे अपने उत्तरीय वस्त्र एवं शमीपत्रोंसे आच्छादित कर आगेको पधारी। और पतिसे सब वृत्तान्त सुनाया। और समीपके चतुर्भद्रपुर [चौरा] ग्राममें विश्राम करने लगी रात्रिमें भट्टजीको स्वप्नहुआ जिसमें भगवान्नें आज्ञाकी कि मैं तुह्मारे घरमें अवतीर्ण हुआ हू। द्वितीय दिनही सुनने में आया कि काशीमें शान्ति विराजमान हो रही है। फिर पूर्व आगत मार्गसे ही काशीको लौटे, चम्पारण्यमें आये वहां एक शमीवृक्षके नीचे अग्निमण्डलमें अपना अगुंष्ठामृत पान करता हुआ दिव्य कुमार देखनेमें आया। उसे देख माताके स्तनसे दुग्धधारा बहने लगी। माताको देख अग्निदेवने मार्ग छोड दिया। ' इल्लमागारूजी ' ने अत्यन्त प्रेमसे उस अपने मनोगत पुत्रको गोदमें उठा लिया और बार २ मुख चुम्बनकर पतिकी गोदमें दे दिया। उस दिन वैशाख कृष्ण ११ रविवार सं १५३५था, लक्ष्मणभट्टजी मनमें पूर्ण आनन्दित हो अपने पुत्रको ले काशी पधारे, वहां जातकर्म संस्कारके पश्चात् पुत्रका नाम ' श्रीवल्लभ ' रक्खा। सातवें वर्षमें यज्ञोपवीत संस्कार करके गुरूकुलमें पढनेको बैठाये। उस पुत्रने चारही मासमें चारों वेद और षट्शास्त्रोंको पढ़ लिया। यह देख पिताको विश्वास हुआ, कि यह बालक भगवान्काही अवतार है। कुछकाल बाद लक्ष्मणभट्टजी भगवद्धाम पधारे। फिर ११ वें वर्षमें श्रीवल्लभाचार्यजीदक्षिणमें पधारे वहां विद्यानगरमें कृष्णदेव राजाके यहां विद्वानोंमें बडा भारी विवाद चलरहा था --जिसमें स्मार्त्त अपनेको बडे और वैष्णव अपनेको बड़े कह रहे थे—इसी सभामें अनेक देशोंके प्रतिष्ठित विद्वान भी पधारे थे। श्रीवल्लभाचार्यजी भी अपने मामासे सभाका विषय सुन उस सभामें पधारे आपका अलौलिक तेज देख सभी सभासद मुग्ध हो गये राजाने आपको बहुमानपुरःसर सभामें उच्च आसन पर बैठाया आपने वैष्णवोंके तरफसे ' ब्रह्म सधर्मक ' है. इस विषय पर स्मार्त्तोंसे अट्ठाईस दिन तक शास्त्रार्थ किया। श्रीवल्लभाचार्यजीकी प्रबल श्रुतिस्मृतिप्रमाणान्वित युक्तियोंसे प्रतिवादिगण निरुत्तर हुए। इसवास्ते कृष्णदेव राजाने प्रसन्न होकर आपको कनकाभिषेक करानेको चतुराङ्गिणी सेना प्रभृति, राजचिह्न सहित मण्डपमें पधराया——जहां बडे बडे आचार्य विद्वान् वादी प्रतिवादी सभी एकत्रित हुए, उन सभोंकी अनुमतिसे सम्मान पूर्वक आपका अभिषेक हुआ। राजाने छत्र चामरादिक चिह्न समर्पण किये और रामानुज, माध्व, निम्बार्क, आचार्योंने विष्णुस्वामी सम्प्रदायके आचार्य्य ' हरिस्वामी ', शेषस्वामी, जीके हाथोसें आचार्य्य साम्राज्यका तिलक करा-

या, राजाने तथा सब आचार्योंनेभी तिलक किया। तथा अन्य लोगोनेभी तिलक किया आपको श्रीमद्वेदव्यासाविष्णुस्वामी. अचार्य उपाधिसे विभूपित किया। राजाने सकुटुम्ब शिष्य होनेकी प्रार्थना की उनसवोंको श्रीवल्लभाचार्यचरणने शरणाष्टाक्षर मन्त्रोपदेश पूर्वक तुलसी माला दी, राजाने आचार्यचरणोंके आगे मोहरोंसे भरा थाल भेट किया —उसमेंसे, ७ मोहर ले आपने कहा मैने दैवीद्रव्य ले लिया अब शेष द्रव्योंको तुम सबको बांट दो। पश्चात् आचार्यजी अपने मामाकेघर पधारे, वहां विष्णुस्वामी सम्प्रदायके आचार्य योगीराज श्रीविल्वमङ्गलाचार्यजी आपके पास पधारे। आपने स्वागत किया। अनन्तर योगिराजने कहा कि आचार्य द्राविड़ विष्णुस्वामिजीसे सात सौ आचार्य होचुके थे। उनके वाद जो राजाविष्णुस्वामी हुए। उन्होंने मुझे सम्प्रदायभार देनेके समय कहा था कि इस सम्प्रदायको तुम चलाओ पश्चात् श्रीवल्लभाचार्य नामक साक्षात् भगवद्‌वतार होंगे, जो इस सम्प्रदाका उद्धार करेंगे। तुम उन्हें इस सम्प्रदायका उपदेश दे दीक्षित करना सो मैं आपके पास आया हूं आप इस सम्प्रदायको ग्रहण करें। पश्चात् विल्वमङ्गलजीने मन्त्र दीक्षा दी, दीक्षा देकर अन्तर्द्धान हो गये।

उसके अनन्तर श्रीवल्लभाचार्य्यजीने तीन वार पृथ्वीपरिक्रमा (तीर्थयात्रा) की। तीर्थयात्रामें आपका अनेक आचार्योंके साथ समागम हुआ उन सबोंने आपकी आचार्यसत्कृति की। जहां तहां अनेक दुर्विवादियोंकोभी परास्त किये। और अखिलवेदसम्मत शुद्धाद्वैत-सम्प्रदायका प्रचार किया। आपका विवाह श्रीपाण्डुरङ्गविठ्ठलनाथजीकी आज्ञासे काशीके वासी तैलङ्ग ब्रह्मण मधुमङ्गलजीकी पुत्री श्रीमहालक्ष्मीजीसे हुआ था विवाहके अनन्तर आपने अग्निहोत्र ग्रहण किया और सोम यज्ञ किये। कर्ममार्ग तथा भक्तिमार्गका पूर्ण प्रचार किया। पहले आप शरणाष्टाक्षर तथा गोपालमन्त्रकी दीक्षा देते थे फिर भगवदाज्ञानुसार गद्यमन्त्र [ब्रह्मसम्बन्ध] का भी उपदेश करनेलगे। पृथ्वी-परिक्रमा करते समय आपको संवत् १५४८ में एसी भगवदाज्ञा हुई कि व्रजमें श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कन्दरामें मैं विराजमान हूं। यहां शीघ्र आ मुझे प्रकट करो। आप वहां पधारे, वहांके व्रजवासियोंने कहा कि श्रीगोवर्द्धनपर्वतपर कोई देव है जिनकी ऊर्ध्व भुजा सं० १४६६ मेंप्रकट हुई थी और मुखारविन्दके दर्शन संवत् १५३५ वैशाख वदि एकादशीको हुए——यह सुन आप पर्वतके ऊपर पधारे वहां वही देवदेव श्रीगोवर्धननाथजी कन्दरामेंसे निकलकर प्रकट हुए। आपसे मिलाप हुआ।

१ वल्लभदिग्विजयादि ग्रन्थोंमें प्रत्येक तीर्थकी यात्रा सविस्तर लिखी है.

श्रीगोवर्द्धननाथजीके प्राकट्यका प्रमाण गर्गसंहितामें
येनरूपेण कृष्णेन-इत्यादि१०श्लोक--प्रागट्यकें पूर्वपृष्ठ २ में छपेहैं,

अनन्तर आपने श्रीगोवर्द्धननाथजीको छोटेसे मन्दिरमें विराजमान किया। पश्चात् आप पृथ्वी परिक्रमाको पधारे। संवत् १५७६ वैशाख शुक्ल ३ को एक वडा मान्दिर सिद्ध हुआ उसमें श्रीनाथजीको विराजमान किया। और प्रभुकी सेवाका प्रचार विस्तृत किया। श्रीवल्लभाचार्यजीके २ पुत्र हुवे। प्रथम पुत्र श्रीगोपीनाथजी दीक्षितजीका जन्म संवत् १५६७ आश्विन वदी १२ को हुआ। द्वितीय पुत्र श्रीविठ्ठलनाथजी [श्रीगुसांईजी] का जन्म १५७२ पौष वदी ९ को हुआ। आपने वहुत समय तक प्रयागके समीप पारमें अडेल ग्राममें निवास किया था तथा कुछ समय काशीजीके पास चरणाद्रि [चरणाट] मेंभी आप विराजे थे। आपने पूर्व मीमांसाके १२ अध्यायोंका भाष्य, तथा व्याससूत्रभाष्य, अणुभाष्य, तथा तत्वार्थदीप, निवन्ध, श्रीभागवतकी, टीका सूक्ष्मटीका, तथा सुवोधिनी, षोडशग्रन्थ, पत्रावलम्बन, पुरुषोत्तमसहस्रनाम, प्रभृति अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किये। और शुद्धाद्वैत सम्प्रदायका पूर्णरीत्या प्रचार किया। अन्तमें आप त्रिदण्ड संन्यास ग्रहणकर काशीजीमें हनूमानघाट पर ४० दिवस पर्य्यंत विराजे। मौनव्रत धारणकर अनशन व्रतसें रहे। संवत् १५८७ आषाढ सुदी २ पुष्य नक्षत्रमें सर्वके समक्ष आप श्रीगङ्गाजीमें पधारकर दिव्य तेजः पुञ्ज होकर भगवद्धामको पधारे। ५२ वर्ष २ मास ७ दिवस पर्य्यन्त भूतलपर आप विराजे।

॥ इति श्रीमद्वल्लभाचार्याणांसंक्षिप्तजीवनचरितम् ॥

रा० वा० दा० दा०

॥ परिशिष्टम् ॥

आपके पधारनेके अनन्तर आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीगोपीनाथजीदीक्षितजी आचार्यसिं
हासनारूढ़ हुए आप स्वल्प समयमें भगवद्धाम पधारे। अनन्तर आपके कनिष्ठभ्राता
श्रीविट्ठलनाथ दीक्षितजी आचार्य्यसिंहासनपर स्थितहुऐ।आपनेभी सोमयज्ञ किया
वेदान्तश्रीविद्वन्मण्डन ग्रन्थवनाया।औरभीश्रीटिप्पणीजी शृङ्गाररसमण्डन व्रतचर्य्या
षोडश ग्रन्थ विवृति अनेक ग्रन्थ वनाए। श्रीनाथजीकी सेवाका प्रकार अत्युत्त-
म रीतिसे प्रचलित किया। अन्तमें आप श्रीगिरिराज कन्दरामें सदेह पधारे
७२ वर्ष पर्य्यन्त पृथ्वीपर विराजे। तत्पश्चात् आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीगिरिधरदी
क्षितजी आचार्य्यसिंहासनपर स्थित हुए। आपने भी सोमयज्ञ किया। पूर्ववत्
शुद्धाद्वैत सम्प्रदायका प्रचार और पुष्टिमार्गका प्रकाश किया। श्रीगि-

रिवरदीक्षितजीका जन्म १५९७ में हुआ । श्रीगिरिधरजीके पौत्र श्रीविठ्ठल रायजीके मस्तकपर श्रीनाथजीने अपनो श्रीहस्त रक्खा । उसी समयसे मुख्य-रीत्या निर्विवाद सर्वाधिपत्यपूर्वक भगवत्सेवा आपकेवंशज अद्यापि करते हैं । तिलकायत (टीकेत) यहनामभी उसही समयसें हुआ । श्रीविठ्ठलरायजीके पौत्र श्रीदामोदरजी [बडे दाऊजी] के समयमें श्रीनाथजीकी इच्छा देशान्त रस्थ भक्तोंके मनोरथपूर्ण करनेकी हुई । इससे उस समय औरङ्गजेब बादशाह-के उपद्रवके कारण सं० १७२४ में श्रीनाथजी श्रीगोवर्द्धन परवतसे दण्डौत-धार कोटा जोधपुर आदि अनेक देशोंको पवित्र करते हुए उदयपुराधीश महराणा राजसिंहजीकी अत्यादरपूर्वक विज्ञाप्तिसे मेवाड़ देशमें पधारे और वहाँ सीहाड ग्राममें विराजे । अद्यापि वहाँ ही विराज रहे हैं । आपके विरा जनेसे उस ग्रामको श्रीनाथद्वार कहते हैं । पूर्वोक्त श्रीदमोरदजीके पौत्र श्रीगो-वर्द्धनेशजी महाराजनें श्रीनाथद्वारामें सातस्वरूप एकत्रितकिए । उसके अनन्तर श्रीगोवर्द्धनेशजीके पौत्र श्रीदामोदरजी (श्रीदाऊजी) महाराजनेभी सातस्वरूप इकट्ठेकिये । और श्रीनाथजीका वैभवभी अधिक किया । पूर्वोक्तश्रीवल्लभाचार्यजीकी वंशपरम्परामें वर्त्तमान गोस्वामितिलक श्रीगोवर्द्धनलालजी महाराज पन्द्रहवें हैं आप भी पूर्वजवत् श्रीनाथजीकी सेवा प्रीतिपुर्वक करते हैं । तथा स्वमार्गका प्रचार अच्छी रीतीसे कर रहे हैं । आपने भी संवत् १९६६ में ५ स्वरूप एकत्रित कर अनेक उत्सव किये हैं । भगवल्लीलाधाम सुप्रसिद्ध श्रीगोकुलमें आपकेही पूर्वजोंको चिरकालसें स्वामित्व था मध्य में उसमें त्रुटि हुई थी उसको दूरकर आपनेहीपुनः सर्वांगसें स्वामित्व संपादित किया हे

आपने श्रीनाथद्वारमें विद्याविभाग–संस्कृत पाठशाला हिन्दी अङ्गरेजी स्कूल, प्रेस, स्वदेशीय औषधालय, अस्पताल, लायब्रेरी, वगैरह, स्थापित किए हैं । आप अच्छे २ पण्डितों को आदर पूर्वक रखतेहैं । देशविदेशसे आयेहुए अनेक वैदिक तथा शास्त्रीय पण्डितोंका आप अच्छा सत्कार करते हैं । बहुत कालसे उचित कारिणी सभाका स्थापन आपने किया हैं, जिसमें अच्छे २ व्याख्यान होते हैं और स्वमार्गीय ग्रन्थोंकी परिक्षा भी होती हैं परिक्षा देनेवालों को योग्य पारितोषिक मिलता है। आपने श्रीनाथजीके सेवन प्रकारमें भी बहुत कुछ विशेषता की है । आपके चिरंजीव श्रीदामोदरलालजी भी अति सुशील सच्चरित्र शास्त्राभ्यासतत्पर पितृनिदेशपालनपरायण हैं आजकल आप अणुभाष्य तथा निबन्धका अभ्यास कर रहे हैं । सभाओंमें व्याख्यान भी देते हैं । सेवामें आपकी अति आसक्ति है । के० ल०

इति शुभम् ॥